प्रशिक्षण मॉड्यूल

नवाचारी शिक्षण पद्धतियां

Innovative Teaching Practices

2011-12

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उ0प्र0, लखनऊ।

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, शिक्षा के उन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आयामों की वांछनीयता पर विस्तृत चर्चा एवं तार्किक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा के सामाजिक संदर्भ एवं शिक्षा के लक्ष्य जिसमें ''बच्चों को क्या पढ़ाया जाये और कैसे पढ़ाया जाये'' की कसौटी पर विचार करते हुए पाठ्यचर्या निर्माण में पांच निर्देशक सिद्धान्तों का प्रस्ताव रखा गया है।

आर0टी0ई0 के अध्याय–5 में सेक्शन 29,30 के अनुसार – पाठ्यक्रम को गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा कराने, बच्चों के ज्ञान, सम्भावित क्षमता और प्रतिभा का विकास, शारीरिक एवं मानसिक योग्यताओं का पूर्णतम सीमा तक विकास, बालकेन्द्रित और बाल सुलभ तरीके से विभिन्न क्रिया कलापों, अन्वेषण, और खोज के माध्यम से सीख उत्पन्न करना, मातृभाषा में पढ़ाई, तनावमुक्त शिक्षा, बच्चे के ज्ञान की समझ एवं व्यवहार का सतत् समग्र एवं व्यापक मूल्यांकन, किसी भी कक्षा में फेल नहीं करना, हर बच्चों को निर्धारित प्रारूप पर प्रमाण पत्र निर्गत करना– प्रमुख है।

यह तथ्य है कि बालक अपने अनुभव के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है, इसका निहितार्थ है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिए सक्षम बनाये कि वे बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप विद्यालय में गतिविधि एवं अनुभव आधारित कार्यक्रम आयोजित करे ताकि सभी बच्चों को विकास के अवसर मिल सके।

सक्रिय गतिविधि के जरिये ही बच्चे अपने आस–पास की दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं, इसलिए प्रत्येक साधन का उपयोग इस तरह किया जाना चाहिए कि बच्चे को, स्वयं को अभिव्यक्त करने में, वस्तुओं का प्रयोग करने में, अपने प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश में, खोजबीन करने में और स्वस्थ रूप से विकसित होने में मदद मिलें। इसके लिए स्कूल के विषयों और पाठ्यचर्या के क्षेत्रों में नवाचारी शिक्षण पद्धतियों को विकसित किये जाने की आवश्यकता है। इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग से बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर प्राप्त होने के साथ–साथ अपने ज्ञान को बाहरी जीवन से भी जोड़ने के अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि नवाचारी शिक्षण पद्धतियों पर विकसित किए गए इस प्रशिक्षण मॉड्यूल से समस्त शिक्षक लाभान्वित होंगे तथा बच्चों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिपूर्ण एवं शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने में सक्षम हो सकेंगे।

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0, लखनऊ।

समय–सारिणी

(तीन दिवसीय)

दिवस	विषय	अवधि	सन्दर्भ व्यक्ति
प्रथम दिवस	• नामांकन एवं परिचय	10.00–11.30	
	• प्रशिक्षण का उद्देश्य		
	• नवाचारी शिक्षण पद्धतियों का एक विषय	11.30–1.00	
	• नवाचारी शिक्षण पद्धतियों की आवश्यकता एवं महत्व		
	लंच	1.00–2.00	
	• प्रोजेक्ट विधि का परिचय	2.00–3.30	
	• प्रोजेक्ट बनाने के सोपान		
	• प्रोजेक्ट विधि की विशेषताएं एवं महत्व		
	• प्रोजेक्ट तैयार करना	3.30–5.00	
	• समूह कार्य		
द्वितीय दिवस	• समूह द्वारा तैयार किये गये प्रोजेक्ट का प्रस्तुतीकरण	10.00–11.30	
	• समूह द्वारा तैयार किये गये प्रोजेक्ट का प्रस्तुतीकरण	11.30–1.00	
	लंच		
	• केस स्टडी क्या है?	2.00–3.30	
	• केस स्टडी के उद्देश्य, आवश्यकता		
	• केस स्टडी की विशेषताएं एवं महत्व		
	• केस स्टडी के सोपान, केस स्टडी एवं प्रोजेक्ट विधि में अन्तर	3.30–5.00	
तृतीय दिवस	• केस स्टडी तैयार करना	10.00–11.30	
	• समूह द्वारा तैयार किये गये केस स्टडी का प्रस्तुतीकरण	11.30–1.00	
	लंच		
	• समूह द्वारा तैयार किये गये केस स्टडी का प्रस्तुतीकरण	2.00–3.30	
	• कार्यक्रम का मूल्यांकन	3.30–5.00	
	• फीडबैक		
	• समापन		

विषय–सूची

- आमुख
- प्रशिक्षण की समय–सारिणी
- शिक्षा में नवाचार
- नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ – प्रस्तावना
- प्रोजेक्ट विधि
  - परिभाषा एवं महत्व
  - प्रोजेक्ट के प्रकार
  - विशेषताएं
  - प्रोजेक्ट निर्माण के अंतर्गत मुख्य बिन्दु
  - प्रोजेक्ट कार्य मूल्यांकन प्रपत्र
- विभिन्न कक्षाओं एवं विषयों के प्रोजेक्ट के उदाहरण
- केस स्टडी
  - परिभाषा
  - शिक्षण अधिगम में केस स्टडी
  - केस स्टडी एवं एन0सी0एफ0 2005
  - उद्देश्य, विशेषताएं एवं उपयोगिता
  - विषयवस्तु के चयन का मानदण्ड़
  - केस स्टडी के सोपान
  - केस स्टडी मूल्यांकन प्रपत्र
- प्रोजेक्ट विधि एवं केस स्टडी विधि में अन्तर
- विभिन्न कक्षाओं एवं विषयों के लिए केस स्टडी के उदाहरण
- हिन्दी शिक्षण में नवाचार
- सक्सेज़ स्टोरीज़

शिक्षा में नवाचार

प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन, प्रकृति का नियम है। परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते हैं। परिवर्तन एक जीवन्त, गतिशील और आवश्यक क्रिया है, जो समाज को वर्तमान व्यवस्था के अनुकूल बनाती है। परिवर्तन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होते हैं। इन्ही परिवर्तनों से व्यक्ति और समाज को स्फूर्ति, चेतना, ऊर्जा एवं नवीनता की उपलब्धि होती है।

कहा गया है–

"Change is variation from a previous state or mode of existence."

परिवर्तन अच्छा है या बुरा इस संबंध में शिक्षाविद किल पैट्रिक की स्पष्ट अवधारणा है–

" परिवर्तन विचाराधीन बात का पूर्ण या आंशिक परिवर्तन है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परिवर्तन अच्छी बात के लिए है या बुरी बात के लिए।"

इस प्रकार परिवर्तन की प्रक्रिया विकासवादी (Evolutionary) संतुलनात्मक (Horeostatic) एवं नवगत्यात्मक (Heomobilistice) परिवर्तन से जुड़ी होती है। परिवर्तन एवं नवाचार एक दूसरे के अन्योन्याश्रित (Inter dependent) है।

परिवर्तन समाज की मॉग की स्वाभाविक प्रक्रिया से जुड़ा तथ्य है। इसलिए परिवर्तन, नवाचार और शिक्षा का आपसी संबंध स्पष्ट है–

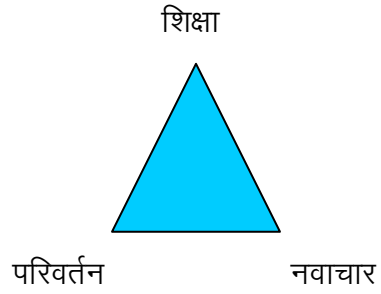

नवाचार कोई नया कार्य करना ही मात्र नहीं है, वरन् किसी भी कार्य को नये तरीके से करना भी नवाचार है।

नवाचार का शिक्षा पर प्रभावः– व्यक्ति एवं समाज में हो रहे परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। शिक्षा को समयानुकुल बनाने के लिए शैक्षिक क्रियाकलापों में नूतन प्रवृत्तियों ने अपनी उपयोगिता स्वंयसिद्ध कर दी है।

ट्रायटेन के अनुसार–

"शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वतः नहीं होता वरन् इन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित ढंग से इन्हें प्रयोग में लाना होता है, ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाये रख सकें।"

इस प्रकार "नवाचार एक विचार है, एक व्यवहार है अथवा वस्तु है, जो नवीन और वर्तमान का गुणात्मक स्वरूप है।"

नवाचार के प्रमुख पद– नवाचार के प्रमुखतः निम्नलिखित पद निर्धारित किए जा सकते है–

1. खोज या शोध
2. परीक्षण
3. मूल्यांकन
4. विकास
5. विस्तार या फैलाव
6. उपयोग हेतु स्वीकार करना

शैक्षिक नवाचार के आधारः– नवाचार की परिस्थितियॉ हर क्षेत्र में अलग–अलग अर्थ बताती हं। इनके प्रयोग के तरीके भी अलग–अलग रूप में प्रयोग में लाए जाते है। जैसा कि प्रो0 उदय पारिख और श्री टी0पी0 राव नवाचार को बड़ी सरलता से परिभाषित करते हैं–

"किसी उपयोगी कार्य के लिए किसी व्यक्ति या निकाय के द्वारा किया गया विचार अथवा अभ्यास नवाचार कहलाता है।"

सभी कार्य ऐसे है, जो पहले कहीं न कहीं किसी न किसी के द्वारा पूर्व में किए जा चुके है। पर आपने पूर्व में किए कार्य को यदि अपनी नयी रचनात्मक शैली प्रदान की है, तो यही प्रयास नवाचार बन जाता है।

नवाचार को निम्नलिखित दो कोटियों में रखा जा सकता है–

(अ) सामाजिक अन्तःक्रियात्मक नवाचारः– इसके अंतर्गत किसी संस्था या उसके मानवीय समूहों से वार्ता करके जब कुछ नया करते है, तो वह सामाजिक अन्तःक्रियात्मक नवाचार कहलाता है। इसमें कार्य के गुण दोष दोनों देखे जाते है, विशेषताओं की जानकारी एवं उपयोगी विचार अपना लिए जाते हैं।

(ब) समस्या समाधान संबंधी नवाचारः– वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में आ रही समस्याओं के निराकरण के लिए नये तरीके खोजकर उस समस्या का समाधान कर दिया जाए, तो यह समस्या समाधान संबंधी नवाचार कहलाता है। नवाचार शिक्षण पद्धतियों का संबंध इसी समस्या समाधान/ (अधिगम की समस्या समाधान) संबंधी नवाचार से है।

नवाचार शिक्षण पद्धतियां
Innovative Teaching Practices

वर्तमान समय में शिक्षा पूर्णतया निःशुल्क एवं बालकेन्द्रित है। हमारी सरकार के द्वारा विद्यालय को सभी भौतिक सुविधायें उपलब्ध करायी जा चुकी हैं, जैसे –विद्यालय भवन, विद्युत व्यवस्था, पाठ्यपुस्तकें, स्कूल यूनीफार्म, मध्यान्ह भोजन, छात्रवृत्ति, शिक्षण अधिगम सामग्री के लिए धनराशि आदि।

यह सत्य है इन सभी सुविधाओं से विद्यालयों में छात्र नामांकन संख्या में अति वृद्धि हुई है। परन्तु गुणवत्तापरक शिक्षा में अभी भी आशानुरूप सफलता नहीं मिली है। जहॉ संख्यात्मक वृद्धि (quantity) होती है, वहां गुणात्मक वृद्धि (quality) में कमी आ जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि कक्षा में रूचिपूर्ण शिक्षण पद्धति अपनाई जाये जैसे– भ्रमण विधि, खेल विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, प्रोजेक्ट विधि, केस स्टडी विधि तथा विभिन्न प्रकार की अन्य शैक्षिक गतिविधियॉ आदि।

इस माड्यूल के माध्यम से प्रोजेक्ट विधि एवं केस स्टडी विधि पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षण कार्य करने में अध्यापक एवं बच्चों दोनो के लिए ही शिक्षण अधिगम एक रूचिपूर्ण प्रक्रिया बन सकेगी। इन पद्धतियों में शिक्षक एक सलाहकार / सुगमकर्ता के रूप में कार्य करेगा तथा छात्र को कार्य करके सीखने का अवसर प्रदान करेगा। इस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के प्रमुख उद्देश्य हैं, कि बच्चों के पुस्तकीय ज्ञान को उनके बाहरी जीवन से जोड़ा जाये, यह उद्देश्य भी इन पद्धतियों से प्राप्त हो सकेगा। भयमुक्त वातावरण में छात्र स्वतंत्र होकर अपना कार्य सुगमता से कर सकता है। जिससे उनमें अभिव्यक्ति, अन्वेषण, निर्णय लेने, स्व मूल्यांकन करने की क्षमता तथा सृजनात्मक, रचनात्मक, आत्मविश्वास आदि कौशलों का विकास हो सकेगा।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नवाचार शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास तो होगा ही साथ ही उनका सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन भी हो सकेगा।

प्रोजेक्ट विधि

प्रोजेक्ट (योजना) विधि शिक्षण की नवीन विधि मानी जाती है। इसका विकास शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति के फलस्वरूप हुआ। शिक्षा इस प्रकार दी जानी चाहिए जो जीवन को समर्थ बना सके। इसके प्रवर्तक जान ड्यूबी के शिष्य डब्ल्यू0एच0 किलपैट्रिक थे। यह विधि अनुभव केन्द्रित होती है। यह बालकों के समाजीकरण पर विशेष बल देती है।

योजना विधि में छात्रों के जीवन से संबंधित समस्याओं को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। छात्र समस्या की अनुभूति करते हैं। समस्या समाधान की योजना तैयार की जाती है। इसके लिए अनेक सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है। शिक्षक केवल निर्देशक / सुगमकर्ता का कार्य करता है। छात्र स्वंय विषय वस्तु सामग्री का अध्ययन करके समस्या का समाधान करते है।

विद्यार्थियों को क्रियात्मक रूप से विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में योजना पद्धति (प्रोजेक्ट मेथेड) का बहुत महत्व है। इस पद्धति की विशेषताओं को जानने से पहले हमें इसकी आवश्यकताओं तथा **योजना** शब्द के अर्थ से परिचित होना आवश्यक है।

प्रोजेक्ट (Project) शब्द की परिभाषा–

"A Project is a whole hearted purposeful activity proceeding in a social environment." -W.H. Kilpatrick

.

थामस और लैंग के अनुसार–

"प्रोजेक्ट इच्छानुसार ऐसा कार्य है जिसमें रचनात्मक प्रयास अथवा विचार हो और जिसका कुछ सकारात्मक परिणाम हो"

प्रोफेसर स्टीवेन्सन के अनुसार–

प्रोजेक्ट एक समस्या मूलक कार्य है जो अपनी स्वाभाविक परिस्थितियों के अंतर्गत पूर्णता को प्राप्त करता है।

योजना पद्धति के अंतर्गत योजना निर्माण का प्रमुख स्थान है। हम अपने कार्यों के निष्पादन हेतु योजना का निर्माण करते है।

उदाहरण के तौर पर मान लीजिए आपके विद्यालय में बाल दिवस के अवसर पर बाल मेला लगना है और आप को उसमें एक स्टाल लगाना है। आपके सम्मुख यह एक समस्या है और इसके लिये आपको कितने ही कार्य करने पड़ेगें : –

सर्वप्रथम आपको यह विचार करना पड़ेगा कि आप किस सामान का स्टाल लगायेगें, सामान की व्यवस्था कहॉ से करेगें, सामान को स्टाल में रखने हेतु क्या व्यवस्था करेगें। आपकी टीम में कौन–कौन होगा, धन की व्यवस्था कहॉ से करेगें। बेचने खरीदने की क्रिया के उपरान्त हिसाब किताब कैसे रखेगें आदि।

ऐसे ही कार्य या समस्या को हल करने के लिये व्यक्ति स्वाभाविक रूप से इच्छुक रहता है और जिसका निष्कर्ष वह अपने परिश्रम द्वारा निकालता है इस प्रक्रिया को प्रोजेक्ट अथवा योजना कहते है।

अतः प्रोजेक्ट एक जीवन अनुभव है जो एक प्रबल इच्छा से प्रेरित होता है और इस इच्छा का प्रयोग ही प्रोजेक्ट पद्धति का आधार है।

प्रोजेक्ट पद्धति का महत्व–

– विद्यालय के वातावरण को रोचक बनाने हेतु

– शिक्षार्थी द्वारा सीखे हुए ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग करने हेतु

– शिक्षार्थी को सक्रिय रखने तथा विद्यालय के कार्यों में रूचि लेने हेतु

– बालक की रूचियों, प्रवृत्तियों तथा आवश्यकताओं में सामंजस्य बिठाने हेतु

अतः प्रोजेक्ट पद्धति में कार्य की एक योजना होती है। उस कार्य का कोई एक उद्देश्य होता है। उसकी कार्य प्रणाली कार्य करते समय स्पष्ट होती है और उस कार्य को करने में स्वाभाविक रूचि होती है। बच्चों के सम्मुख एक समस्या प्रस्तुत कर दी जाती है और वे उस समस्या को सुलझाने में प्रयत्नशील रहते है। समस्या का समाधान करने हेतु बच्चों को विषयों के ज्ञान की भी आवश्यकता पड़ती है इसलिए विद्यार्थियों को अपनी रूचि और इच्छानुसार विषयों का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता है जिससे वे रूचिपूर्वक विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेते है।

प्रोजेक्ट के प्रकार–

प्रोजेक्ट दो प्रकार के होते है–

1. व्यक्तिगत प्रोजेक्ट
2. सामूहिक प्रोजेक्ट

1. **व्यक्तिगत प्रोजेक्ट–** व्यक्तिगत प्रोजेक्ट ऐसे प्रोजेक्ट होते है जिन्हें प्रत्येक विद्यार्थी स्वतंत्रतापूर्वक अपने ढंग से पूर्ण करता है। प्रत्येक विद्यार्थी को अलग–अलग योजनायें दे दी जाती है और वे उन्हें पूर्ण करते है।
2. **सामूहिक प्रोजेक्ट–** सामूहिक प्रोजेक्ट में एक ही प्रोजेक्ट पर कई विद्यार्थी कार्य करते हैं और सहयोगिक प्रयत्नों से उन्हें पूर्ण करते हैं। इस प्रकार उनमें सामाजिकता तथा नागरिकता जैसे – सहयोग, आपसी समझ, अनुशासन, धैर्य आदि गुणों का विकास होता है।

विशेषताओं के आधार पर प्रोजेक्ट चार प्रकार के होते है–

1. **रचनात्मक प्रोजेक्ट–** ऐसे प्रोजेक्ट जिनके विचार अथवा योजना को वाह्यरूप से स्पष्ट किया जाये रचनात्मक प्रोजेक्ट कहलाते हैं। जैसे– नाव चलाना, ड्रामा प्रस्तुत करना, पत्र लिखना आदि।
2. **रसास्वादन प्रोजेक्ट–** ऐसे प्रोजेक्ट जिनका प्रयोजन सौन्दर्यानुभूति हो रसास्वादन प्रोजेक्ट कहलाते हैं जैसे– कहानी सुनना, चित्र देखना, गाना सुनना आदि।
3. **समस्यात्मक प्रोजेक्ट–** ऐसे प्रोजेक्ट जिनमें किसी बौद्धिक कठिनाई अथवा समस्या का हल ढूँढना हो समस्यात्मक प्रोजेक्ट कहलाते है। जैसे– ताप पाकर द्रव क्यों फैलते हैं आदि।
4. **विशेष ज्ञान अथवा कौशल प्रोजेक्ट–** इन योजनाओं का उद्देश्य किसी कार्य में दक्षता अथवा उसका ज्ञान प्राप्त करना होता है। जैसे– किसी चक्र को चलाना अथवा उसको चलाने का ज्ञान प्राप्त करना।

विशेषताएं–

1. छात्रों को मौलिक चिन्तन, क्रियाओं तथा अनुभवों द्वारा सीखने का अवसर मिलता है।
2. छात्रों को नवीन ज्ञान जीवन से संबंधित करके दिया जाता है। इसलिए अधिक उपयोगी होता है एवं छात्र रूचि लेता है।
3. छात्रों में सूझ की क्षमताओं का विकास होता है।
4. मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अधिनियमों पर आधारित है।
5. विद्यालय के सभी विषयों को समन्वित रूप में पढ़ाया जाता है। इससे बोधगम्यता अधिक होती है।
6. छात्र में ज्ञान के साथ सामाजिक गुणों का विकास होता है।

प्रोजेक्ट के सोपान– सभी प्रकार के प्रोजेक्ट में निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया जाता है–

छात्रों के जीवन से संबंधित समस्या का चयन करना।

↓

समस्या चयन तथा उसके स्वरूप को समझना।

↓

समस्या समाधान के लिए योजना तैयार करना।

↓

योजना को क्रियान्वित करना।

↓

योजना का मूल्यांकन करना।

योजना का आलेख तैयार करना।

प्रोजेक्ट चुनने के लिये विषयवस्तु के चयन का मानदण्ड– प्रोजेक्ट चुनते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है–

1. ऐसे प्रोजेक्ट ही चुने जायें जिनका कुछ शैक्षिक मूल्य हो।
2. प्रोजेक्ट को क्रियान्वित करने से पहले यह देख लेना चाहिए कि उसको क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक सभी वस्तुयें उपलब्ध है अथवा नहीं।
3. ऐसे प्रोजेक्ट नही चुनने चाहिए जिनको पूर्ण करने के लिये मॅहगी सामग्री की आवश्यकता हो।
4. ऐसा प्रोजेक्ट चुने जिसमें आवश्यकता से अधिक समय न लगे। उसे उतने समय में ही पूरा हो जाना चाहिए जितना समय पाठ्यक्रम के उस भाग को पूरा करने में लगता है।

प्रोजेक्ट निर्माण के अंतर्गत कुछ मुख्य बिन्दु–

1. प्रोजेक्ट का शीर्षक
2. प्रोजेक्ट कर्ता का नाम– .....
3. कक्षा– .....
4. स्थान– .....

   (विद्यालय का नाम)
5. प्रोजेक्ट निर्देशक– .....
6. प्रस्तावना–
7. विषय वस्तु के बारे में–

   (क) पूर्व ज्ञान से संबंधित जानकारियॉ

   (ख) विषय वस्तु से संबंधित जानकारियॉ

   (ग) विषय वस्तु से संबंधित नियम

   (घ) विषय वस्तु से संबंधित ऑकड़े

   (ड.) अन्य जानकारियॉ
8. प्रोजेक्ट मॉडल का निर्माण

   (i) आवश्यक सामग्रियॉ

   (ii) निर्माण विधि
9. निष्कर्ष
10. स्रोत

11. प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण– कक्षा में प्रस्तुतीकरण के दौरान–

(i) समालोचना

(ii) मूल्यांकन

प्रोजेक्ट पद्धति के उदाहरण– प्रोजेक्ट दो प्रकार के होते है।

1. **सरल प्रोजेक्ट–** जैसे– अपरिमेय संख्याओं का सरलरेखा पर निरूपण, विभिन्न प्रकार की पत्तियों का संग्रह, अपने चारों ओर संज्ञा को खोजना, बाजार से सामान लाना।
2. **बहुमुखी प्रोजेक्ट–** जैसे– नाटक करना, किसी मेले का आयोजन करना आदि।

यहॉ बहुमुखी प्रोजेक्ट का एक उदाहरण दिया जा रहा है–

बहुमुखी प्रोजेक्ट–

प्रोजेक्ट का शीर्षक– विद्यालय में झण्डा रोहण

इस प्रोजेक्ट के द्वारा बच्चे विभिन्न विषयों का ज्ञान निम्नलिखित तरीकों से प्राप्त कर सकते है:–

वार्तालाप– बच्चे विद्यालय में झण्डारोहण कार्यक्रम के आयोजन के संबंध में वार्तालाप करेगें। इससे उनमें अपनी बात को बेहिचक व प्रभावशाली ढंग से कहने का अभ्यास होगा। वार्तालाप के दौरान सभी बच्चे आपसी सहयोग से कार्यक्रम संबंधी जानकारियों का आदान–प्रदान करेगें।

सामाजिक विषय– सामाजिक विषय के अंतर्गत बच्चे भारतीय झण्डे की संरचना के बारे में परिचय प्राप्त करेगें। हमारे देश में झण्डे का महत्व, झण्डा कब फहराया जाता है, झण्डे के तीनों रंगों का अर्थ तथा चक्र का वर्णन।

कला– रंगोली बनाने की प्रक्रिया में फूल, पत्तियों एवं विभिन्न कला आकृतियों की रचना, विभिन्न रंगों का संयोजन एवं उनका प्रयोग। रंगोली के निर्माण हेतु विभिन्न वस्तुओं यथा रंगा हुआ बुरादा, फूल, पत्तियॉ, आटा, चावल, हल्दी आदि की व्यवस्था।

संगीत– देशगीत, अभियान गीत, लोकगीत, लोकनृत्य नाटक आदि का आयोजन।

भाषा– हिन्दी/अंग्रेजी में भाषण, देशभक्ति की भावना वाली कविताओं का पाठ, समसामयिक विषयों, महापुरूषों की जीवनी "नारे" तैयार करना आदि।

गणित– विभिन्न वस्तुओं का क्रय करना, सजावट हेतु झण्डियां लगाने में प्रयुक्त डोरी की लंबाई झण्डियों की संख्या।

झण्डारोहण हेतु प्रयोग की जाने वाली डोरी की लंबाई की माप।

झण्डे का आनुपातिक आकार

रंगोली की ज्यामिति रचनायें।

विज्ञान– गणतंत्रदिवस के समय ठण्डे मौसम में पाये जाने वाले विभिन्न फूलों की जानकारी।

कार्यानुभव– पतंगी कागज से तिकोनी झण्डियों का निर्माण करना तथा उन्हें सुतली पर चिपकाते हुए सजावट हेतु उपयोग करना।

पतंगी कागज से फूल व विभिन्न आकृतियां बनाकर विद्यालय की सजावट में प्रयोग करना।

नैतिक शिक्षा– इस अवसर पर समुदाय के व्यक्तियों, अपने अभिभावकों को आमंत्रित करना तथा उनका सम्मान करना। उनकी बैठक व्यवस्था करना।

प्रोजेक्ट कार्य मूल्यांकन प्रपत्र

1. प्रोजेक्ट कर्ता का नाम .....
2. कक्षा .....
3. प्रोजेक्ट का विषय .....
4. प्रोजेक्ट का शीर्षक .....
5. दिनांक

क0सं0	मूल्यांकित बिन्दु	स्तर			
		A	B	C	D
1	प्रस्तावना				
2	विषयवस्तु संग्रह के स्रोत				
3	प्रोजेक्ट निर्माण हेतु किये गये प्रयास				
4	प्रोजेक्ट निर्माण की विधि				
5	प्रोजेक्ट का लेखन				
6	प्रोजेक्ट का प्रस्तुतीकरण/प्रदर्शन				
7	प्रोजेक्ट की विषय वस्तु के आधार पर मौखिक प्रश्नोत्तर				
8	आवंटित विषयवस्तु के उद्देश्य की पूर्ति				
9	समयबद्धता				
10	प्रोजेक्ट का समग्र मूल्यांकन				

प्रोजेक्ट कक्षा –1
विषय – हिन्दी

समय – 7 दिन **वादन –निर्धारित विषय का**

शीर्षक– मात्रिक एवं अमात्रिक शब्दों की पहचान करना

शिक्षक– सक्रिय सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

मात्रिक एवं अमात्रिक शब्दों की सहायता से भाषा कौशल का विकास एक उपयोगी गतिविधि माना जा सकता है। क्योंकि पढ़ना (सुबोपलि) में तीसरे स्थान पर आता है और शब्दों में मात्रा का बोध इसी स्तर पर कराना आवश्यक है।

उद्देश्य

बच्चे मात्रिक एवं अमात्रिक शब्दों को पहचान एवं लिख सकेंगे।

आवश्यक सामग्री – कॉपी, पेन्सिल, रबर, कटर, आदि।

योजना बनाना –

प्रत्येक बच्चे को श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों को कॉपी पर लिखने को कहेगें–

श्यामपट्ट कार्य–

अनार	अदरक	जल	अमरक
पवन	गगन	आपस	आग
थल	नगर	बस	डगर
इमली	ईख	नयन	सरल
मानव	इशारा	किनारा	सबल
टमाटर	फल	कलकल	टपक
हल	कलम	कटहल	रमा
तरबूज	पिता	कहानी	नल

क्रिया विधि–

प्रत्येक छात्र को निम्नलिखित क्रियाविधि से कार्य करवायेगे।

मात्रिक शब्द	**अमात्रिक शब्द**
अनार	जल
आपस	अदरक

मूल्यांकन– प्रत्येक छात्र मात्रिक एवं अमात्रिक शब्दों को छांट सकेगा।

मात्रिक शब्द	**अमात्रिक शब्द**
आग	कमरक
इमली	पवन
ईख	गगन
मानव	नयन
इशारा	सबल
किनारा	फल

टमाटर	कलकल
रमा	टपक
तरबूज	हल
पिता	कटहल
कहानी	नल

उपयोगिता– सुबोपलि के चरण में भाषा की दक्षता विकसित करने में मात्रिक एवं अमात्रिक शब्दों की पहचान सीखने में सहायक होती है जिससे बच्चा आसानी से भाषा पढ़ना एवं लिखना सीखता है।

प्रोजेक्ट कक्षा –2
विषय – हिन्दी

समय 7 दिन **वादन –निर्धारित वादन में**

शीर्षक– मैं कौन हूँ?

शिक्षक– सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

पानी अर्थात् जल ही जीवन है। जो बरसात के रूप में, प्राकृतिक स्रोतो जैसे नदी, झरने आदि के रूप में हमें प्राप्त होता है। हम पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते है। किसान अपनी फसल को पानी की सहायता से ही सींचता है। हमें स्वस्थ रहने के लिए साफ एवं शुद्ध जल का ही प्रयोग करना चाहिए।

उद्देश्य

बच्चे पानी की उपयोगिता एवं गन्दे पानी से होने वाली हानियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

कॉपी, सादा कागज, पेन्सिल, जल से संबंधित चित्र, पाठ्यपुस्तक आदि।

योजना बनाना

प्रत्येक बच्चे को पाठ्यपुस्तक के ''मैं कौन हूँ'' पाठ को पढ़कर समझने के लिए प्रेरित करेंगें। पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पानी के विविध उपयोगों पर चर्चा करेंगें। पानी को संचय करने के उपायों तथा तालाब, झरनों आदि के महत्व को समझायेंगे। तत्पश्चात निम्नलिखित क्रियाविधि द्वारा बच्चों से प्रश्न पूछेंगे।

क्रिया विधि–

1. आसमान में छाये बादलों में क्या रहता है?
2. बच्चे कागज की नाव बनाकर किसमें चलाते है?
3. नदियों से बहकर समुद्र में कौन जाता है?
4. समुद्र से भाप बनकर कौन उड़ जाता है?
5. पानी से तुम प्रतिदिन कौन–कौन से काम करते हो?
6. यदि कोई गन्दा पानी पीता है तो उसे क्या हो जायेगा?
7. पानी के चार उपयोग बताओं?

मूल्यांकन

प्रत्येक छात्र इस प्रकार अपनी बात कह सकेगा।

1. पानी– आसमान में छाये बादलों में पानी रहता है।
2. बरसात के इक्ट्ठा पानी में बच्चे कागज की नाव चलाते है।
3. पानी– नदियों से बहकर समुद्र में जाता है।
4. पानी– समुद्र से भाप बनकर उड़ जाता है।
5. हाथ मुँह धोना, नहाना, भोजन बनाने में, कपड़े धोने में, प्यास लगने पर पानी पीते हैं। (छात्रानुसार)
6. बीमार
7. (i) किसान अपनी फसल एवं पेड़–पौधों को सींचता है

   (ii) हम पानी से अपनी प्यास बुझाते है।

   (iii) घर में खाना बनाने में काम आता है।

   (iv) हाथ मुह धोने एवं, नहाने के काम आता है।

   (छात्रानुसार)

उपयोगिता–

बच्चे पानी की उपयोगिता के बारे में जान सकेंगें। पानी प्राप्त करने के विभिन्न स्रोत जान सकेंगें। गन्दे पानी से होने वाली हानियों को जान सकेंगें आदि।

प्रोजेक्ट कक्षा –2
विषय – गणित

समय – 4 दिन **वादन –निर्धारित वादन में**

शीर्षक– नाप, जोख (लम्बाई व तौल) की अमानक व मानक इकाइयां

शिक्षक– सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

हमें अपने व्यावहारिक जीवन में माप–तौल की जानकारी की अत्यन्त आवश्यकता होती है चाहें हम बाजार में कपड़ा खरीदे या अनाज। दुकानदार हमें कपड़ा व अनाज नाप तौल के ही देता है। यदि हमें नाप तौल की इकाइयों की जानकारी नहीं है तो हम हानि भी उठा सकते है। दुकानदार वस्तु को कम नाप तौल के भी दे सकता है। हमें दैनिक जीवन में सामान खरीदने में धोखा ना खायें इसके लिए हमें नाप तौल की इकाइयों की जानकारी होनी चाहिए।

उद्देश्य

- ❖ बच्चों को नाप तौल की अमानक इकाइयों की समझ उत्पन्न होगी।
- ❖ बच्चे नाप तौल की मानक इकाइयों को समझ सकेंगे।
- ❖ बच्चों के स्वयं कार्य करने से विषय के प्रति रूचि उत्पन्न होगी।

योजना बिन्दु 1– लम्बाई का अनुमान, अमानक इकाइयॅा

आवश्यक सामग्री

विभिन्न लम्बाइयों की वस्तुएं जैसे पेन, पेन्सिल, लॅम्बी छड, नोट बुक, रस्सी का टुकड़ा।

क्रिया विधि–

बच्चे विभिन्न लम्बाई की वस्तुएं अमानक इकाइयों जैसे– अंगुल, बालिस्त, हाथ, डण्ड़ा से नापेंगे, बच्चों से शिक्षक विभिन्न वस्तुओं की नाप को सारिणी में भरवाकर दिशा निर्देश देकर अमानक इकाईयों का अभ्यास करायेंगें।

वस्तुएं	लम्बाई
पेन	आठ अंगुल
पेन्सिल	दस अंगुल
नोट बुक	एक बालिस्त चार अंगुल
रस्सी	चार हाथ दो बालिस्त

बच्चे विभिन्न वस्तुओं को नाप कर अभ्यास करेंगें। शिक्षक बच्चों को समझायगा कि सभी बच्चों / व्यक्तियों के बालिस्त, अंगुलियां, हाथ तथा कदम बराबर नहीं होते इसलिए वस्तुओं की नाप में अन्तर आ जाता है। मापने की ये इकाइयां अमानक है। इससे केवल अनुमान लगाते है।

योजना बिन्दु 2– लम्बाई की मानक इकाइयां

आवश्यक सामग्री

विभिन्न लम्बाई की वस्तुएं, पटरी, फीता।

क्रिया विधि–

शिक्षक बच्चों से पूछेगा –

प्र0–दर्जी किस चीज से कपड़ा नापता है?

प्र0–दुकानदार किससे कपड़ा नापता है?

बच्चों तुमने देखा होगा कि दर्जी और दुकानदार सही माप करने के लिए पटरी या फीता प्रयोग करते हैं। (पटरी और फीता को दिखाते हुए) देखें – पटरी और फीते में बराबर दूरी पर चिन्ह लगे हैं। इसे मीटर पैमाना कहते है।

बच्चे विभिन्न लम्बाई की वस्तुएं इकत्रित करके उनकी नाप मीटर स्केल से लेंगे तथा सारिणी बनाकर उसमें अंकित करेंगें।

वस्तुए	लम्बाई
मेज की लम्बाई	1 मी0 5 सेंमी0
पेन की लम्बाई	10 सेंमी0
कमरे की लम्बाई	4 मी0
रस्सी की लम्बाई	10 मी0 25 सेंमी0

उपरोक्त सारिणी में बच्चों ने नाप कर वस्तुओं की लम्बाई को अंकित कर यह सीखा कि मीटर से कम लम्बाई को सेंटीमीटर में मापते हैं। बच्चों से विभिन्न प्रश्न पूंछकर उनके प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन करेंगे।

योजना बिन्दु 3– वजन का अनुमान (अमानक इकाइयां)

आवश्यक सामग्री

विभिन्न वजन की वस्तुएं, चावल, गेंहू, बालू, पत्थर, फल आदि।

क्रिया विधि–

शिक्षक निर्देश –

प्रारम्भ में जब बांट प्रचलित नहीं थे तब हम लोग अपना वजन व तौल का काम अमानक इकाईयों जैसे मुठ्ठी, अंजुली, टोकरी आदि से काम चला लेते थे। परन्तु उन इकाईयों से मापने पर सही माप नहीं हो पाती थी क्यों सभी लोगो की मुठ्ठी, अंजुली, टोकरी समान नहीं होती है।

बच्चों को समूह में बांट कर विभिन्न वस्तुओं की अमानक इकाईयों से माप करवायेंगे तथा सारिणी बनाकर उसमें अंकित करेंगें।

वस्तुएं	माप (तौल)
चावल	4 मुठ्ठी
गेंहूं	10 अंजुल
बालू	5 अंजुली 2 मुठ्ठी
फल	2 टोकरी

बच्चे इसी प्राकर अन्य वस्तुओं की भी अमानक इकाईयो से नाप कर अभ्यास करेगे तथा तौल की अमानक इकाईयो की समझ विकसित करेंगें।

योजना बिन्दु 4– वजन, तौल की मानक इकाइयां

आवश्यक सामग्री

भार, तुला, चावल, गेंहू, फल आदि।

क्रिया विधि–

शिक्षक क्रिया –

पहलें शिक्षक मानक बांटों को लेकर बच्चों को जानकारी देगा तथा 1 किलोग्राम, 500 ग्राम, 200 ग्राम, 100 ग्रम, 50 ग्रम, 20 ग्रम, 10 ग्रम के बांटों की पहचान कराकर वस्तुओं के तोल

करने के दिशा–निर्देश देकर बच्चों से बांटों से वस्तुओं की तौल करायेगा तथा नोट बुक पर तौल को किलोग्राम और ग्राम में मापकर अंकित करायेगा।

छात्र क्रिया –

बच्चे विभिन्न वस्तुओं जैसे चावल, गेंहू, फल आदि को भार तुला से किलोग्राम और ग्राम में वजन लेकर सारिणी बनाकर उसमें अंकित करेंगें।

वस्तुए	माप (तौल)
गेंहूं	02 किलोग्राम
चावल	1 किलोग्राम, 200 ग्राम
बालू	500 ग्राम
शक्कर	1 किलोग्राम, 100 ग्राम
फल	2 किलोग्राम, 50 ग्राम

बच्चे इसी प्राकर अन्य वस्तुओं को भी मानक इकाईयो से तौल कर अभ्यास करेंगें। तथा तौल की मानक इकाईयो की समझ विकसित करेंगें।

निष्कर्ष–

बच्चे प्राजेक्ट पूर्ण होने के पश्चात् –

- ❖ नाप–जोख (लम्बाई) तथा वजन (तौल) की अमानक इकाईयों को समझ सकेंगे।
- ❖ नाप–जोख (लम्बाई) तथा वजन (तौल) की मानक इकाईयों को जैसे मीटर, सेंटीमीटर, किलोग्राम तथा ग्राम को समझ कर उनका अपने व्यावहारिक जीवन में प्रयोग भी कर सकेंगे।

प्रोजेक्ट कक्षा –2

विषय – अंग्रेजी

समय – 1– 2 दिन वादन – निर्धारित वादन में

शीर्षक– Birds & Animals

शिक्षक– सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

बच्चों ने अंग्रेजी के नये शब्द सीखे हैं। कुछ जानवरों, पक्षियों के अंग्रेजी नाम जानते है और उन्हें पहचानना सीख रहे है। यदि यह नाम लिखें हो तो उन्हें पहचानना भी सीख रहे हैं। कुछ नयी activities के माध्यम से इनकी पुनरावृत्ति सीखे गये ज्ञान को स्थायी करने में सहायक सिद्ध होती है।

उद्देश्य

- ❖ बच्चों के सीखे गये ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करना।
- ❖ बच्चों के creative पक्ष को प्रोत्साहित करना।

आवश्यक सामग्री

गीले–सूखे रंग, रंग घोलने के लिए प्लेट, स्केच पेन, सादे कागज।

योजना –

बच्चों को छोटे समूह में बांट कर उन्हें सादे कागज पर अंगूठे / उंगलियों की छाप बनाने का तरीका समझाकर प्लेट में समूहवार अलग–अलग या किसी एक रंग को घोल कर दिया जायेगा और कागज शीट को कार्ड के रूप में मोड़ कर या खुला हुआ दे दिया जायेगा जिस पर वे निशान अंकित करेंगें। बाद में रंग के (निशान) सूखने के पश्चात समूहवार कागज इकट्ठा करके उनके डिजाइन पूरा करने में शिक्षक उनकी सहायता करेगा। इन complete हुए figures के नाम बच्चों से लिखाकर कार्य पूरा किया जायेगा।

क्रिया विधि–

1. बच्चों को प्रोजेक्ट के विषय में शिक्षक द्वारा बताया जायेगा।
2. बच्चे समूहवार अपनी आवश्यकतानुसार रंग चुनकर अंगूठे / उंगलियों के निशान अंकित करेंगें।
3. रंग सूखने के बाद मार्गदर्शक की सहायता से चित्र पूरे करके वे उन्हें नाम भी देंगें।

मूल्यांकन–

बच्चों द्वारा बनाकर तैयार की गयी sheets को उनके नाम लिख display भी कर सकते हैं। जहां वे अपने काम को देखकर प्रोत्साहित होंगे, साथ ही इन नामों पर कई बार नजर पड़ने से words, names को याद रखना भी सीखेंगे।

प्रोजेक्ट कक्षा –3

विषय – सा0 अध्ययन

समय – 7 –10 दिन वादन –प्रतिदिन अन्तिम दो वादन

शीर्षक– शरीर के अंग

शिक्षक– सक्रिय सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

''हमारा परिवेश–कक्षा 3 पेज नं0 15 से चित्र स्कैन करके लगाये

चित्र में हम मानव शरीर (अपने शरीर) के अंगो को देख रहे है, ये अंग हैं– कान, आंख, नाक, हाथ, पैर, सिर, गर्दन, छाती और पेट। हम हाथ से वस्तुओं को पकडते है, व छूते हैं, जबकि पैर चलने के काम आते है, गर्दन इधर–उघर घूमा कर देख सकते है। लेकिन यदि आंख के पास कोई नुकीली चीज मारता है तो आंख बंद कर लेते है, यदि बहुत तेज शोर मचता है तो दोनो कान बंद कर लेते है जबकि जीभ से हमें खट्टे मीठे कड़वे का अहसास होता है, और यदि हाथ से हम कोई गर्म चीज छूते है तो हाथ अपने आप पीछे को हट जाता है। यदि गुलाब के फूल को सूंघते है तो उसकी खुशबू हमें अच्छी लगती है और जब आपकी उपस्थिति रोज ली जाती है तो अपनी

बारी आने पर आप अपना नाम सुनकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते है, बच्चों जानते हो ऐसा क्यो होता है क्योंकि ऑख, नाक, कान, त्वचा जीभ ये सभी हमारे ऐसे अंग है जिनसे हम सुनने, देखने, चखने, सूंघने और स्पर्श करने का काम करते हैं, इन्हें हम संवेदी अंग के नाम से पुकारते हैं।

उद्देश्य– समस्या का चुनाव

1. बच्चे शरीर के संवेदी अंगो के बारे में जानकारी प्राप्त कर पायेंगे।
2. बच्चे संवेदी अंगों के कार्यो को बता सकेंगे।
3. बच्चे संवेदी अंगों की सफाई की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

योजना बनाना –

- ❖ सम्पूर्ण कक्षा को पॉच समूहों में बॉटेगे।
- ❖ प्रत्येक समूह के लिए एक–एक संवेदी अंग के बारे में जानकारी एकत्रित करवाने में सहायता करेंगे। इन अंगों की देखभाल कैसे करेंगे, प्रत्येक समूह के हर बच्चे से कम से कम एक उपाय जानने की कोशिश करेंगे।

क्रिया विधि– प्रत्येक समूह का कार्य निर्धारण किया जायेगा।

समूह –1 त्वचा

यह समूह स्पर्श करना, छूना (त्वचा) इस संदर्भ में छोटा–बड़ा, चिकना–खुरदरा, गर्म–ठंडा आदि चीजों की पहचान कराकर नवीन उदाहरणों को बोलने तथा सूचीबद्ध करने, संबंधित चित्र को इकठ्ठा करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। (देखभाल के उपाय)

समूह –2 आंख

इस समूह को अपने आस–पड़ोस में दिखाई देने वाली वस्तुओं के बारे में सूची बनाने, चित्र बनाने व इकट्ठा करने उनके गुणों तथा अन्तर को बताने के लिए कहा जायेगा।

समूह –3 नाक

इस समूह को ऐसी चीजों की सूची बनाने को कहेंगे जिसकी सुगन्ध उन्हें अच्छी लगती है और जिसकी सुगन्ध अच्छी नहीं लगती है।

समूह –4 जीभ

इस समूह को ऐसी चीजों की सूची बनाने को कहेंगे जिसमें अलग–अलग स्वाद होता है। जैसे कड़वा, मीठा, तीखा, खट्टा, नमकीन।

या

शिक्षक पूर्व योजना के अनुसार समूह को विभिन्न वस्तुओं की सूची उपलब्ध करायेगा। ताकि बच्चे उनके स्वाद के बारे में बता सके।

समूह –5 कान

पक्षियों, पशुओं (किन्हीं 10) की आवाजों की सूची बनाओं। (शिक्षक द्वारा बच्चों को चित्र उपलब्ध कराया जायेगा) बच्चे चित्र के अनुसार अवाज सुनायेगें। (देखभाल के उपाय)

मूल्यांकन / उपयोगिता–

1. बच्चे संवेदी अंग के कार्य रोचक ढंग से सीख सकेंगे।
2. बच्चे संवेदी अंगों के बारे में समझ सकेंगें।
3. बच्चे इन संवेदी अंगों की देखभाल कैसे करेंगें तथा सुरक्षा के लिए क्या–क्या करेंगे– कम से कम एक उपाय बता सकेंगे।

प्रोजेक्ट कक्षा–4

विषय– अंग्रेजी

समय– 5 दिन **वादन –प्रतिदिन अन्तिम दो वादन**

शीर्षक – This is My Family

शिक्षक– सक्रिय सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना– परिवार हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। भिन्न–भिन्न रिश्ते परिवार को एक स्वरूप प्रदान करते हैं। कुछ परिवार एकल परिवार होते हैं, जहां माता–पिता व उनकी संतानें एक साथ रहती है जबकि कुछ परिवार संयुक्त परिवार होते है, जहॉ बच्चे अपने पिता–माता के अतिरिक्त अन्य संबंधियों जैसे– दादा–दादी, चाचा–चाची, व चचेरे भाई बहनों के साथ रहते हैं। वर्तमान समय की आवश्यकता है कि छात्र इनके पारस्परिक संबंधों को जाने तथा उनके अंग्रेजी नामों से अवगत हो सकें।

उद्देश्य– (1) छात्रों को पारिवारिक संबंधों का ज्ञान कराना।

(2) छात्रों में इन संबंधों की अपने परिवार के परिप्रेक्ष्य में समझ विकसित करना।

(3) छात्रों में इस योग्यता का विकास करना कि वे अंग्रेजी के सरल वाक्यों में पारिवारिक संबंधों को व्यक्त कर सकें।

आवश्यक सामग्री– Chart papers, crayons, अलग–अलग आयु वर्ग के महिला, पुरूषों के चित्र।

कार्य योजना– शिक्षक कक्षा के छात्रों से वार्तालाप करते हुए परिवार की संरचना पर विचार स्पष्ट करेगा। भिन्न–भिन्न छात्रों के परिवारों की संरचना भी भिन्न–भिन्न हो सकती है। अतः एक आदर्श परिवार की संरचना पर बातचीत करना उचित होगा। इस कार्य को करते हुए शिक्षक 'संबंधो' के अंग्रेजी शब्दों से छात्रों को परिचित कराएंगे। प्रोजेक्ट कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा। प्रोजेक्ट कार्य हेतु चित्रों का संकलन करने के लिए पुराने समाचार पत्रों, पुस्तकों आदि की मदद ली जा सकती है।

कार्य विधि–

1. शिक्षक प्रोजेक्ट को विषय वस्तु से छात्रों को अवगत कराएं।
2. छात्रों को विभिन्न आयु वर्ग की महिलाओं व पुरूषों के मित्रों को एकत्र करने हेतु निर्देशित करें। इसके लिए छात्रों को 2–3 दिन का समय दें।
3. छात्र प्रतिदिन अपने द्वारा एकत्र की गई सामग्री को विद्यालय में शिक्षक के पास जमा करेगें।
4. चौथे दिवस में शिक्षक छात्रों को 4–5 समूहों में विभाजित करेगें।
5. प्रत्येक छात्र को 1/4 भाग चार्ट पेपर शिक्षक द्वारा वितरित किया जाएगा।
6. छात्र एकत्र किए गए चित्रों में से अपनी आवश्यकतानुसार चित्रों का चयन करेगें।

7. छात्र चार्ट पेपर पर अपने–अपने परिवारों के अनुसार चित्र चिपका कर परिवार वृक्ष तैयार करेगें।

8. छात्र चित्र के साथ उनके संबंध अंग्रेजी व हिन्दी दोनो में दिखाएगें।

9. शिक्षक आवश्यकतानुसार सहयोग प्रदान करेंगे।

eg.

चित्र	चित्र
This is my grandfather	This is my grandmother.

मूल्यांकन / उपयोगिता

1. छात्र पारिवारिक संबंधों को जान सकेगें।
2. छात्र अपने परिवार में संबंधों के प्रति समझ विकसित कर सकेगें।
3. पारिवारिक संबंधों के अंग्रेजी के नामों से परिचित हो सकेगें।
4. संयुक्त परिवार तथा एकल परिवार के अंतर को समझ सकेगें।

प्रोजेक्ट कक्षा –4

विषय – विज्ञान

समय – 4 से 5 दिन **वादन –निर्धारित वादन में**

शीर्षक– पौधों के विभिन्न भाग एवं उनके कार्य

शिक्षक– सक्रिय सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

हम अपने आस–पास विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों को देखते है। अधिकतर पौधों में तना, शाखायें, पत्तियां, फल और फूल दिखाई देते है। पौधों के प्रत्येक भाग के अलग–अलग कार्य होते है। पौधे के अधिकांश भाग मिट्टी के बाहर पाये जाते है जैसे तना, पत्तियां, फूल तथा फल आदि और सामान्यता जड़ भूमि के अन्दर होती है।

उद्देश्य

- ❖ बच्चों को पौधों के विभिन्न भागों की जानकारी देना तथा उनके कार्यो के बारे में बताना।
- ❖ पौधों की उपयोगिता एवं महत्व से परिचित कराना।

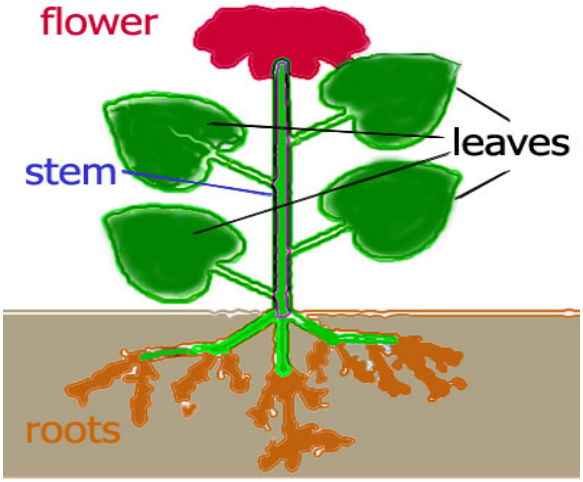

आवश्यक सामग्री

चार्ट पेपर, पेन्सिल, रबर, कटर, सादे कागज, पारदर्शक टेप, कैंची आदि।

योजना बनाना –

1. शिक्षक सम्पूर्ण कक्षा को आवश्यकतानुसार समूहों में बांटेगा।
2. प्रत्येक समूह के लिए आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पूर्व में ही करके उसे आवश्यकतानुसार बच्चों को उपलब्ध करायेगा।
3. प्रत्येक समूह में प्रस्तुतीकरण तथा कार्य को योजनानुसार करवाने के लिए टीम लीडर का चुनाव किया जायेगा।

क्रिया विधि–

समूह –1

बच्चों से पौधे के विभिन्न अंगों के नाम चार्ट पेपर पर लिखने को कहा जायेगा। साथ ही इससे संबंधित चित्रों को भी चार्ट पेपर पर चिपकाने को कहेगें।

समूह –2

पौधे की जड़ का चित्र चार्ट पेपर पर बनाकर उसके कार्यो को लिखने को कहा जायेगा और विभिन्न प्रकार की जड़ों के चित्रों को भी चार्ट पेपर पर चिपका कर उनके नाम लिखने को कहेगें।

समूह –3

चार्ट पेपर पर पौधे के तने का चित्र बनाकर, उसके कार्यो को लिखवाया जायेगा और विभिन्न प्रकार की तनों के चित्र एकत्र करके चार्ट पेपर पर चिपका कर उनके नाम लिखने को कहा जायेगा।

समूह –4

चार्ट पेपर पर पत्ती का चित्र बनाकर, उसके कार्यो को लिखवाया जायेगा और विभिन्न प्रकार की पत्तियों को छाया में सुखाकर चार्ट पेपर पर पारदर्शी टेप की सहायता से चिपका कर उनके नाम लिखने को कहा जायेगा।

समूह –5

बच्चों से किसी पौधे के फूल का चित्र चार्ट पेपर पर बनवाकर, उसके कार्यो को लिखवाया जायेगा और आस–पास पाये जाने वाले कुछ फूलों को छाया में सुखाकर चार्ट पेपर पर पारदर्शी टेप की सहायता से चिपका कर उनके नाम लिखने को कहा जायेगा।

समूह –6

फल का चित्र चार्ट पेपर पर बनाकर, उसके कार्यो को लिखेगा और कुछ फलों के चित्रों को एकत्र कर उन्हें चार्ट पेपर पर चिपका कर उनके नाम लिखने को कहा जायेगा।

समूह –7

बच्चों से उन पौधों की सूची बनाने के लिए कहेंगे जिनके भागों जैसे जड़, तना और पत्ती को हम भोजन के रूप में प्रयोग करते है तथा उन भागों को चार्ट पेपर पर उनका चित्र बनाकर उनके नाम लिखने को कहा जायेगा। यही समूह पूरे प्रोजेक्ट कार्य का संकलन भी करेगा।

उपयोगिता एवं मूल्यांकन–

1. बच्चें पौधे के विभिन्न अंगों तथा उनके कार्यो को जान सकेगे–
2. किन पौधों के अंगों (जड़, तना, पत्ती) को हम भोजन के रूप में प्रयोग करते है। इसकी भी जानकारी प्राप्त होगी।
3. पौधों की उपयोगिता एवं महत्व से परिचित होंगे।
4. समूह में कार्य करने एवं स्व अनुशासन की प्रवृत्ति का विकास होगा।
5. अपने आस–पास के वातावरण में उपलब्ध पेड़–पौधों की जानकारी होगी तथा चीजों को वैज्ञानिक ढंग से सोचने, समझने एवं खोजने की क्षमता का विकास होगा।

प्रोजेक्ट कक्षा– 5

विषय–अंग्रेजी वादन –निर्धारित वादन में
अवधि– 5 दिन

शीर्षक– Books (1) Lets make a picture book (2) Books are our best Friends

प्रस्तावना– पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की विभिन्न प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध होती है जो अलग–अलग आयु वर्ग एवं अलग रूचियों वाले व्यक्तियों की आवश्यकता की पूरक होती है। कहते है पुस्तकें व्यक्ति की सबसे अच्छी मित्र होती है। पुस्तकें ज्ञान एवं मनोरंजन दोनों का ही स्रोत सिद्ध होती है। आज के मोबाइल और इंटरनेट के युग में पुस्तकालय शनैःशनैः पुस्तक संग्रहालयों का रूप लेते जा रहे है और पुस्तको के प्रति रूझान कम होती प्रतीत हो रही है जबकि वास्तविक जीवन में ऐसे भी उदाहरण हैं जहॉ 'स्वाध्याय' ने formal education की कमी को पूरा किया है।

उद्देश्य–

1. छात्रों में पुस्तकों के प्रति रूझान जागृत करना।
2. पठन को भाषा विकास का अध्ययन बनाने का प्रयास।
3. ''अच्छे पाठक ही अच्छे लेखन'', अच्छे साहित्य के आधार है इस उक्ति को ध्यान में रखते हुए पठन में रूचि जगाना।
4. पढ़ने की जिज्ञासा प्राप्त कर साक्षरता/शिक्षा का विस्तार
5. पढ़ने में रूचि होने पर बच्चों में पुस्तकों को सहेज व संभाल कर रखने की प्रवृति को भी प्रोत्साहन मिलता है।

सामग्री– कार्डशीट्स, क्रेयान, पेन्सिल, रबर, स्केचपेन, चित्र, कैंची, गोंद/स्टेपलर बासी कागज आदि।

कार्ययोजना– प्रोजेक्ट कार्य के दो चरण है पहला जिसमें एक picture book बनानी है। दूसरा किताबों की साज सज्जा से संबंधित है।

I पहले चरण में कार्डशीटस को काटकर पुस्तक तैयार करनी है जिसके लिए कार्डशीट्स में मोड़ बनाकर तैयार करेगें ताकि मोड़ों पर काटकर बच्चे पुस्तक के लिए पृष्ठ तैयार कर सकें जिनपर चित्र चिपका कर picture book तैयार हो जाएगी। पुस्तक के पृष्ठों पर चिपके चित्र के संबंध में कुछ लिखेगें।

II द्वितीय चरण में पुस्तक की सॅभाल के अंतर्गत उन्हें अपनी तैयार की गयी पुस्तक पर कवर चढ़ाने का कार्य करना होगा जिसके लिए उन्हें कवर करने के लिए बासी कागज/अखबारी कागज उपलब्ध कराया जाएगा।

किया विधि (प्रथम चरण)

1. शिक्षक शीर्षक से संबंधित आधारभूत वार्तालाप करते हुए छात्रों से विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के विषय में बात करेगें। (मैगजीन/चित्रकथांए/उपन्यास) उन्हें किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता है? वार्तालाप के माध्यम से प्रोजेक्ट के विषय में छात्रों को बताएगें।
2. picture book बनाने के लिए आवश्यक सामग्री क्या होगी? तथा picture book किस प्रकार तैयार की जाएगी इसके विषय में भी चर्चा की जायेगी।
3. कक्षा के छात्रों को 4/5 समूहों में बॉट दिया जायेगा (समूह की सदस्य संख्या कक्षा के छात्र संख्या पर निर्भर करेगी) तदुपरान्त प्रत्येक समूह को एक picture book तैयार करने के लिए कहा जाएगा जिसके लिए उन्हें चित्र इकट्ठा करने होगें।
4. समूहवार कार्डशीट्स उपलब्ध कराकर, मोड़ों पर काटते हुए उन्हें पृष्ठ के रूप देकर book बनाने का काम दिया जाएगा जिसपर बाद में चित्र चिपकाकर picture book तैयार की जाएगी।
5. यदि चित्रों को क्रमानुसार संयोजित किया जाए तो एक छोटी चित्रकथा भी तैयार की जा सकती है।

कियान्वयन–

1. समूहवार बच्चे शीट काटकर तैयार किए गए पृष्ठों को चिपकाकर या स्टेपल कर एक पुस्तक का रूप देगें।
2. पुस्तक को picture book या comic strip जिसका भी रूप देना है उसकी कार्ययोजना समूहवार बनाएंगे।
3. पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए चित्रों से संबंधित लिखित भाग तैयार करने में शिक्षक छात्रों की सहायता करेगें।

4. बच्चे पुस्तक में चित्र चिपकाएगें और उनके विषय में अपना विचार या एक या दो वाक्य लिखगें। पृष्ठ पर नीचे की ओर पृष्ठ संख्या भी अंकित की जा सकती है। पुस्तक का एक मुख पृष्ठ भी तैयार कर उसपर title भी अंकित किया जा सकता है।

क्रिया विधि–(द्वितीय चरण)

1. शिक्षक पुस्तकों को सही ढंग से पढ़ने/पकड़ने/रखने आदि पर वार्तालाप कर इस ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करेगें कि हमें पुस्तकों को संभाल कर रखना चाहिए उन्हें गंदा नहीं करना चाहिए। इसे ensure करने का पहला तरीका है पुस्तकों को कवर करके रखना।
2. शिक्षक उन्हें बासी कागज या अखबारी कागज देकर पुस्तकों पर कवबर चढ़ाने के चरण demonstrate करेगा और प्रत्येक बच्चा अपनी किसी पाठ्यपुस्तक पर कवर चढ़ाएगा।

क्रियान्वयन–

1. प्रत्येक बच्चे को अखबारी कागज वितरित कर एक दूसरे की सहायता से एक पुस्तक पर कवर चढ़ाने का कार्य करवाएगें।
2. शेष पुस्तकों पर स्वंय या अपने समूह के अन्य सदस्यों की सहायता से बच्चे स्वंय कवर चढ़ाकर तैयार करेगें।
3. जिन समूहों के सदस्यों का कार्य उत्तम हो उन्हें प्रोत्साहन भी दिया जा सकता है।

मूल्यांकन/उपयोगिता–

1. बच्चों द्वारा तैयार की गयी पुस्तकों को संकलित कर उनका उपयोग अन्य कक्षाओं में पठन को प्रेरित करने के लिए किया जा सकता है।
2. स्वंय तैयार की गई पुस्तकों के प्रति छात्र एक निकटता तथा जुड़ाव रखेंगे जिसके माध्यम से पुस्तकों को सॅभालकर रखने का महत्व उन्हें समझाना सरल होगा।
3. इस जुड़ाव के माध्यम से बच्चों में पुस्तक फाड़ने की प्रवृत्ति को भी दूर करने में सहायता मिल सकती है।
4. प्रोजेक्ट समाप्त हो जाने के कुछ समय उपरान्त कक्षा के छात्रों की पुस्तकों का पुनःअवलोकन कर उन बच्चों को प्रोत्साहित किया जा सकता है जिनकी पुस्तकों पर कवर चढ़े है और उनको सॅभाल कर ध्यान रखा जाता है।

प्रोजेक्ट विस्तार–

1. इसे विस्तार देने के लिए बच्चो से bookmark भी बनवाए जा सकते है, जिन्हें पृष्ठ संख्या याद रखने के लिए प्रयोग किया जा सके।
2. यदि बच्चे कुछ बड़े हो तो picture book के पृष्ठों पर पृष्ठ संख्या अंकित करने के साथ–साथ उनसे एक अनुक्रमणिका बनाने के लिए भी कहा जा सकता है।

प्रोजेक्ट कक्षा –5

विषय – विज्ञान

समय – 7 से 10 दिन **वादन –निर्धारित वादन में**

शीर्षक– विटामिन एवं उसकी कमी से होने वाले रोग

शिक्षक– सक्रिय सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

भोजन से हमें दैनिक कार्य सम्पन्न करने के लिए उर्जा प्राप्त होती है। इससे शरीर में वृद्धि और अनेक रोगो से सुरक्षा होती है। यदि सिर्फ भूख मिटाने तथा काम करने के लिए हमें शक्ति मिल जाये तो हम स्वस्थ एवं निरोग रह सकेंगे? शायद नहीं। स्वस्थ रहने के लिए हमें संतुलित भोजन करना चाहिए, जिसमें उर्जा देने वाले पदार्थ (कार्बोहाइड्रेड और वसा) शरीर की वृद्धि करने वाले पदार्थ (प्रोटीन) और सुरक्षा प्रदान करने वाले पदार्थ (विटामिन और खनिज लवण) संतुलित मात्रा में हो। बहुत से खाद्य पदार्थ ऐसे भी हैं जो शरीर को रोगो से बचाते है जैसे हरी सब्जियां व फल। इनमें हमें खनिज लवण एवं विटामिन्स मिलते है।

उद्देश्य

- ❖ बच्चों को विटामिन की उपयोगिता एवं उसके महत्व से परिचित कराना।
- ❖ बच्चों को विटामिन के प्रकार और उनके स्रोतो की जानकारी देना।
- ❖ विटामिन की कमी से होने वाले रोगो की जानकारी देना तथा उनको दूर करने के उपाय बताना।
- ❖ विभिन्न विटामिनों की कमी से होने वाले रोगो को लक्षणों के आधार पर पहचानने की समझ विकसित करना।

आवश्यक सामग्री – सादे कागज, चार्ट पेपर, स्केच पेन, ग्लू, पेन्सिल, रबर, कटर, पुरानी पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि।

योजना बनाना –

1. शिक्षक सम्पूर्ण कक्षा को आवश्यकतानुसार समूहों में बांटेगे।
2. प्रत्येक समूह के लिए आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पूर्व में ही करके, उसे आवश्यकतानुसार बच्चों को उपलब्ध कराया जायेगा।

3. प्रत्येक समूह से प्रस्तुतीकरण तथा कार्य को योजनानुसार करवाने के लिए टीम लीडर का चुनाव किया जायेगा।

क्रिया विधि–

समूह –1

विटामिन के प्रकारो की सूची बनाकर उनसे संबंधित फल तथा सब्जियों के चित्रों को एकत्र करेगा।

समूह –2

विटामिन 'ए' के स्रोत, उनकी कमी से होने वाले रोग एवं रोगो के लक्षणों को चार्ट पेपर पर लिखेगा तथा उससे संबंधित चित्रों को भी चार्ट पेपर पर चिपकायेगा।

समूह –3

विटामिन 'बी' के स्रोत, उनकी कमी से होने वाले रोग एवं रोगो के लक्षणों को चार्ट पेपर पर लिखेगा तथा उससे संबंधित चित्रों को भी चार्ट पेपर पर चिपकायेगा।

समूह –4

विटामिन 'सी' के स्रोत, उनकी कमी से होने वाले रोग एवं रोगो के लक्षणों को चार्ट पेपर पर लिखेगा तथा उससे संबंधित चित्रों को भी चार्ट पेपर पर चिपकायेगा।

समूह –5

विटामिन 'डी' के स्रोत, उनकी कमी से होने वाले रोग एवं रोगो के लक्षणों को चार्ट पेपर पर लिखेगा तथा उससे संबंधित चित्रों को भी चार्ट पेपर पर चिपकायेगा।

समूह –6

विभिन्न विटामिन से हमारे शरीर को होने वाले लाभ तथा इनकी कमी को दूर करने के उपायो को चार्ट पेपर पर लिखेगा तथा पूरे प्रोजेक्ट कार्य का संकलन करेगा।

मूल्यांकन–

1. बच्चें विटामिनों के स्रोत तथा उनसे होने वाले लाभ को जान सकेगे।
2. विटामिन की कमी से होने वाले रोगो को पहचान कर उसकी कमी को दूर करने के उपाय जान सकेंगे।
3. संतुलित भोजन के महत्व को समझ सकेंगे।
4. समूह में कार्य करने एवं स्व अनुशासन की भावना विकसित होगी तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न होगा।

प्रोजेक्ट कक्षा –5

विषय – सामाजिक विज्ञान

समय – 7 से 10 दिन **वादन –निर्धारित वादन में**

शीर्षक– वन व उसका महत्व

शिक्षक– सक्रिय सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

आज से लगभग 400 –500 साल पहले हमारे देश के बहुत बड़े भूभाग में जंगल थे। उन जंगलों में तरह –तरह के पशु–पक्षी, जीव–जन्तु रहते थे। जब धीरे–धीरे हमारी आवादी बढ़ने लगी, तब हमें रहने और खेती के लिए अधिक जमीन की आवश्यकता पड़ने लगी। इसी कारण हमने घने जंगलों की कटाई शुरू कर दी। इस कारण जंगल में रहने वाले कुछ जानवर खत्म हो गये और कुछ जानवरों की संख्या कम हो गयी।

आपने अपने आस–पास अनेक जनवरों को देखा होगा। कुछ जानवर पालतू होते है, जिन्हें आप अपनी आवश्यकतानुसार या शौक के लिए पालते है। कुछ जानवर जंगलों में मिलते है, जिन्हें हम नहीं पालने, ऐसे जानवरों को वन्य जीव कहते है। वर्तमान में वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किसे जा रहे है, ताकि वन्य जीव सुरक्षित रहें।

उद्देश्य

- ❖ विभिन्न प्रकार के वन तथाउसमें पाये जाने वाले पेड़–पौघों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ ये वन किन भौगोलिक क्षेत्र में पाये जाते है तथा वहां पाये जाने के कारण (जलवायु)
- ❖ मानव जीवन में वनों का महत्व।
- ❖ वनों सें पाये जाने वाले पदार्थो की सूची।
- ❖ वनों से प्राप्त होन वाले पदार्थो की उपयोगिता। (मानव, पशु–पक्षियों)
- ❖ वनों के कम होने के कारण।
- ❖ वनों के कम होने /अधिक पेड़ कटने से होने वाली हानियां।
- ❖ वनों के संरक्षण के उपाय। (हमारा प्रयास)
- ❖ वनों को बचाने के लिए योजनायें।

योजना बनाना –

1. सम्पूर्ण कक्षा को छात्रों की संख्यानुसार समूहों में बांटेगे।
2. प्रत्येक समूह को उद्देश्य के अनुसार एक शीर्षक दे दिया जायेगा जिस पर वे कार्य करेंगे।
3. प्रत्येक समूह से प्रस्तुतीकरण भी कराया जायेगा।

क्रिया विधि–

शिक्षक द्वारा शीर्षक से संबंधित जानकारी छात्र–छात्राओं को उपलब्ध करायी जायेगी ताकि उनको कार्य करने में आसानी हो।

समूह –1

(विभिन्न प्रकार के वन तथा उसमें पाये जाने वाले पेड़–पौधों की जानकारी प्राप्त करना)

1. छात्र पाठ्यपुस्तक की मदद से चारों प्रकार के वनों का नाम लिखकर उनमें पाये जाने वाले पेड़–पौधों को सूचीबद्ध करेंगे।
2. इन वनों के अन्तर को लिखेगें।
3. विभिन्न प्रकार के वनों में आपस मे पाये जाने वाली समान विशेषताओं को दो वाक्यों में लिखेंगे।
4. यदि सम्भव हो तो विभिन्न प्रकार के वनों में पायेजाने वाले पेड़–पौधों के चित्र अथवा पत्तियां को बच्चों को लाने को कहेंगे तथा चिपकवायेंगे।

समूह –2

(वनों का भौगोलिक क्षेत्र व वहां की जलवायु)

1. चारों प्रकार के वन कहा पाये जाते है, इसकी जानकारी प्राप्त कर लेखनीबद्ध करेंगे।
2. इन चारों प्रकार के वनों में किस प्रकार की जलवायु पायी जाती है इसे सूचीबद्ध करेंगे।
3. जलवायु का वृक्षों के आकार व पत्तियों पर पड़ने वाला एक प्रभाव लिखेंगे।

समूह –3

(मानव जीवन में वनों का महत्व)

समूह –4

(वनों में पाये जाने वाले पदार्थो की सूची)

1. चित्रात्मक रूप से प्रस्तुत कर सकते है।
2. उदाहरण स्वरूप पाये जाने पदार्थों को चार्ट पेपर पर चिपका सकते हैं।

समूह –5

(वनों से प्राप्त होने वाले पदार्थो की उपयोगिता)

1. मानव के लिए।
2. पशु–पक्षियों के लिए।

समूह –6

(वनों के लगातार कम होने के कारण)

समूह –7

(वनों की अधिक कटाई से पड़ने वाला प्रभाव)

1. मानव पर ।
2. पशु–पक्षियों पर ।
3. वातावरण पर।

समूह –8

(वनों को बचाने के उपाय)

1. आप क्या कर सकते है।
2. आपके माता–पिता क्या कर सकते है।
3. आपका गांव क्या कर सकता है।

समूह –9

(वनों को बचाने के लिए योजनायें– पाठ्यपुस्तक व चित्रों के माध्यम से)

1. सामाजिक वानिकी ।
2. चिपकों आन्दोलन ।
3. मेती आन्दोलन।

मूल्यांकन–

1. बच्चें वन के महत्व को बता सकेगे
2. वनों की उपयोगिता को बता सकेंगे।
3. वनों के सरंक्षरण के उपाय को व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करने के लिए स्वयं तथा दूसरों को प्रेरित कर सकेंगे।

प्रोजेक्ट कक्षा –6

विषय – सामाजिक अध्ययन (इतिहास)

समय 7 से 10 दिन **वादन – निर्धारित वादन में**

शीर्षक– जैन व बौद्ध धर्म

प्रस्तावना

वैदिक काल में समाज सामाजिक आर्थिक राजनीतिकध, धार्मिक, सांस्कृतिक रूप से उन्नत स्थिति में था। लेकिन वैदिक काल के अन्त तक तक धार्मिक क्रिया कलापों में कठोरता व खर्चीलापन आ गया, जो कि सामान्य जन के पहुंच से बाहर होने लगा। वहीं धर्म के नाम पर कुरीतियों का बोलबाल हो गया जैसे यज्ञों में पशुओं की बलि दी जाने लगी। वर्ण व्यवस्था कठोर जाति व्यवस्था का रूप ले चुकी थी। पुरोहितो के द्वारा पूरे समाज को ऊंची तथा नीची जातियों में विभाजित कर दिया गया। कुल मिलाकर समाज में पूर्णतया असंतुलन की स्थिति आ गयी थी ऐसी बदली परिस्थितियों में महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध के संदेश ने लोगों को एक नये तरीके से सोचने व जीवन जीने का रास्ता दिखाया।

महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध से संबंधित प्रसंगो को शिक्षक चित्र के माध्यम से बच्चों को बतायेगा जिसे बच्चे प्रोजेक्ट में अपनी भाषा में इंगित करेंगे।

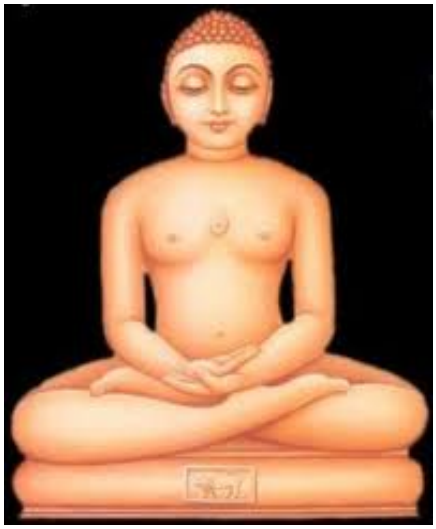

उद्देश्य

1. बच्चे महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध के जन्म से संबंधित जानकारियॉ (सन्, जन्मस्थल, माता–पिता का नाम) प्राप्त कर सकेगें।
2. महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध के बचपन के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
3. महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध के राजकुमार से सन्यासी (महापुरूष) बनने के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
4. गौतमबुद्ध के धर्म चक्र परिर्वतन को बता सकेंगें।
5. गौतमबुद्ध की शिक्षाओं के बारे में बता सकेंगे।
6. महावीर स्वामी की शिक्षाओं के बारे में बता सकेंगे।
7. महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध की शिक्षाओं में अन्तर कर सकेंगे।
8. महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध की शिक्षाओं में समानता बता सकेंगें
9. जैन व बौद्ध धर्म के सम्प्रदायों का वर्णन कर सकेंगें।
10. महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध से संबंधित स्थलों की सूची तैयार कर सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

1. शिक्षक महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध के चित्रों को उपलब्ध करायेंगे।

2. चार्ट पेपर, स्केच पेन, सादे कागज उपलब्ध कराये जायेंगे।
3. संबंधित स्थलों के चित्र. उपलब्ध करायें जायेंगें।

योजना बनाना

1. सम्पूर्ण कक्षा को छात्रों की संख्यानुसार समूहों में विभाजित कर कार्य का विभाजन किया जायेगा। प्रत्येक समूह में कुछ बच्चे महावीर स्वामी तथा कुछ बच्चे गौतमबुद्ध पर करार्य करेंगें।
2. प्रत्येक समूह को सादे कागज, ग्लू तथा संबंधित चित्र उपलब्ध कराये जायेंगे।
3. प्रस्तुतीकरण में हर समूह के सदस्य को मौका दिया जायेगा या उनका योगदान आवश्यक होगा।

क्रिया विधि–

प्रत्येक समूह को शीर्षक उपलब्ध कराया जायेगा साथ ही कुछ प्रश्न व उपशीर्षक भी दिये जायेंगें ताकि वे अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठा कर सकें और भविष्य में उनका उपयोग कर सकें।

समूह 1 – महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध के जन्म से संबंधित जानकारियां (दो बच्चे महावीर स्वामी तथा दो बच्चे गौतमबुद्ध के संबंध में) इकट्ठा करेंगे)

महावीर स्वामी–

1. महावीर स्वामी का जन्म कब और कहां हुआ?
2. उनके माता–पिता का क्या नाम था?
3. महावीर स्वामी के बचपन का क्या नाम था?
4. वर्तमान में महावीर स्वामी का जन्म स्थान किस राज्य में स्थित है?
5. महावीर स्वामी की मृत्यु कब और कहां हुई?

गौतमबुद्ध–

6. गौतमबुद्ध का जन्म कब और कहां हुआ?
7. गौतमबुद्ध के माता–पिता का क्या नाम था?
8. गौतमबुद्ध के बचपन का क्या नाम था?
9. वर्तमान में गौतमबुद्ध का जन्म स्थान किस राज्य में स्थित है?
10. गौतमबुद्ध की मृत्यु कब और कहां हुई?

समूह 2 – महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध के बचपन से संबंधित प्रसंगो का वर्णन

महावीर स्वामी–

1. महावीर स्वामी ने किस उम्र में और क्यों घर छोड़ा?
2. घर छोड़ने के बाद वे कहां गये और उन्होंने क्या किया?
3. वे क्यों महावीर कहलाये ?
4. उन्होंने अपने सिद्धान्तों को सामान्य लोगो तक पहुँचाने के लिए किस भाषा का प्रयोग किया और क्यों ?
5. महावीर स्वामी किस धर्म के संस्थापक कहलाये?

गौतमबुद्ध–

6. उन प्रसंगों का विवरण जिनसे प्रभावित होकर गौतमबुद्ध ने राज–पाठ छोडा ?
7. गौतमबुद्ध घर छोड़ने के बाद वे कहां गये और उन्होंने क्या किया?
8. वे महात्मा बुद्ध क्यों कहलाये ?
9. गौतमबुद्ध को ज्ञान कहां प्राप्त हुआ वह स्थान आज भारत के किस प्रदेश में स्थित है और किस नाम से जाना जाता है?
10. गौतमबुद्ध को ज्ञान किस पेड़ के नीचे प्राप्त हुआ?
11. गौतमबुद्ध किस धर्म के संस्थापक माने जाते हैं?

समूह 3 – गौतमबुद्ध के धर्म, चक्र, परिवर्तन का वर्णन करेगा।

1. कहां?
2. कब?
3. कैसे ..... ?

समूह 4 – महावीर स्वामी की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन करेगा।

1. जैन धर्म में तीन रत्न किसे कहा जाता है?
2. जैन धर्म के पांच महाव्रत कौन–कौन से है?

समूह 5 – गौतमबुद्ध की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन करेगा।

1. गौतमबुद्ध के चार आर्य सत्य कौन–कौन से हैं?
2. आष्टांगिक मार्ग पर चलने के नियम कौन से हैं?
2. दुखों से छुटकारा पाने का गौतमबुद्ध ने क्या रास्ता दिखाया ?
3. गौतमबुद्ध ने अपना उपदेश किस भाषा में दिया?

समूह 6 – गौतमबुद्ध तथा महावीर स्वामी की शिक्षाओं में अन्तर (ये समूह इस कार्य के लिए समूह 4 एवं 5 से सहायता ले सकता है)

समूह 7 – गौतमबुद्ध तथा महावीर स्वामी की शिक्षाओं में समानता

समूह 8 – इस समूह के सदस्यों द्वारा बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के दोनो सम्प्रदायों (हीनयान/ महायान), (श्वेताम्बर/ दिगम्बर) का वर्णन तथा उसमें अन्तर का वर्णन किया जायेगा।

समूह 9 – इस समूह के सदस्य बौद्धधर्म तथा जैनधर्म से संबंधित स्थलों की सूची तैयार करेंगे तथा प्रत्येक के बारे में कम से कम 2 वाक्य लिखेंगें।

उपयोगिता / मूल्यांकन

1. बच्चे बौद्धधर्म तथा जैनधर्म के प्रचार के कारणों का वर्णन कर सकेंगें।
2. बौद्धधर्म तथा जैनधर्म की शिक्षाओं को जान सकेंगें।
3. बौद्धधर्म तथा जैनधर्म की शिक्षाओं में समानता व अन्तर कर सकेंगें।
4. गौतमबुद्ध तथा महावीर स्वामी से संबंधित स्थलों की सूची तैयार कर उनके एतिहासिक महत्व को समझ सकेंगे तथा बता सकेंगे।
5. इस प्रोजेक्ट के माध्यम से सहभागिता, सहयोग एवं उचित अनुचित जैसे नैतिक मूल्यों का विकास होगा।
6. प्रस्तुतीकरण में प्रत्येक बच्चे द्वारा प्रतिभाग करने से हर बच्चे को कुछ बोलने का मौका मिलेगा जिससे उनमें हिचक दूर होगी तथा भाषा संबंधी त्रुटियों के निराकरण में सहायता मिलेगी।

प्रोजेक्ट कक्षा –6

विषय – सामाजिक अध्ययन (भूगोल)

समय 7 से 10 दिन वादन – समय सारिणी के अनुसार विषय के वादन में

शीर्षक– वन्य जीव एवं उनका महत्व

शिक्षक –सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना

आज से लगभग 400 –500 साल पहले हमारे देश के बहुत बड़े भूभाग में जंगल थे। उन जंगलों में तरह–तरह के पशु–पक्षी, जीव–जन्तु रहते थे। जब धीरे–धीरे हमारी आबादी बढ़ने लगी, तब हमें रहने और खेती के लिए अधिक जमीन की आवश्यकता पड़ने लगी। इसी कारण हमने घने जंगलों की कटाई शुरू कर दी। इस कारण जंगल में रहने वाले कुछ जानवर खत्म हो गये और कुछ जानवरों की संख्या कम हो गयी।

आपने अपने आस–पास अनेक जनवरों को देखा होगा। कुछ जानवर पालतू होते है, जिन्हें आप अपनी आवश्यकतानुसार या शौक के लिए पालते है। कुछ जानवर जंगलों में मिलते है, जिन्हें हम नहीं पालते, ऐसे जानवरों को वन्य जीव कहते है। वर्तमान में वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किये जा रहे है, ताकि वन्य जीव सुरक्षित रहें।

उद्देश्य वा शीर्षक का चुनाव

1. छात्र वन्य जीवों के संरक्षण के महत्व को जान सकेंगे।
2. पालतू जानवरों और वन्य जीवों में अन्तर कर सकेंगें।
3. वन्य जीवों की उपयोगिता को समझ सकेंगे।
4. देश के विभिन्न भागों में पाये जाने वाले वन्य जीवों की जानकारी हासिल कर सकेंगें।
5. वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासो की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

कुछ वन्य जीवों के चित्र, चार्ट पेपर, स्केच पेन, सादा कागज आदि।

योजना बनाना

1. **प्रथम चरण** में सम्पूर्ण कक्षा को प्रथम दिवस वन्य जीवों के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी देंगे एवं सभी बच्चों को कुछ जानवरों के चित्र बनाकर या ढूंढकर लाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

   उपरोक्त प्रक्रिया के लिए दो दिन का समय देंगे । तत्पश्चात् प्राप्त चित्रों एवं मौखिक रूप से पालतू एवं वन्य जीवों की अलग–अलग पहचान करवा कर सूचीबद्ध करेंगे।

2. **द्वितीय चरण** में सम्पूर्ण कक्षा को आवश्यकतानुसार समूहों में विभाजित करेंगे एवं समूहवार उद्देश्यों को बतायेंगे।
3. प्रत्येक समूह से चार्ट पेपर पर चित्र एवं लेखन कार्य करवाकर प्रदर्शन का मौका भी देंगे।

इस प्रकार प्रथम चरण में उपरोक्त प्रोजेक्ट व्यक्तिगत रूप से करवाकर द्वितीय चरण में समूह कार्य द्वारा सामूहिक रूप से पूर्ण करवायेंगे।

क्रिया विधि–

शिक्षक प्रत्येक छात्र द्वारा एकत्रित चित्रों एवं मौखिक रूप से बताये गये बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करके उन्हें सादे कागज पर लिखने को कहेगा। प्रत्येक छात्र को बतायेंगे कि वन्य जीव–जन्तुओं से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करें। *निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रोजेक्ट तैयार करें–*

- ❖ कौन से जानवरों को हम वन्य जीव कहते है? चित्र बनाकर या चिपकाकर प्रस्तुत करें।
- ❖ वन्य जीवों एवं पालतू जानवरों में कुछ समानताएं एवं कुछ अन्तर अगर है तो लिखिये?
- ❖ ऐसे कौन से वन्य जीव है जो हमारे लिए उपयोगी है सूची बनाकर चित्र चिपकाइये?
- ❖ उ0प्र0 में वन्य जीवों के रहने के प्रमुख स्थान कौन कौन से है? किन्हीं दो स्थानों के बारे में लिखिये?
- ❖ राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य में अन्तर बताइये?
- ❖ शाकाहारी एवं मांसाहारी जीव–जन्तुाओं के नामों की सूची बनाइये?
- ❖ वन्य प्राणी संरक्षण के भारत में कौन–कौन से प्रमुख स्थान है, ासूचीबद्ध कीजिये, जिनमें पाठ्यपुस्तक की सहायता से अभ्यारण्य की सूची अलग एवं राष्ट्रीय उद्यान की सूची बनाइये?

उपयोगिता / मूल्यांकन

1. वन्य जीवों का महत्व जान सकेंगें।
2. राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य में अन्तर समझ सकेंगें।
3. भारत में किस स्थान पर राष्ट्रीय उद्यान है एवं कहां–कहां अभ्यारण्य है जानकारी प्राप्त कर सकेंगें।
4. ऐसे कौन से जीव है, जो कम होते जा रहे है, उनके बारे में जान सकेंगे।
5. जीवों का संरक्षण क्यों जरूरी है इस बारे मे ंदूसरों को व्यवहारिक रूप से भी बता सकेंगे।

प्रोजेक्ट कक्षा –7
विषय – विज्ञान

समय 1 से 2 दिन   वादन – निर्धारित वादन में

शीर्षक– दैनिक जीवन में अम्ल, क्षार, एवं लवण का उपयोग

शिक्षक की भूमिका– सक्रिय सुगमकर्ता

प्रस्तावना

- ❖ एसेटिक अम्ल को ''सिरका'' के नाम से जानते है। यह एक अम्ल है तथा इसका घरेलू और औद्योगिक रूप मे ंप्रयोग किया जाता है।
- ❖ घेरों की पुताई में चूने का प्रयोग होता है जिसे हम कैलिशयम आक्साइड के नाम से जानते है। यह एक प्रबल क्षार है।
- ❖ दैनिक जीवन में हम भोजन में नमक का प्रयोग करते है इसका रासायनिक सूत्र NaCl है। यह न तो क्षारीय होता है और न अम्लीय, इसलिए इसे लवण कहते है।
- ❖ भोजन बनाने व डबलरोटी बनाने में हम खाने के सोडे का प्रयोग करते है तथा इसे हम सोडियम बाइकार्बोनेट ($NaHCO_3$) के नाम से जानते है।

उद्देश्य

1. छात्र अम्ल, क्षार एवं लवण को पहचान कर उनमें अंतर कर सकेंगे।
2. उनके रासानिक सूत्र और व्यापारिक नाम को जानने के साथ–साथ उनमें घरेलू एवं औद्योगिक उपयोग की जानकारी होगी।
3. अम्ल, क्षार एवं लवण के गुणों की जानकारी होगी।

आवश्यक सामग्री

सिरका चूना नमक (कॉमन साल्ट), खाने का सोडा, चार्ट पेपर, स्केच पेन।

योजना बनाना

1. शिक्षक सम्पूर्ण कक्षा को आवश्यकतानुसार समूहों में बांटेगा।
2. प्रत्येक समूह के लिए आवश्यक सामग्री की पूर्व मे व्यवस्था कर उन्हें आवश्यकतानुसार उपलब्ध करायेगा।
3. प्रत्येक समूह में प्रस्तुतीकरण तथा कार्य को योजनानुसार करवाने के लिए टीम लीडर का चुनाव किया जायेगा।

क्रिया विधि–

समूह 1 – बच्चों को एक छोटी शीशी में सिरका उपलब्ध कराकर उनसे कहा जायेगा कि वे इसका रासायनिक नाम एवं रासायनिक सूत्र एवं भौतिक गुणों को लिखकर इसके घरेलू और औद्योगिक उपयोगो को चार्ट पेपेर पर लिखे।

समूह 2 – दूसरे समूह के बच्चों को नमक उपलब्ध कराकर उनसे कहा जायेगा कि वे इसका रासायनिक नाम एवं रासायनिक सूत्र एवं भौतिक गुणों को चार्ट पेपेर पर लिखकर इसके घरेलू और औद्योगिक उपयोगो को लिखे।

समूह 3 – तीसरे समूह में खाने का सोडा थोडी मात्रा में उपलब्ध कराकर इसका रासायनिक नाम, व्यापारिक नाम एवं रासायनिक सूत्र एवं भौतिक गुणों को चार्ट पेपेर पर लिखकर इसका दैनिक जीवन में प्रयोग भी लिखे।

समूह 4 – इस समूह के बच्चों को चूना उपलब्ध कराकर इसका रासायनिक नाम, व्यापारिक नाम एवं रासायनिक सूत्र एवं भौतिक गुणों को चार्ट पेपेर पर लिखने को कहे, इसके घरेलू और औद्योगिक उपयोगो को भी लिखने को कहे।

समूह 5 – इस समूह के बच्चे सिरका, चूना, नमक (कॉमन साल्ट), एवं खाने के सोडे के अंतर को चार्ट पेपेर पर लिखने को कहे एवं पूरे प्रोजेक्ट कार्य के संकलन करने को कहे।

उपयोगिता / मूल्यांकन

1. बच्चे दैनिक जीवन में अम्ल, क्षार एवं लवण के उपयोग को जान सकेंगें।
2. अम्ल, क्षार एवं लवण को पहचान कर उसमें अन्तर समझ सकेंगें।
3. छात्र अम्ल, क्षार एवं लवण के गुणों से परिचित होंगे।
4. उनके निरीक्षण, प्रेक्षण एवं अवलोकन की क्षमता का तो विकास होगा ही साथ ही साथ स्वनुशासन एवं समूह में कार्य करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होगी।

प्रोजेक्ट कक्षा –7
विषय – अंग्रेजी

समय 2 दिन | वादन – निर्धारित वादन में

शीर्षक– How good is your alphabet

शिक्षक की भूमिका– सक्रिय सुगमकर्ता

प्रस्तावना–

Dictionary का प्रयोग भाषा सीखने का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्रत्येक विद्यार्थी को कभी न कभी Dictionary देखनी ही पड़ती है। कभी अर्थ जानने के लिए कभी शब्द का उच्चारण जानने के लिए तो कभी spelling जानने के लिए। अतः प्रत्येक बच्चे को Dictionary में शब्द खोजना सीखना आवश्यक है। इसके लिए कुछ बातों को ध्यान रखना आवश्यक है।

- ❖ अंग्रेजी वर्णमाला
- ❖ अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों का क्रम
- ❖ Dictionary में प्रत्येक पृष्ठ के ऊपरी कोने में अंकित guide word की भूमिका एवं महत्व

बच्चों में Dictionary देखने की आदत डालना इसलिए जरूरी है कि Dictionary न केवल शब्द भण्ड़ार की वृद्धि में सहायक सिद्ध होती है, बल्कि शब्दों का प्रयोग, उनकी spelling भी बताती है। शब्द की उत्पत्ति के विषय में भी जानकारी हमें Dictionary से प्राप्त हो सकती है।

उद्देश्य

1. छात्र में Dictionary में शब्द खोजने का सामर्थ्य विकसित करना।
2. उन्हें शब्दों का अर्थ स्वयं ढूढंने में प्रोत्साहित करना।
3. स्वयं खोजने पर मिलने वाली संतुष्टि को माध्यम बनाकर उन्हें अपने शब्द भण्डार में वृद्धि करने, अपनी spelling सुधारने व अपनी भाषा को सुधारने का अवसर देना।

आवश्यक सामग्री

कुछ सादा पेपर, Dictionary, पेन्सिल आदि

योजना बनाना

1. सर्व प्रथम कक्षा को समूहों में बांट कर प्रत्येक समूह के लिए अलग–अलग कार्य निर्धारित किया जायेगा।
2. कार्य का निर्धारण इस प्रकार का होगा कि उसे पूरा करने के लिए छात्र Dictionary की सहायता लें।
3. इसके लिए शिक्षक छात्रों को Dictionary में शब्द खोजने के लिए आधारभूत नियमों से परिचित करायेंगें।

क्रिया विधि–

1. सर्व प्रथम पूरी कक्षा को एकसाथ सम्बोधित करते हुए शिक्षक प्रोजेक्ट के विषय में जानकारी देंगे। साथ ही Dictionary के महत्व तथा Dictionary देखने के तरीके से परिचित करायेंगे। इसी समय शिक्षक शब्द खोजने के लिए आवश्यक English alphabet के क्रम की भी पुनरावृत्ति करते हुए इस बात पर बल देंगे कि शब्द खोजने के लिए सही क्रम याद रखना अत्यन्त ही आवश्यक है।
2. समूहवार कक्षा का विभाजन करेंगे (समूहवार उन्हें अलग–अलग कार्य भी दे सकते है)
3. कुछ समूहों को पहले से तैयार शब्दों की एक लिस्ट दी जायेगी जिसमें लिखे गये शब्दों को उसी क्रम में ऊपर से नीचे की ओर लिखना होगा जिस क्रम में वे (प्रारम्भ से अन्तिम) Dictionary में छपे है।
   (a) cane, mane, lane, sane, vane---------
   (b) fly, cry, dry, sky, try ----------
   (c) man, can, pan, ban, ran, fan ----------
4. कुछ समूहों को इस प्रकार के कार्य दिये जा सकते है –

   M अक्षर से प्रारम्भ होने वाले पांच–छः शब्दों की एक सूची बनाओं प्रत्येक शब्द में कम से कम 4 अक्षर होने चाहिए।
5. इन शब्दों की spelling गलत है Dictionary से देखकर सही spelling शब्दों के सामने लिखिये–
   (i) happi
   (ii) hors
   (iii) scootar
   (iv) mobill
   (v) Janvari
   (vi) Unkle
   (vii) footbal
6. बच्चों की पाठ्य पुस्तक से कुछ शब्दों का अर्थ ढूंढने का काम भी दिया जा सकता है।

क्रियान्वयन

1. शिक्षक प्रत्येक समूह को उनकी कार्यक्षमता के आधार पर कार्य आवंटित करेंगें। काम कक्षा में कराया जाये या उसे अभ्यास के रूप में दिया जाये इसका निर्णय शिक्षक / शिक्षार्थी करेंगे।
2. बच्चों द्वारा किये गये कार्य का अवलोकन शिक्षक करेंगे और आवश्यकता पड़ने पर अपने सुझाव व सहायता देंगे।
3. यदि आवश्यकता लगती है तो समयावधि बढ़ा कर कार्य का विस्तार भी करेंगे जेसे– समूहवार दिये गये कार्य की अदला–बदली की जा सकती है या एक समूह को दूसरे समूह के कार्य की जांच करने का उत्तरदायित्व भी सौंपा जा सकता है।

उपयोगिता / मूल्यांकन

1. प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए Dictionary का प्रयोग जानना महत्वपूर्ण एवं लाभकारी है। Dictionary केवल अर्थ ही नहीं शब्दों के विषय में अन्य बहुत सारी जानकारियां भी देती है इस तथ्य से भी छात्र को अवगत होना चाहिए।
2. Dictionary का प्रयोग करना जान लेने के बाद वे स्वयं ही शब्दों के विषय में अन्य जानकारियां प्राप्त करने के लिए प्रेरित होंगे।
3. Dictionary के माध्यम से वे अपने pronunciation को भी सुधार सकते है।

प्रोजेक्ट प्रारूप

कक्षा– 7

विषय– सामाजिक अध्ययन **वादन– निर्धारित वादन में**
शीर्षक– अकबर का युग (1556–1605 ई0)
समय सीमा– 7 से 10 दिन
शिक्षक की भूमिका– सक्रिय सुगमकर्ता के रूप में

प्रस्तावना– अपने पिता (हुमायूँ) की मृत्यु के समय अकबर मात्र 13 वर्ष का था। तेरह वर्ष की आयु में ही अकबर का राज्याभिषेक बैरम खॉ ने कराया, जो उनके पिता के विश्वास पात्र थे, और अकबर के संरक्षक भी थे, राजकाज के संचालन में अकबर की अल्पायु होने के कारण अकबर अपने संरक्षक बैरम खॉ की देखरेख में राज काज करने लगा।

उद्देश्य–

1. अकबर की शासन व्यवस्था की जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
2. अकबर काल के प्रशासनिक ढॉचे का महत्व जान सकेगें।
3. साम्राज्य में पदाधिकारियों के कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
4. अकबर काल के साहित्य एवं साहित्यकारों के बारे में विस्तार से जान सकेंगे।
5. अकबर कालीन इमारतों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेगें।

आवश्यक सामग्री– अकबरकालीन इमारतों, के चित्र, चार्ट पेपर, स्केच, सादा कागज आदि।

योजना बनाना–

1. संपूर्ण कक्षा को आवश्यकतानुसार समूहों में बॉट दिया जायेगा।
2. प्रत्येक समूह को उद्देश्यानुसार एवं रूचि के अनुसार शीर्षक दिया जाएगा, जिस पर संपूर्ण समूह जानकारी एवं चित्र संकलन करेगा।
3. अकबर कालीन शासन व्यवस्था एवं वर्तमान शासन व्यवस्था में अंतर करवाया जाएगा।

क्रिया विधि– शिक्षक संपूर्ण योजना पर कक्षा में विस्तार से चर्चा करके छात्रों की रूचि को ध्यान में रखकर समूह बनाएगें।

(1) **समूह–1–** अकबर की शासन व्यवस्था।

1. छात्र पाठ्यपुस्तक एवं अन्य स्रोतों से जानकारी प्राप्त करके अकबर की मनसबदारी व्यवस्था के बारे में विस्तार से लिखेंगे।
2. वर्तमान शासन व्यवस्था से यह व्यवस्था क्यों अलग थी, पॉच वाक्यों में लिखेंगे।
3. वर्तमान शासन व्यवस्था में उस समय की व्यवस्था से क्या समानताएँ थी, इनको भी लिखेगे।

(2) **समूह–2–** अकबर काल का प्रशासनिक ढॉचा

1. इसमें छात्र पाठ्यपुस्तक की सहायता से केन्द्र का प्रशासन, प्रान्त का प्रशासन, परगना का प्रशासन एवं गॉव का प्रशासन कौन देखता था, चार्ट पेपर पर लिखगें।
2. पदाधिकारियों के कार्यों को समझकर चार्ट पेपर पर लिखगें।

(3) **समूह–3–** अकबर काल में शक्तियों का बॅटवारा।

1. वर्तमान में केन्द्र राज्य व गॉवों के मुख्य कार्यों में अंतर करके पॉच वाक्य बनाएगें।
2. आज के प्रशासन में और अकबर के प्रशासन काल में मुख्य अंतर भी लिखगें।

(4) **समूह–4**– साहित्य एवं साहित्यकार

1. अकबर काल में लिखी गई साहित्यिक रचनाओं की सूची बनाकर उनके लेखकों का नाम भी लिखगें।
2. उस समय किन–किन रचनाओं का अनुवाद किया गया, उसकी सूची बनाएगें।
3. अकबर के नवरत्नों के नाम व उनकी प्रमुख विशेषता को लेखनीबद्ध करेगें।

(5) **समूह–5–** अकबरकालीन वास्तुकला

1. अकबर ने किन–किन स्थानों पर ईमारतें बनवाई उन इमारतों का नाम व स्थान की सूची बनाएगें।
2. अपने आसपास की प्रसिद्ध इमारतों की सूची बनाएगें।
3. अपने आसपास की किसी प्रसिद्ध इमारत के बारे में जानकारी एकत्रित करके लेखनीबद्ध करेगें।

मूल्याकन एवं उपयोगिता–

1. छात्र अकबर की शासन व्यवस्था को आसानी से समझ सकेगें।
2. वर्तमान व्यवस्था की कमियॉ जान कर उनको दूर करने के उपाय सोच सकेगें।
3. ऐतिहासिक स्थलों के महत्व को जान सकेगें।
4. अपने आस–पास की महत्वपूर्ण ईमारतों के संरक्षण के बारे में जागरूक हो सकेगें।
5. भावनात्मक रूप से सौन्दर्यकला, साहित्यकला एवं निर्माणकला के महत्व को जान सकेगें।

प्रोजेक्ट कक्षा–7

प्रोजेक्ट शीर्षक **वादन –निर्धारित वादन में**

सर्वसमिका $(a + b)^2 = a^2 + 2ab+b^2$ का सत्यापन व क्षेत्रीय निरूपण

प्रोजेक्ट कर्ता– .....

प्राजेक्ट निर्देशकः–

प्रस्तावनाः– गणितीय कथनों को चर अथवा अचर सख्याओं की सहायत से गणितीय रूप में व्यक्त किया जा सकता है। गणितीय कथनों को गणितीय रूप में व्यक्त किया जाना 'समीकरण' कहलाता है। समीकरणों को गुणों के आधार पर रेखीय समीकरण, वर्ग समीकरण, युगपत समीकरण आदि के रूप में प्रदर्शित करते है।

कोई समीकरण चर के किसी विशेष मान अथवा विशेष मानो द्वारा ही संतुष्ट किया जा सकता है। अर्थात किसी समीकरण में दायॉ व बायॉ पक्ष चर के किसी विशेष मान/मानों के लिए ही बराबर होता है।

उदाहरण– कथनः किसी संख्या में 8 जोड़ देने पर योगफल 12 प्राप्त होता है।

समीकरण– $x + 8 = 12$

$x = 12 – 8 = 4$

समीकरण में चर का मान $x = 4$ रखने पर ही दायॉ व बायॉ पक्ष बराबर होता है। अतः x का एक ही मान 4 प्राप्त होता है।

सर्वसमिका समीकरण का ही एक रूप होता है। सर्वसमिका चर अथवा चरों के कोई भी मान प्रतिस्थापित करने पर संतुष्ट हो जाता है।

अर्थात सर्वसमिका में चर/चरों का कोई भी मान रख दें तो दायॉ पक्ष व बायॉ पक्ष के बराबर हो जाता है।

जैसे– $2x = x+x$ एक सर्वसमिका है।

सर्वसमिका $2x = x+x$ में x का मान 1, 2, 3, 4 .....

$x = 1$रखने पर $2x = x+x$

$2x\ 1 = 1+1$

$2 = 2$ (दोनों पक्ष बराबर)

$x = 2$रखने पर $2x = x+x$

$2x\ 2 = 2+2$

$4 = 4$ (दोनों पक्ष बराबर)

$x = 3$रखने पर $2x = x+x$

$2x\ 3 = 3+3$

$6 = 6$ (दोनों पक्ष बराबर)

इस प्रकार हम देखते है सर्वसमिका किसी भी मान के लिये संतुष्ट होती है।

चार संख्याओं का निरूपणः–

एक घात वाले चर का ज्यामितीय प्रदर्शनः– किसी चर संख्या का मान वास्तविक संख्या होती है। अतः किसी भी चर के मान को संख्या रेखा पर प्रदर्शित किया जा सकता है। अतः चर संख्या को एक रेखाखण्ड के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

जैसे माना $x = 3$

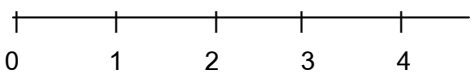

संख्या रेखा पर

$x = 3$ का संख्या रेखा पर प्रदर्शन

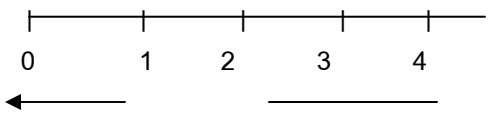

संख्या रेखा पर

$x = 3$

अतः x = रेखा खण्ड AB

$x = A$ 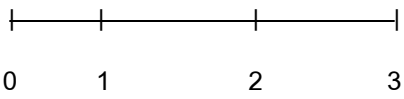 **B**

रेखाखण्डों AB चर x को प्रदर्शित करती है।

द्विघात वाले चर का ज्यामितिय प्रदर्शन– किसी द्विघातीय चर को क्षेत्रफल द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

उदाहरण हेतु x^2 को एक वर्ग के रूप में व्यक्त कर सकते है, जिसकी भुजा का मान x के बराबर है।

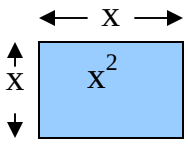

अतः $x^2 =$

इसी प्रकार चर xy एक द्विघातीय पद है। अतः इसे एक आयत के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। जिसकी भुजाओं का मान x तथा y है।

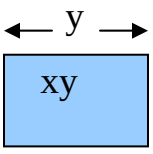

अतः xy =

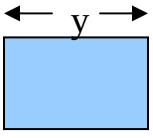

या xy =

(i) <u>सर्वसमिका $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$ का गणितीय सत्यापन</u>

गणितीय रूप में $(a+b)^2 = (a+b)\ (a+b)$ होता है।

अतः (a+b)का (a+b) से गुणा करने पर

$$
\begin{array}{r}
a+b \\
\underline{x\quad a+b)} \\
a^2+2ab \\
\underline{ab+b^2} \\
\underline{a^2+2ab+b^2}
\end{array}
$$

(ii) <u>सर्वसमिका $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$ का ज्यामीतिय निरूपण व सत्यापन</u>

आवश्यक सामग्रीः— चार्ट, पटरी, पेन्सिल।

निर्माणः— चार्ट पेपर पर (a+b) को प्रदर्शित करने हेतु चर a=5 सेमी, चर a=8 सेमी मानकर (a+b) को सरल रेखाखण्ड के रूप में निरूपित किया।

a+b= A ← a → B ← b → C

जहॉ रेखा खण्ड AB= a

व BC रेखा खण्ड= b

$(a+b)^2$ को प्रदर्शित करने हेतु (a+b) माप भुजा के बराबर एक वर्ग की ACFE का निर्माण किया।

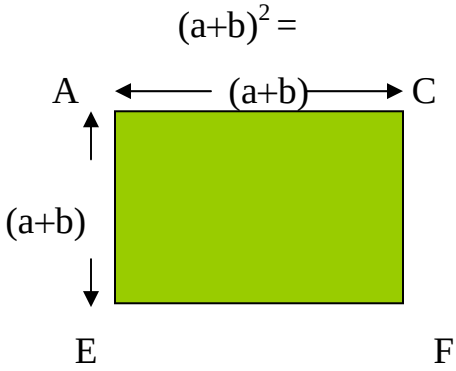

बिन्दु B से रेखाखण्ड AE के समांतर व बिन्दु D से रेखाखण्ड AC के समान्तर रेखाखण्डों को खींचने पर वर्ग चार भागों में बट जाता है।

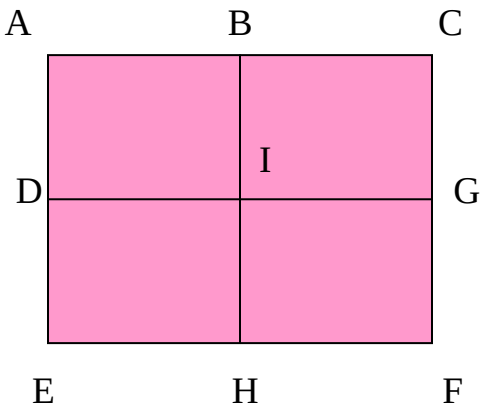

इस प्रकार ABDI तथा IGFH दो वर्ग एवं BICG तथा DIEH दो आयतों का निर्माण होता है।

वर्ग ABDI का क्षेत्रफल = axa= a^2 होगा

वर्ग IHFG का क्षेत्रफल = bxb= b^2 होगा

आयत BICG का क्षेत्रफल = axb= ab होगा

आयत DIEH का क्षेत्रफल = axb= ab होगा

अतः चारों चतुर्भुजों का क्षेत्रफल, कुल वर्ग के क्षेत्रफल के बराबर होगा

अतः $(a+b)^2 = a^2+ab+ab+b^2$

$(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$

इस प्रकार $a^2+2ab+b^2$ का क्षेत्रफल $=(a+b)^2$ का क्षेत्रफल

a= 5 तथा b= 8 के मान के आधार पर सर्वसमिका का सत्यापन–

$(a+b)^2 = (5+8)^2$

$= (13)^2 = 169$ सेमी^{2}

वर्ग ABDI का क्षेत्रफल $= 5^2 = 25$ सेमी^{2}

वर्ग IHFG का क्षेत्रफल $= 8^2 = 64$ सेमी^{2}

आयत BCGI का क्षेत्रफल $= 5x8 = 40$ सेमी^{2}

आयत DIHE का क्षेत्रफल $= 5x8 = 40$ सेमी^{2}

कुल क्षेत्रफल $= 169$ सेमी^{2}

अतः $(a+b)^2 = 169$ सेमी^{2}

व $a^2+2ab+b^2 = 169$ सेमी^{2}

अतः $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$

निष्कर्षः– इस प्रकार सर्वसमिका $a^2+2ab+b^2$ को बीजगणितीय गुणा तथा क्षेत्रफल ज्यामितीय निरूपण की सहायता से सत्यापित होता है।

प्रोजेक्ट कक्षा–6
विषय –गणित

शीर्षक : वृत्त खण्ड़ तथा त्रिज्य खण्ड़ के गुण
प्रोजेक्ट कर्ता **वादन – निर्धारित वादन में**
स्थान पू0मा0 वि0.....
प्रोजेक्ट निर्देशक .....

प्रस्तावना– वृत्त एक विशेष आकृति होती है। जिसका प्रत्येक बिन्दु निश्चित बिन्दु से समान दूरी पर स्थित होता है। समुच्चय के आधार पर वृत्त को निम्न प्रकार से परिभाषित करते हैं।

'' वृत्त उन बिन्दुओं का समुच्चय है जिनकी दूरी एक निश्चित बिन्दु से समान होती है।''

वृत्त परिचय

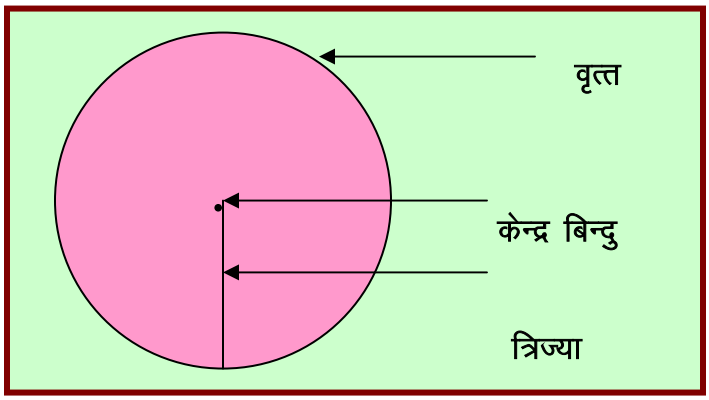

1. **वृत्त का केन्द्र बिन्दु**

   वृत्त के सभी बिन्दु एक निश्चित बिन्दु से सामान दूरी पर होते हैं यह बिन्दु वृत्त के बीचो बीच स्थित होता है। इसे वृत्त का केन्द्र बिन्दु अथवा केन्द्र कहा जाता है।

2. **परिधि**

   केन्द्र से समान दूरी पर स्थित बिन्दुओं को मिलाने से प्रापत वक्राकार आकृति 'परिधि' कहलाती है।

3. **त्रिज्या**

   केन्द्र से परिधि पर स्थिति किसी बिन्दु की दूरी वृत्त की त्रिज्या कहलाती है।

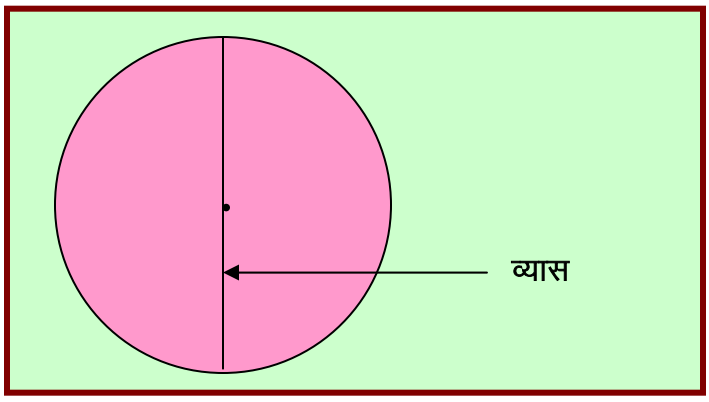

4. **चाप**

वृत्त की परिधि पर स्थित किन्हीं दो बिन्दुओं के मध्य वक्राकार आकृति वृत्त की चाप कहलाती है।

5. **जीवा**

वृत्त की परिधि पर स्थित किन्हीं दो बिन्दुओं को मिलाने से प्राप्त रेखाखण्ड जीवा कहलाती है।

6. **व्यास**

वृत्त की परिधि पर स्थित किन्हीं दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा जो केन्द्र से होकर जाती है। वृत्त का व्यास कहलाती है। वृत्त का व्यास, वृत्त में पाई जाने वाली सबसे बडी ''जीवा'' होती है।

वृत्त खण्ड–

किसी वृत्त की जीवा व व्यास (वृत्त में स्थित सबसे बडी जीवा) द्वारा वृत्त दो खण्ड़ों में विभाजित हो जाता है। व्यास द्वारा वृत्त बराबर दो वृत्त खण्ड़ों में विभाजित होता है तथा जीवा द्वारा प्राप्त वृत्त खण्ड़ों में एक लघु वृत्त खण्ड व दूसरा दीर्ध वृत्त खण्ड़ प्राप्त होता है।

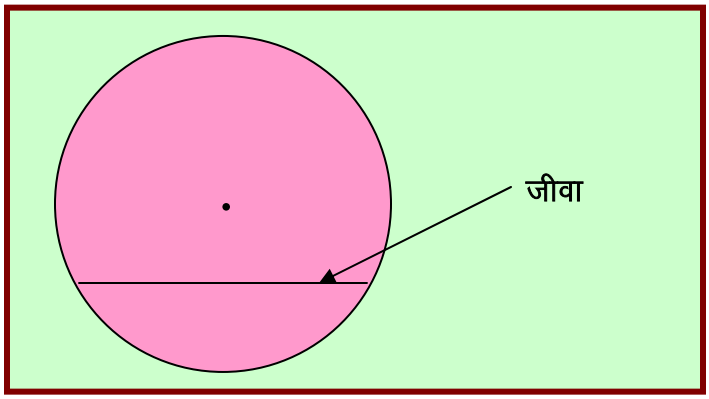

त्रिज्य खण्ड–

वृत्त में किन्हीं दो त्रिज्याओं तथा उसकी चाप द्वारा धिरी आकृति त्रिज्य खण्ड़ कहलाती है। किसी भी वृत्त में दो त्रिज्याओं द्वारा दो त्रिज्य खण्ड़ निर्मित होते है। दो त्रिज्याओं के मध्य केन्द्र पर बना कोण त्रिज्यखण्ड का कोण कहलाता है।

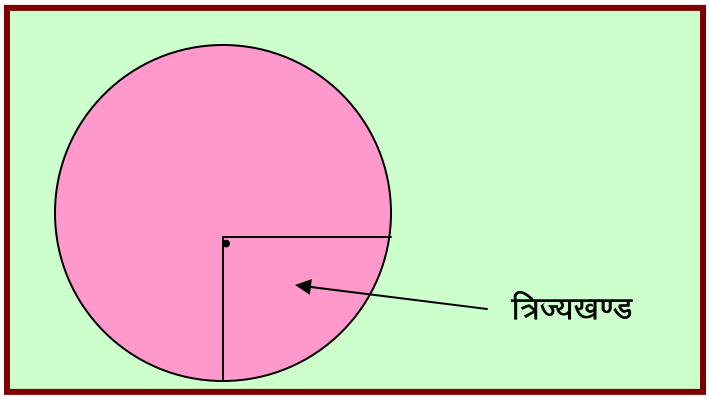

प्रोजेक्ट माडल का निर्माण (वृत्ताकार जियो बोर्ड)

आवश्यक सामग्री– 15X15 सेमी0का वर्गाकार हार्डबोर्ड, लगभग 40 कोका कील, हथौडी, लगभग 10 बड़ी रबर बैंड, पटरी, पेन्सिल।

निर्माण विधि– वर्गाकार हार्ड बोर्ड पर 5 सेमी^{2} त्रिज्या का वृत्त परकार की सहायता से बनाया। वृत्त के केन्द्र बिन्दु को चिन्हांकित किया तथा परिधि पर पटरी की सहायता से एक–एक सेमी0 पर चिन्ह लगाये। केन्द्र बिन्दु तथा परिधि पर लगे समस्त चिन्हों पर हथौडी की सहायता से कीलों को उर्धावधर दिशा में सावधानी से लगाया।

वृत्त खण्डों के गुणों का प्रदर्शन–

दीर्ध वृत्त खण्ड में बने कोण न्यून कोण तथा लधुवृत्त खण्ड में बने कोण अधिक कोण होते है।

परिधि पर दो कीलों के मध्य रबर बैन्ड जीवा के रूप में लग कर वृत्त के दो खण्ड प्राप्त किये। जवा से अन्य कई रबर लगाकर दीर्ध वृत्त खण्ड में कई कोणो का निर्माण किया। प्रत्येक कोण को चॉदे की सहायता से मापने पर प्रत्येक कोण 90^0 से कम प्राप्त होता है अतः दीर्धवपृत्त में बने कोण न्यून कोण होते है।

पुनः सभी रबर बैन्ड जीवा के दूसरी दिशा (लधुवृत्त खण्ड) की परिधि पर लगाने से लधुवृत्त खण्ड के कोणों का निर्माण होता है। प्रत्येक कोण को चांदे की सहायता से नापने पर प्रत्येक कोण 90^0 से अधिक आता है। अतः लधु वृत्त खण्ड में बने कोण सदैव अधिककोण होते हैं।

सबसे बड़ी जीवा (व्यास) को रबर बैंड की सहायता से बनाकर प्राप्त दोनों बराबर वृत्त खण्ड में कई रबर बैंड की सहायता से कोणों का निर्माण किया तथा प्रत्येक कोण को चापें द्वारा मापा गया। प्रत्येक कोण 90^0 का प्राप्त होता ह। अतः अर्धवृत्त में बना कोण 90^0 होता है।

त्रिज्य खझड़

बोर्ड पर परिधि पर लगी किन्हीं दो बिन्दुओं के बीच रबर बैन्ड का फंसा कर केन्द्र की कील में फंसाया दिया। प्राप्त आकृति लघु त्रिज्य खण्ड होगी। इस त्रिज्य खण्ड के मध्य दिखायी दे रही कीलों को गिना उसी संख्या के बराबर कीलें गिन कर उनके मध्य दूसरा रबर बैन्ड फंसा कर दूसरा त्रिज्य खण्ड बनाया। इस प्रकार बराबर चापों के दो त्रिज्य खण्ड निर्मित हो गये। दोनो त्रिज्य खण्ड़ों के कोणो को चांदे की सहायता से नापने पर दोनो कोण बराबर प्राप्त हुये।

इस प्रकार विभिन्न बराबर चाप वाले त्रिज्य खण्डों का निर्माण किया तथा त्रिज्य खण्ड़ों द्वारा बने कोण नापने पर सदैव बराबर प्राप्त हुये।

अतः समान चापों द्वारा केन्द्र पर समान कोण अन्तरित होते हैं।

Project class -8
Subject - English

Duration 3-4 days
Topic- Birds

Introduction- Children are familiar with different types of birds commonly found in their immediate surroundings. Birds of different colours often attract the attention of students. Taking advantage of these facts the teacher can give a project to students which will them frame short sentences on birds in English and they will also learn about their physical characteristics, food habits and habitat.

Objectives-

1- To help students learn names of commonly found birds in English, along with correct spellings.
2- To help students frame short sentences on birds in English using relevant adjectives.
3- To help students learn about their physical characteristics, food habits and habitat of birds.

Material required – chart paper, pictures of commonly found birds, glue & sketch pens etc.

Note- If pictures are not available, children may be ask to draw and colour pictures of birds. They can also be asked to collect and stick feathers of birds in their project.

Planning – The teacher will select the names of commonly found birds eg. crow, parrot, pigeon, peacock, hen/ cock. The teacher will divide the students into groups and allot name of a bird on which the students have to develop the project.

The teacher can use lottery system for allotment of topic. The students will also give a presentation of the project.

Action Plan – The teacher will ask the student to develop a short project on the given topic (name of a bird) based on the following points-

1- Name of the bird in English
2- Its colours
3- What it eats
4- Where it is found
5- Type of beak/ feathers (depending on the specialty of the birds)
6- Any other special characteristics

Note- The teacher will provide relevant new birds to help children when ever needed. eg. sharp, small, curved, pointed, large, colourful etc.

Group -1 – Crow
Group -2 – Parrot
Group -3 – Pigeon
Group -4 – Peacock
Group -5 – Cock / Hen

Utility of the project –

1- The students will learn about the characteristics of commonly found birds.
2- The students will learn about new words / adjectives when they develop the project.
3- The students will be able to frame short sentences on birds in English using relevant adjectives.

केस स्टडी विधि

शिक्षा तकनीकि के आर्विभाव तथा विकास के साथ शिक्षा की प्रक्रिया में अनेक परिवर्तन हुए तथा नये आयामों का विकास हुआ। पिछले 25 वर्षो के अन्तराल में कक्षा शिक्षा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है। छात्रों की उपलब्धियों में स्थान, कक्षा–शिक्षण के स्वरूप, प्रक्रिया, अनुदेशन प्रक्रिया को प्राथमिकता दी गयी है क्योंकि छात्रों की उपलब्धियों इन्हीं पर आश्रित होती है। शिक्षक छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता को शिक्षण में महत्व देते है। व्यक्तिगत भिन्नता को जानते हुए व्यक्तिगत अध्ययन की आवश्यकता होती है।

बालक की भिन्नताओं के होते हुए भी प्रकृति तथा स्वभाव संबंधी सामान्य विशेषताए होती है। बालक के द्वारा अनुभव किये जाने योग्य अमूर्त वस्तुओं के अध्ययन के लिए कतिपय प्रविधियां विकसित की गयी है। इनमें से केस स्टडी प्रमुख है।

आइए जाने केस स्टडी क्या है–

केस स्टडी विधि का सर्व प्रथम प्रयोग फ्रेड्रिक ली प्ले (Frederic Le Play) ने सन् 1829 में सामाजिक विज्ञान में किया। वहीं 1967 में बारने ग्लेज़र (Barney Glaser & Anselm Strauss) एवं एन्सेलम स्ट्रॉस जैसे समाजशास्त्रियों ने पुनः इसको परिष्कृत रूप में सामाजिक विज्ञान में नवीन सिद्धान्त के रूप में प्रयुक्त किया।

वर्तमान में केस स्टडी का सर्वाधिक प्रयोग शिक्षा जगत में किया जा रहा है। आज इसे हम प्राब्लम बेस्ड लर्निंग (problem based learning) के रूप में ज्यादा जानते है।

केस स्टडी से तात्पर्य है किसी भी वस्तु, स्थिति का भलीभांति बारीकी से जांच पड़ताल करना व जानना। इसका बुनियादी आधार विद्यार्थी की जिज्ञासु प्रवृत्ति को माना जाता है। दूसरे शब्दों में मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति का परिणाम है और केस स्टडी किसी ज्ञान, अनुभव को पाने का साधन है। इस विधि में विद्यार्थी की स्वयं समाधान ढूंढने में सक्रिय भूमिका रहती है , जबकि अध्यापक की भूमिका विद्यार्थियों को समस्या से भलीभांति परिचित कराना है।

व्यक्तिगत अध्ययन (केस स्टडी) विषय विशेष (जैसे बालक समूह या घटना) के गुण दोष एवं असामान्यताओं का विश्लेषण है।

व्यक्तिगत अध्ययन अपने में एक पहेली (समस्या) होती है जिसे हल किया जा सकता है। इस पहेली में ब हुत सी सूचनायें समाहित रहती है। इन सूचनाओं का विशलेषण कर हल निकाला जा सकता है। केस स्टडी की विषय वस्तु व्यक्ति, स्थान या सत्य घटना पर आधारित होती है।

यह किसी एक इकाई का सम्पूर्ण विश्लेषण होता है। यंग के अनुसार '' केस स्टडी किसी इकाई के जीवन का गवेषणा तथा विश्लेषण की पद्धति है चाहें वह एक व्यक्ति, परिवार, संस्था हस्पताल, सांस्कृतिक समूह या सम्पूर्ण समुदाय हो।''

अर्थात केस स्टडी, गुणात्मक विश्लेषण का एक रूप है जिसमें किसी व्यक्ति, परिस्थिति या संस्था का बहुत सावधानी तथा पूर्णता के साथ अवलोकन किया जाता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का उत्तर दायित्व बढ़ गया है और उसकी स्वतंत्रता कम कर दी गयी है। शिक्षक की भूमिका ''छात्रों के अधिगम'' के लिए एक व्यवस्थापक की होती है। शिक्षक एक सलाहकार एवं मार्गदर्शक के रूप में होता है। शिक्षक को अपनी कक्षा में समस्यात्मक बालकों से रूबरू होना पड़ता है। ऐसे बालकों के सुधार के लिए शिक्षक को हमेशा तत्पर रहना चाहिए। इसके लिए शिक्षक 'समस्यात्मक बालक' के सुधार के लिए उसके पूर्व इतिहास को स्वयं उसके परिवार से, उसके मित्रों से पूछताछ करके तथ्यों का संकलन करता है। इस अध्ययन द्वारा वह उन कारणों को खोजता है। जिसके फलस्वरूप उसका आचरण व व्यवहार असमान्य होता है। प्राप्त कारणों के आधार पर शिक्षक समस्यात्मक बालक का उपचार करता है। इस प्रकार शिक्षक बालक के 'समायोजित व्यक्तित्व' के निर्माण में सहायता करता है।

केस स्टडी के लिए सबसे प्रबल तर्क यह है कि किसी भी केस का अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक कि हम उसके विभिन्न पहलुओं की उसमें होने वाली अन्तर्क्रियाओं का अध्ययन न करें।

शिक्षण– अधिगम में केस स्टडी

कक्षा शिक्षण में प्रत्येक छात्र अपनी क्षमताओं के अनुसार सीखता है जबकि कक्षा का आकार बड़ा होता है। केस स्टडी उन विषयों के लिए अधिक उपयोगी होती है जिनकी पाठ्यवस्तु का स्वरूप सुनिश्चित होता है तथा भली प्रकार उन्हें परिभाषित किया जा सकता है। इस विधि के द्वारा विद्यार्थियों को जीवन में आने वाली विभिन्न परिस्थितियों से सामना करने के लिए तैयार किया जाता है इसमें छात्र के सम्मुख जीवन या विषय वस्तु से संबंधित घटना प्रस्तुत की जाती है और उससे विभिन्न प्रश्न पूछे जाते है। छात्र के द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तर के आधार पर अन्य विद्यार्थी उस छात्र से वाद–विवाद भी करते है। केस स्टडी विधि स्वयं करके समस्या को हल करने की सर्वोत्तम विधि है।

शिक्षक जहां व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण कार्य कर विद्यार्थी को ज्ञानार्जन कराता है वहीं केस स्टडी विधि के द्वारा छात्र को सीखने के अवसर प्राप्त होते है जो अधिगम प्रक्रिया मेंसहायक होते है। सक्रिय अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी केवल व्याख्यान को सुनता ही नहीं है बल्कि वह तार्किक चिन्तन के साथ–साथ समस्या समाधान को खोजने व लिखने और समुदाय से बातचीत करने का कौशल विकसित करता है।

ब्रेन स्टॉरमिंग– केस स्टडी से छात्रों की ब्रेन स्टॉरमिंग करने में बहुत सहायता मिलती है। इसमें छात्रों को समस्या दे दी जाती है और उनसे कहा जाता है कि वे समस्या पर वाद–विवाद करें और जो विचार उनके मस्तिष्क में आये उनको प्रस्तुत करने का प्रयास करें। यह आवश्यक नहीं है कि उनके सभी विचार सार्थक ही हो। छात्रों के समूह को इस प्रकार समूह को प्रोत्साहित किया जाता है कि समूह समस्या का विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन करें।

केस स्टडी एवं एन0सी0एफ0 2005–

गुणवत्तापरक शिक्षा और शैक्षिक उद्देश्यों को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के प्रथम अध्याय ''परिप्रेक्ष्य'' में बच्चों को क्या पढ़ा जाये और कैसे पढ़ाया जाये'' की कसौटी पर विस्तार रूप से विचार करते हुए पाठ्यचर्या के निम्न पांच निर्देशक सिद्धान्तों को प्रस्ताव रखा गया है–

1. ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।
2. पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना।
3. पाठ्यचर्या का इस प्रकार संवर्द्धन कि वह बच्चों को चहुमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाये बजाय इसके कि पाठ्यपुस्तक केन्द्रित बनकर रह जाये।
4. परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।
5. एक ऐसी पहचान का विकास, जिसमें प्रजातांन्त्रिक राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिन्ताएं समाहित हो।

एन0सी0एफ 2005 के पांच मुख्य मार्गदर्शी सिद्धान्त केस स्टडी में समाहित है। इससे छात्रों को सीखने के अवसर प्राप्त होते है, छात्र करके सीखते है। अतः रटन्त प्रणाली से मुक्त होते है। शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। इससे छात्रों में सृजनात्मकता, चिन्तन, अभिव्यक्ति क्षमता एवं तर्कशक्ति का विकास होता है। छात्रों को ऐसे विषय चिन्तन हेतु दिये जा सकते है, जिससे राष्ट्रीय चिन्तन हो सके ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो।

केस स्टडी के उद्देश्य–

- ❖ विद्यार्थी स्वतंत्र होकर, स्वयं ही सृजनात्मक ढंग से समस्या पर विचार कर सकेंगें।
- ❖ वे समस्या समाधान (Problem based learning)तक पहुंचने में सक्रिय हा`सकेंगें।
- ❖ वे अपने पूर्व ज्ञान का प्रयोग करते हुए प्रमाणों को संग्रह कर सकेंगें।
- ❖ घटनाक्रम में नवीन तथ्यों को जान सकेंगे।
- ❖ स्वयं अपने अनुभव से सीखते हुए ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।

- ❖ व्यक्तिगत, सामाजिक संबंधों को उत्तम ढंग से स्थापित कर सकेंगे।
- ❖ छात्रों में अभिप्रेरण एवं अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि हो सकेगी।
- ❖ छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन हो सकेगा।

विशेषताएं –

1. शिक्षण–अधिगम की समस्याओं का समाधान व्यक्तिगत रूप में किया जाता है।
2. व्यक्तिगत अध्ययन में लिखित कार्य को विशेष महत्व दिया जाता है। शिक्षक छात्र को सीखने के लिए परिस्थिति (विषयवस्तु) प्रदान करता है, जिसमें छात्र अभ्यास तथा अनुक्रिया करता है। सीखने के साथ–साथ मूल्यांकन भी किया जाता है। छात्र अपने कार्यों का स्वयं मूल्यांकन भी करता है।
3. व्यक्तिगत अध्ययन में प्रत्येक छात्र को अपने ढंग से सीखने का अवसर दिया जाता है। इस विशेषता को **स्वयं गति का सिद्धान्त** भी कहते है।
4. इसमें छात्र बहुआयामी माध्यमों से सीखता है। कुछ छात्र सुनकर, कुछ देखकर तथा कुछ करके अधिक सीखते है। कुछ छात्र पढ़कर तथा कुछ लिखकर अधिक सीखते है।
5. व्यक्तिगत अध्ययन में शिक्षक अधिक उत्तरदायी होता है क्योंकि उसे प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से सिखाना होता है।
6. इसके अंतर्गत प्रत्येक छात्र को उसकी कठिनाईयों को दूर करने का अवसर दिया जाता है। सीखते समय पुनर्बलन तथा निरन्तर अभिप्रेरणा दी जाती है।

उपयोगिता–

1. इससे छात्रों में अधिगम अधिक प्रभावशाली होता है। जिससे छात्रों में योग्यता तथा अध्ययन संबंधी अच्छी आदतों का विकास होता है।
2. इससे छात्रों में धारण शक्ति का विकास होता है क्योंकि जो तथ्य निकाले जाते है उन्हें छात्र स्वयं निकालता है।
3. इससे छात्रों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि होती है जो अध्ययन के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति का विकास करती है।
4. इससे छात्रों में अपेक्षित अभिवृत्तियों का विकास होता है।
5. विभिन्न मानसिक स्तर के छात्रों को उनके ढंग से सीखने का अवसर मिलता है।
6. बहुस्तरीय शिक्षण में भी सहायता मिलती है।

व्यक्तिगत अध्ययन छात्रों को एक सार्थक ज्ञान प्रदान करता है जिसका प्रयोग विभिन्न प्रकार के समाधान या अध्ययन के लिए किया जाता है। यह एक जटिल अधिगम का स्वरूप होता है। इसमें सृजनात्मक चिन्तन निहित होता है और चिन्तन स्तर पर शिक्षण की व्यवस्था होती है।

केस स्टडी के लिए विषयवस्तु के चयन का मानदण्ड–

कक्षा शिक्षण की परिस्थितयों की विषयवस्तु का चयन अधिक सावधानी से करने की आवश्यकता होती है क्योंकि विषयवस्तु की प्रकृति उसकी व्यवस्था पर आश्रित होती है। विषयवस्तु के चयन में निम्नलिखित मानदण्ड़ों को ध्यान मे रखना चाहिए–

- ❖ विषयवस्तु महत्वपूर्ण तथा सार्थक होनी चाहिए।
- ❖ अधिकतर ऐसी विषयवस्तु का चयन करना चाहिए जिससे छात्रों का प्रत्यक्ष संबंध हो। विषयवस्तु का चयन छात्रों के आयुवर्ग के अनुसार होना चाहिए।
- ❖ विषय की प्रकृति इसप्रकार की हो कि छात्र मौलिक तथा सृजनात्मक चिन्तन कर सके।
- ❖ विषयवस्तु का स्वरूप इस प्रकार का हो कि जिस पर वाद–विवाद किया जा सके।
- ❖ विषयवस्तु का स्वरूप स्पष्ट तथा बोधगम्य होना चाहिए।

केस स्टडी के सोपान –

किसी भी केस के संबंध में अध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व उस केस के सब पहलुओं की सूची बना लेनी चाहिए अर्थात् मुख्य –मुख्य क्षेत्र निर्धारित कर लेने चाहिए। फिर प्रत्येक क्षेत्र या पहलू से संबंधित समग्र जानकारी प्राप्त करने हेतु केस की विशेषता को ध्यान में रखकर पद्धतियों और उपकरणों का चयन करना चाहिए।

प्रत्येक केस स्वयं में अद्वितीय होता है इसलिए कोई एक रूपरेखा सब केसों के लिए नहीं बताई जा सकती। कोई भी दो व्यक्ति एक से नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति का अद्वितीय विकासात्मक इतिहास है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि केस स्टडी में कौन–कौन से पद सब के लिए होने चाहिए तथा एकत्रित सामग्री को किस आकार में व्यवस्थित करना चाहिए? कोई भी पद तथा कोई भी रूप जो समस्या के लिए उपयुक्त हो, अपना लेना चाहिए। नमूने के रूप में किसी भी व्यक्ति विशेष के केस स्टडी के सोपान, एकत्र की जाने वाली दत्त सामग्री के प्रकार और केस स्टडी के विवरण की रूपरेखा निम्नवत् है–

1. व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व को पर्यावरण से संबंधित सभी पहलुओं की सूची तैयार करना।
2. उन पहलुओं के बारे में आंकडे/ तथ्य संग्रह हेतु पद्धतियों और उपकरणों का चयन करना तथा उनका क्रम निर्धारित करना।
3. निर्धारित क्रम के अनुसार व्यक्ति विशेष के बारे में आंकडों/ तथ्यों संग्रह करना।
4. आंकडों/ तथ्यों का विश्लेषण करना।
5. व्यक्ति विशेष के बारे में सम्पूर्ण एकत्रित सामग्री को ध्यान में रखकर प्रत्येक प्रकार के आंकडों/ तथ्यों का अर्थापन (Interpetation) करना।
6. समस्या का निदान करना।
7. उपचार के लिए कार्यक्रम का प्रस्ताव रखना (यदि सम्भव हो तो)

8. कार्यक्रम के मूल्यांकन के लिए अनुवर्ती अध्ययन (फॉलोअप स्टडी) करना चाहिए।

केस अध्ययन एक व्यावहारिक आवश्यकता है उसी को ध्यान मे रखकर ऊपर के पद लिखे गये हैं परन्तु यह नहीं समझना चाहिए कि जिस क्रम में यह लिखें हैं समय की दृष्टि से भी वह क्रम इन सोपानों का होना चाहिए। अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार एक से अधिक पदों का कार्य एक साथ एक दूसरे के पूरक के रूप में हो सकता है। यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि केस स्टडी कर्ता को किसी भी केस स्टडी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

केस स्टडी का विवरण –

आधुनिक प्रवृत्ति संक्षिप्त केस विवरण प्रस्तुत करने की है। विवरण का निश्चित स्वरूप क्या हो? सबके लिए बिलकुल एक समान रूप तो नहीं हो सकता परन्तु मोटे तौर पर निम्नलिखित उप शीर्षकों में सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जा सकता है–

समस्या का चुनाव (शीर्षक)
↓
प्रस्तावना
↓
उद्देश्य
↓
आवश्यकता एवं महत्व
↓
पूर्व ज्ञान
↓
क्रिया विधि
↓
आंकड़ों / तथ्यों का संग्रह
↓
विश्लेषण
↓
अर्थापन
↓
समाधान / निष्कर्ष

प्रोजेक्ट विधि तथा केस स्टडी विधि में अन्तर –

प्रोजेक्ट विधि	केस स्टडी विधि
1 जीवन से संबंधित समस्या के समाधान के द्वारा विषयों का ज्ञान प्रदान किया जाता है।	1 सीखे हुए ज्ञान के आधार पर उस क्षेत्र की मौलिक समस्याओं का अध्यान करके अपने मौलिक विचार दिये जाते है।
2 छात्रों को पाठ्य वस्तु का ज्ञान तथा बोध कराया जाता है।	2 छात्रों के मौलिक तथा सृजनात्मक विचारों को ही महत्व दिया जाता है।
3 इसमें शारीरिक क्रियाओं को विशेष महत्व दिया जाता है।	3 इसमें उच्च मानसिक क्रियाओं पर अधिक बल दिया जाता है।
4 इस विधि में मौलिक आलोचनात्मक तथा	4 इस विधि का लक्ष्य ज्ञान इन्द्रियों को प्रशिक्षण

सृजनात्मक विचारों को अधिक प्रधानता दी जाती है।	देना है।
5. प्राप्त परिणाम में कल्पनाशीलता, अनुमान आदि का समावेश होता है।	5. इसमें वास्तविकता पर बल दिया जाता है।
6 छात्र योजना विधि से समाधान तक पहुंचता है।	6 समस्या की वास्तविक स्थिति के अध्ययन से समाधान तक पहुंचता है।
7 समयावधि आवश्यकतानुसार बढ़ायी जा सकती है।	7 समय निर्धारित होता है।

केस स्टडी मूल्यांकन प्रपत्र

1. केस स्टडी कर्ता का नाम ..... कक्षा .....
2. केस स्टडी का विषय .....
3. केस का शीर्षक .....
4. दिनांक / समय .....

क्र0सं0	मूल्यांकन के बिन्दु	स्तर			
1	प्रस्तावना	A	B	C	D
2	केस स्टडी के लिए किए गए प्रयास				
3	पूर्व ज्ञान				
4	क्रिया विधि				
5	केस स्टडी का लेखन				
6	उद्दश्य की पूर्ति				
7	समयबद्धता				
8	केस स्टडी का समग्र मूल्यांकन				

केस स्टडी कक्षा–1

विषय–हिन्दी

शीर्षक– मेला

मेले का चित्र

प्रस्तावना– प्रस्तुत चित्र के संबंध में बच्चों की जिज्ञासा जानकर, उन्हें इसके बारे में विचार व्यक्त करने को प्रोत्साहित करेगें, ताकि वह अपने संज्ञान में आने वाली वस्तुओं के बारे में अपनी जिज्ञासा प्रकट कर सकें, और उत्सुकता वश उन्हें जान सकें।

उद्देश्य–

- ❖ छात्र में अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करना।
- ❖ चित्रों के माध्यम से सूक्ष्म जानकारी प्राप्त करने को प्रोत्साहित करना।

आवश्यकता– बच्चे दिन–प्रतिदिन जिन वस्तुओं को देखते है, उन्हें मानक भाषा में बोलकर उनके बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकें।

पूर्व ज्ञान– बच्चा मेला, बाजार आदि से परिचित है। जहॉ पर ऐसा दृश्य दिखाई देता है।

कियाविधि– बच्चों से मौखिक रूप से निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में जानकारी प्राप्त करेगें।

1. इस चित्र में क्या–क्या दिखाई दे रहा है?
2. इसमें दो औरतें कौन–कौन सी वस्तुऍ बेच रही है?
3. पुरूष कौन–कौन सा सामान बेच रहे है?
4. किस वस्तु को एक पुरूष खरीद रहा है?
5. यह किस जगह का चित्र लग रहा है?

विश्लेषण– छात्र चित्र को देखकर एवं शिक्षक सुलभकर्ता की सहायता से सोच विचार कर निम्नलिखित निष्कर्ष निकालेगा।

निष्कर्ष–

1. इस चित्र में कुछ लोग सामान बेच रहे है तथा कुछ लोग समान खरीद रहे है। (छात्रानुसार)
2. इसमें एक औरत चाकू, कंघा, चूड़ी आदि बेच रही है। (छात्रानुसार)
3. पुरूष कटहल, खिलौने आदि बेच रहे है।
4. एक पुरूष कटहल को खरीद रहा है।
5. यह हाट, बाजार का चित्र लग रहा है। (छात्रानुसार)

नोटः– इसी तरह दूसरे चित्र के भी प्रश्न बनाए जा सकते है–

केस स्टडी –कक्षा–2

विषय–हिन्दी

नाम–

कक्षा–

विद्यालय का नाम–

शिक्षक का नाम–

ग्रामीण परिवेश चित्र

शहरी परिवेश चित्र

प्रस्तावना– प्रस्तुत चित्र छात्रों को आत्मविश्वास के साथ अपने भावों को प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित करेगें। दो विविध परिवेश (शहरी–ग्रामीण) का चित्र देकर अंतर बताने का भी प्रयास करवा सकते है, ताकि परिवेश से जोड़ा जा सके।

उद्देश्य– छात्रों में उनको पास–पड़ोस एवं उनके वातावरण से जोड़ते हुए प्रस्तुत चित्र के माध्यम से अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करना।

- ❖ भाषा पर पकड़ मजबूत करना।
- ❖ किसी विषय पर बातचीत के माध्यम से चर्चा में छात्रों को प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित करना।

आवश्यकता– बच्चों में अवलोकन करके बातचीत की दक्षता विकसित करने के लिए हम चित्रों के माध्यम से अधिक जानकारी प्रदान कर सकेगें।

पूर्व ज्ञान– बच्चे अपने आस–पड़ोस के वातावरण से परिचित है एवं अभिव्यक्ति करना जानते है।

कियाविधि– बच्चों से मौखिक रूप में बातचीत करके निम्नलिखित प्रश्नों को पूछ सकते है–

1. प्रस्तुत चित्र किस परिवेश को दिखाता है?
2. इसमें क्या–क्या दिखलाई दे रहा है?
3. घर की छत किस प्रकार की बनी है?
4. चित्र में कौन सा पालतू पक्षी दिखायी दे रहा है?
5. आपको और कौन–कौन सी चीजें दिखायी दे रही है?
6. पहले चित्र तथा दूसरे चित्र की वस्तुओं में क्या अंतर है?
7. दूसरा चित्र किस परिवेश का है?

विश्लेषण– छात्र चित्रों का अवलोकन करके एवं शिक्षक की सहायता से सोच–समझकर निम्नलिखित निष्कर्ष निकालेगें–

निष्कर्ष–

1. (1) प्रथम चित्र – ग्रामीण परिवेश
   (2) द्वितीय चित्र – शहरी परिवेश
2. छात्रानुसार– (झोपड़ी, मुर्गी, लकड़ी काटता व्यक्ति, फल एवं सब्जी बेचती औरत, घास काटकर लाती औरत) आदि।

1. झोपड़ी की छत घास–फूस की (छात्रानुसार)
2. मुर्गियॉ
3. छात्रानुसार
4. छात्रानुसार
5. शहरी परिवेश का

केस स्टडी (छात्र हेतु) – कक्षा– 3

विषय – हिन्दी

शीर्षक– यात्रा का वर्णन

केस स्टडीकर्ता का परिचय–

छात्र का नाम–

वर्ग–

विषय– हिन्दी

विद्यालय का नाम–

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– सभी बच्चे छुट्टियों या अन्य अवसरों पर यात्राऐं करते हैं। वे कई माध्यमों से यात्रा करते है। बच्चों को यात्राऐं बहुत अच्छी लगती हैं। उन्हें बस अथवा रेलगाड़ी में बैठना बहुत अच्छा लगता है। वे अपनी यात्राओं की यादों को सदैव अपने मस्तिष्क में सजोए रखते हैं। यात्रा के समय कईं जगह घुमते है। जहॉ वे कई नई–नई जगहों, इमारतों, दर्शनीय स्थलों, ऐतिहासिक स्थलों को देखते है। यात्रा के समय उन्हें नये–नये लोगों, मित्रों से मिलने का मौका मिलता है।

उद्देश्य– बच्चों का अभिव्यक्ति मूलक कौशल विकसित करना, साथ ही उन्हें यात्राओं के प्रति गम्भीर बनाना कि वे वहॉ जाकर मनोरजंन के साथ शैक्षणिक जानकारी भी एकत्रित करें।

केस स्टडी की आवश्यकता– सभी बच्चें यात्राऐं करते हैं। यात्राओं पर जाने के प्रति बच्चों में बड़ी उत्सुकता रहती है। बच्चे यात्रा के समय मनोरंजन करते हैं। वे बहुत से अनुभवों को भी प्राप्त करते हैं। उन्हें कई प्रकार की शैक्षणिक जानकारियॉ भी प्राप्त होती हैं। क्यों न इस अध्ययन से उन यात्राओं के प्रति प्राप्त की गयी जानकारियों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा प्रदर्शित करने का प्रयास किया जाय, और साथ ही उन यात्राओं के महत्व को जानने का प्रयास करें।

पूर्व ज्ञान– बच्चे सदैव अपने माता–पिता के साथ छुट्टियों या अन्य अवसरों पर यात्रा करते हैं। यात्रा में वे बहुत से स्थलों को देखते हैं।

किया विधि–

प्रश्न–1 आप कहॉ गये थे?

प्रश्न–2 आपके साथ कौन–कौन यात्रा पर गये थे?

प्रश्न–3 आपने किस ऋतु या अवसर पर यात्रा की थी?

प्रश्न–4 आपने किस साधन से यात्रा की थी?

प्रश्न–5 उस साधन पर बैठने के बाद वह साधन कैसी आवाज निकालता था?

प्रश्न–6 यात्रा में जाने पर आपके माता–पिता ने कितने मूल्य का टिकट लिया?

प्रश्न–7 आपका टिकट कितने मूल्य का था?

प्रश्न–8 यात्रा के समय आपने क्या–क्या खाया?

प्रश्न–9 यात्रा में आप क्या–क्या सामान ले गये?

प्रश्न–10 यात्रा के समय आप किन–किन स्थानों से होकर गुजरे?

प्रश्न–11 यात्रा में आपने क्या क्या देखा?

प्रश्न–12 यात्रा से आप क्या–क्या खरीद कर लाये?

प्रश्न–13 अगर अब आपको घूमने के लिए कहा जाए तो आप कहॉ जाना पसंद करेगें और क्यों?

प्रश्न–14 यात्रा करते समय आपको किन–किन बातों को ध्यान रखना चाहिए?

प्रश्न–15 यदि आपका कोई मित्र या रिश्तेदार उसी जगह की यात्रा करना चाहें, तो आप क्या सुझाव देंगे?

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी निम्न स्रोतों से प्राप्त की गयी–

1. मार्गदर्शक/शिक्षक से
2. अनुभव से
3. अपने माता–पिता से

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों से प्राप्त जानकारियों को निम्न प्रकार से लिखा जायेगा–

निष्कर्ष–

नोट– प्रत्येक प्रश्न का उत्तर छात्र विशेष के अनुरूप होगा।

केस स्टडी – कक्षा– 3

विषय– हमारा परिवेश

शीर्षक– बादलों का बनना

केस स्टडीकर्ता का परिचय– **छात्र/छात्रा का नाम–**

विद्यालय का नाम–

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– बरसात के दिनों में अचानक बादल आकाश में छा जाते हैं और कुछ देर बाद, बादलों से पानी बरसने लगता है, जिससे मैदान और पेड़–पौधे हरे–भरे हो जाते है और नदी, तालाब एवं पोखरों में पानी भर जाता है और बाद में वर्षा का यह जल समुद्र में चला जाता है और फिर जल वाष्प में बदल कर बादल बन जाते है। यह क्रिया लगातार होती रहती है, इसलिए इसको जल–चक्र कहते है।

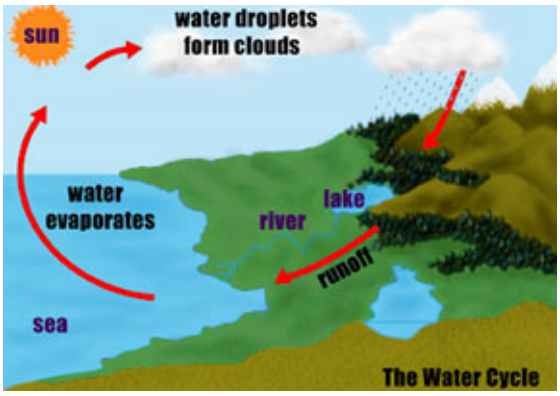

उद्देश्य– बच्चों को बादल बनने की प्रक्रिया की जानकारी देना।

केस स्टडी के अध्ययन की आवश्यकता और महत्व– इस केस स्टडी को करने बाद बच्चों को बादल बनने की प्रक्रिया की जानकारी होगी और वे प्रकृति के जल चक्र को समझ सकेगें। उनमें वैज्ञानिक ढंग से सोचने की शक्ति उत्पन्न होगी तथा उनमें निरीक्षण, अवलोकन जानने समझने और तर्क करने की क्षमता का विकास होगा।

पूर्व ज्ञान– बरसात के दिनों में तालाब, पोखर, गड्ढे और नदियों में पानी भर जाता है और इस मौसम में वायु में भी जलवाष्प की मात्रा ज्यादा होती है। यह पानी पहाड़ों और नदियों से होकर समुद्र में चला जाता है। समुद्र का जल वाष्प में बदल कर वायुमंडल में वापस चला जाता है और ऊँचाई पर पहुँचकर संघनन की क्रिया होती है और बादल बन जाते है। इन्ही बादलों से जल, वर्षा के रूप में धरती पर बरस जाता है।

बादल बनने की प्रक्रिया के निम्न कारण हो सकते है–

- बरसात में पानी बरसता है।

- बरसात का पानी नदी, तालाब और गड्ढों में भर जाता है और फिर यहॉ से समुद्र में चला जाता है।
- लगातार गरमी और तेज धूप होने के कारण समुद्र का पानी भाप बनकर उड़ जाता है।
- इसी जलवाष्प (भाप) से बादल बनते है और वर्षा होती है।
- बादल संघनन की क्रिया के कारण बनते है।
- यह क्रिया लगातार होती रहती है इसीलिए समुद्र का पानी भाप बनकर उड़ता रहता है किन्तु फिर भी समुद्र का पानी कम नहीं होता।
- वर्षा के पानी से बादल बनने और बादल से पुनः वर्षा के रूप में वापस आने की क्रिया को 'जलचक्र' कहते हैं।

क्रिया विधि–

- वर्षा का पानी कहॉ एकत्रित होता है?
- तेज धूप में तालाब और नदी का पानी कहॉ चला जाता है?
- जल वाष्प (भाप) कैसे बनती है?
- बादल कैसे बनते हैं?
- संघनन की क्रिया कैसे होती है?
- बादलों के ठंडा होने पर क्या होता है?
- जल चक्र किसे कहते हैं?
- जल चक्र से क्या लाभ है?

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी प्राप्त कराने वाले स्रोत–

- मार्गदर्शक / शिक्षक
- अभिभावक / समुदाय
- मित्रों से
- समाचार पत्र–पत्रिकाओं, दूरदर्शन एवं रेडियो से
- पुस्तकालय एवं पाठ्य पुस्तक से

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों से मिली जानकारियों का गहन अध्ययन करके उनसे प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुवार लिखो।

निष्कर्ष– उपर्युक्त केस स्टडी करने के बाद हमें निम्नलिखित जानकारी प्राप्त हुई–

- बादल संघनन की क्रिया के फलस्वरूप बनते हैं।

- वर्षा का पानी नदी, तालाब, पोखरों आदि में एकत्रित होता है और जहॉ से वह समुद्र में जाता है।
- समुद्र का पानी भाप बनकर उड़ता है।
- ऊॅचाई पर पहुॅचकर यही जलवाष्प ठंडी होकर संघनित हो जाती है और बादल बन जाती है।
- बादलों के ठंडा होने पर यही जल वर्षा बूॅदों के रूप में धरती पर आ जाती है।
- यह क्रिया लगातार होती रहती है जिसे हम जल चक्र के नाम से जानते हैं।

केस स्टडी – कक्षा–4

विषय–अंग्रेजी

समय अवधि–

शीर्षक Articles–

प्रस्तावना– अंग्रेजी भाषा में Articles का प्रयोग एक अहम भूमिका का निर्वहन करता है। अनुचित Articles का प्रयोग करने से कही जाने वाली बात का निहितार्थ बदल जाता है। इस उद्देश्य से छात्र–छात्राओं को Articles का सही प्रयोग जानना आवश्यक है।

उद्देश्य– 1. छात्रों को Articles का बोध कराना।

2. Articles के प्रयोग में ध्यान में रखने वाली सावधानियों की जानकारी देना।

3. Articles के उचित प्रयोग में समर्थ बनाना।

आवश्यक सामग्री– Chart Paper, sketch pens, विभिन्न objects के pictures.

कार्य योजना– शिक्षक छात्रों को Articles से परिचित कराते हुए उसके तीनों रूपों a, an तथा the का बोध कराएगें। शिक्षक यह स्पष्ट करेगा कि किस Noun के साथ किस article का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए Phonetic approach की मदद लेना श्रेयस्कर होगा। शिक्षक को छात्रों को स्पष्ट करना होगा कि vowel sound से शुरू होने वाली nouns के साथ 'am' तथा अन्य के पहले 'a' का प्रयोग किया जाता है।

कार्य विधि–

(1) शिक्षक चार्ट पेपर पर बने विभिन्न Objects के चित्र दिखा कर बच्चों से उनके नाम पूछे

शिक्षक– What is this? (showing)

छात्र– Tree

शिक्षक– And this? (showing)

छात्र– Apple

(2) इसी प्रक्रिया को कई प्रकार बार दोहरा कर शिक्षक छात्रों से Orange, aeroplane, banana, car, elephant, umbrella, sun, moon, Tajmahal, mobile, phone, bag, boy, girl आदि Objects का उच्चारण करायें।

(3) शिक्षक स्पष्ट करें कि aeroplane, Orange,banana, car, elephant, umbrella, के उच्चारण करते समय होंठ का आपस में संपर्क नहीं होता है और न ही जीभ, दॉत या तालू से सम्पर्क करती है। जबकि अन्य शब्दों के उच्चारण में ऐसा नहीं है।

(4) अब शिक्षक उपरोक्त स्पष्टीकरण के आधार पर an apple, an orange, an aeroplane, an elephant, an umbrella तथा a banana, a car, a mobile phone, a bag, a boy, a girl को स्पष्ट करें।

(5) शिक्षक a तथा an को स्पष्ट करने के पश्चात छात्रों का ध्यान sun, moon, Tajmahal जैसे निश्चित nouns words के ओर आकृष्ट करते हुए the का प्रयोग बताए।

(6) शिक्षक छात्रों से विभिन्न वाक्यों में article का प्रयोग करा सकते है।

उदाहरणार्थ–

(1) Rohit is ----------. He lives in ----------. He eats---------- from----------.

(2) This is ---------- tree. There are many apples on ----------. Children pluck ---------- from ----------.

मूल्यांकन– 1. **छात्र** article से परिचित हो सकेगें।

2. Phonetical approach से शब्दों का उच्चारण सीख सकेगें।

3. article का सही प्रयोग सीख पाएगें।

टिप्पणी– शिक्षक सावधानी पूर्वक यह समझ विकसित करने का प्रयास करें कि 'an' का प्रयोग उन nouns words के पहले होता है जिनके उच्चारण करते समय पहली ध्वनि **अ, इ, उ** होती है।

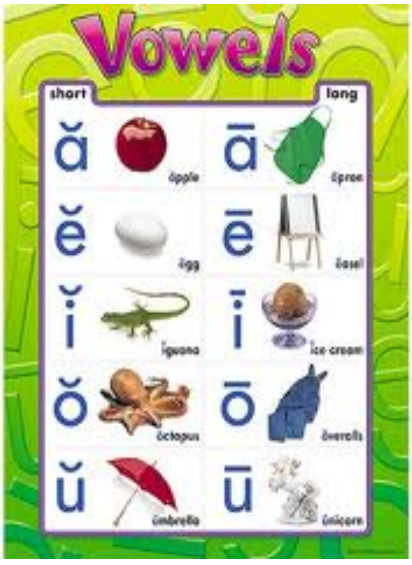

केस स्टडी कक्षा– 5
विषय– हिन्दी
शीर्षक– अपनी आत्मकथा

केस स्टडी का परिचय–

छात्र/छात्रा का नाम–
वर्ग–
विद्यालय का नाम–
मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– जब कोई व्यक्ति अपने जीवन काल में घटने वाली सभी घटनाओं को स्वंय वर्णन कर लिखता है तो उसे आत्मकथा कहते हैं "आत्मकथा अर्थात् अपने बारे में लिखी हुई कथा। इसमें जीवन काल में होने वाली सभी सुखद व दुःखद घटनाओं का वर्णन होता है। इसमें जीवन के किसी विशेष काल जैसे– बाल्यावस्था, किशोरावस्था या सम्पूर्ण जीवन काल का वर्णन किया जा सकता है।

उद्देश्य– बच्चों में रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना साथ ही उन्हें अपने बचपन की घटनाओं को याद करने के लिए प्रेरित करना।

केस स्टडी की आवश्यकता– प्रायः ऐसा कहा जाता है कि कई कारणवश कुछ बच्चों का मन पढ़ाई में नहीं लगता। ऐसी समस्या के निवारण के लिए हमें अपने अध्यापन कार्य में कुछ परिवर्तन लाने होगें उन्हें रूचिकर बनाना होगा। बालक को ऐसी शिक्षा दी जाये जो उसके लिए विश्व के द्वार खोल दे जिसमें भविष्य का विकास निहित हो। भाषा हमारी संवेदना है भाषा से बालक अपनी अभिव्यक्ति प्रदर्शित करता है साथ ही वह अपने विचारों को भी प्रकट करता है। आत्मकथा के अध्ययन से वह केवल अपने अतीत को ही नहीं जान सकेगा बल्कि रचनात्मक अभिव्यक्ति का भी विकास होगा।

पूर्व ज्ञान– सभी बच्चे अपने पिछले दिनों के विद्यालयी जीवन को सहजता से याद करते हैं। अपने शिक्षकों एवं अपने पूर्व के साथियों के व्यवहार को भी वे याद रखते हैं। साथ ही वे अपने बड़ों से भी अपने पूर्व के दिनों के बारे में जानते हैं।

किया विधि–

1. आपका क्या नाम है?
2. आपके विद्यालय का क्या नाम है?
3. आप इस विद्यालय में कब से पढ़ रहे हैं?
4. आपको किन–किन शिक्षकों ने पढ़ाया?
5. आपको लिखना पढ़ना सबसे पहले किसने सिखाया?
6. सबसे अच्छा शिक्षक आपको कौन लगता था?
7. वह शिक्षक कौन सा विषय आपको पढ़ाता था?
8. आपको अपने प्रिय शिक्षक में सबसे अच्छा क्या लगता है?

9. आपको कौन सा विषय सबसे अच्छा लगता है?
10. उक्त विषय आपको क्यों अच्छा लगता है?
11. आप अपने प्रिय शिक्षक के साथ कहॉ–कहॉ घूमने गये हैं?
12. क्या आपके प्रिय शिक्षक कभी आप पर नाराज होते है?
13. आपका प्रिय मित्र कौन है?
14. वह आपको क्यों प्रिय है?
15. क्या आपको वह पढ़ने लिखने में सहायता करता है?
16. क्या आप उसके साथ कभी घूमने गये हैं?
17. आपने सबसे पहले किस पर लिखना प्रारम्भ किया? (प्लेट, तख्ती, कापी)
18. आपने सबसे पहले किस से लिखा? (पेन, पेन्सिल, चाक, खड़िया)
19. आपको सबसे प्रिय पुस्तक कौन सी लगती है? और क्यों?
20. आप किस वाहन से विद्यालय जाते हैं? (पैदल, साइकिल, तांगा, बस)
21. क्या आपको छुट्टी पसंद है?
22. जब आप कक्षा में पढ़ते हुए ऊब जाते हैं, तो अपने शिक्षक से न पढ़ने के लिए किस प्रकार निवेदन करते हैं?
23. घर पर आप कितने घंटे पढ़ते हैं?
24. घर पर आपको कौन पढ़ाता है?
25. आप आगे चलकर क्या बनना पसंद करेगें और क्यों?

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी निम्न स्रोतों से प्राप्त की गयी–

1. मार्गदर्शक/शिक्षक से
2. अनुभव से
3. अपने बड़ो से

विशेलेषण– उपर्युक्त स्रोतों से प्राप्त जानकारी को बिन्दुवार लिखा जायेगा।

निष्कर्ष–

1. मेरा नाम ..... है
2. मैं प्राथमिक विद्यालय ..... वि0से0 ..... जनपद..... में पढ़ता हूॅ।
3. मैं इस विद्यालय में कक्षा ..... से पढ़ रहा हूॅ।

नोटः– इसी प्रकार प्रश्न का निष्कर्ष छात्र विशेष के अनुरूप होगा।

केस स्टडी

कक्षा -5

शीर्षक– 'People who help us.'

छात्र का नाम–

कक्षा–5

विषय– English

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– प्यारे बच्चों आप सभी जानते हैं कि दूसरों की help करना एक बहुत अच्छा कार्य है। हम सभी को कभी न कभी दूसरों की मदद की आवश्यकता पड़ती है जैसे– यदि कभी आप स्कूल में पेन्सिल लाना भूल जाते हैं तो आपके friend आपको पेन्सिल देकर आपकी help करते हैं, आपकी मम्मी आपके Home work में आपकी help करती है। दूसरों की help करना एक बहुत अच्छी habit है। अतः हम सभी को अपने अंदर इस habit को develop करने की कोशिश करनी चाहिए।

पूर्व ज्ञान– प्रस्तावना के बाद छात्रों से पूर्व ज्ञान संबंधी कुछ प्रश्न पूछे जायेगें जैसे–

– बच्चों, जब आप बीमार होते हैं तो आप किसके पास जाते हैं?

– बच्चों, आपने कभी खेत देखे हैं, खेतों में कौन काम करता है?

– जो लोग लकड़ी से कुछ बनाते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

– जो व्यक्ति हमारे कपड़े सिलता है, उसे क्या कहते है?

– हमारे पेड़ पौधों की देखभाल कौन करता है?

अध्ययन की आवश्यकता एवं उद्देश्य– छात्रों को कार्य की महत्ता के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा जिससे वे किसी कार्य को छोटा–बड़ा नहीं समझेगें बल्कि सभी कार्यों को समान महत्व दे सकेगें। छात्र एक दूसरे के साथ सहयोग करना सीखगें तथा आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे की मदद करेगें। सभी लोगों को सम्मान देना सीखेगें क्योंकि जीवन में सभी व्यक्तियों की Importance होती है, जिससे उनका नैतिक विकास होगा। इसके द्वारा छात्रों में दूसरे की मदद करने संबंधी अच्छी आदत का विकास होगा।

इसके अतिरिक्त छात्रों में स्वंय कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास होगा। जब छात्र दूसरे लोगों की मदद से कार्य करेगें तो उनका सामाजिक विकास भी होगा। छात्र एवं शिक्षकों के बीच विचार विमर्श का अवसर मिलने से छात्रों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति का भी विकास होगा, उनकी Language skills और speaking skills भी develop होंगी।

क्रियाविधि– सभी छात्रों के सम्मुख कुछ प्रश्न रखे जायेगें जिनके उत्तर उनकों Individually तैयार करने होगें। जैसे–

– Doctor हमारी help कैसे करते हैं?

– Hospital में Nurse का क्या काम होता है?

– Doctor और Nurse किस color का Coat पनते हैं?

– अगर Hospital में Doctor न होते तो क्या होता? सोचिए और बताइये।

– Postman कैसे कपड़े पहनता है?

– Postman हमारे लिए क्या करता है?

– Farmer का क्या कार्य हैं?

– Farmer हमारी help कैसे करता है?

– Carpenter कौन होता है?

– आपके घर में Carpenter की बनायी हुई क्या–क्या वस्तुओं हैं व उनको आप कैसे use करते हैं, तालिका बनाकर बताइये।

– माली कौन होता है?

– अगर माली अपना काम न करे तो क्या होगा?

– Washer man का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

– Tailor क्या काम करता है?

– हमारे जीवने में जिन–2 लोगों का महत्व है या जो लोग किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारी help करते हैं उनके नाम व कार्यों को एक तालिका द्वारा प्रदर्शित कीजीए।

–क्या आपने कभी किसी की मदद की है, संक्षेप में बताइये।

– Lesson से कम से कम 10 difficult words और उनके Meanings छॉट कर लिखिए।

– किन्हीं 10 शब्दों के अपने शब्दों में वाक्य प्रयोग कीजिए।

विश्लेषण व निष्कर्ष– छात्रों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर छात्रों की सहायता से ही विचार विमर्श करके प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का विश्लेषण किया जायेगा तथा उन्हें निष्कर्ष के रूप में सही उत्तर बताया जायेगा।

निष्कर्ष– सभी प्रश्नों के उत्तरों के विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष रूप में सही उत्तर बताये जायेगें, जो इस प्रकार है–

– जब हम बीमार होते है तो Doctor हमें दवाईयां देकर ठीक करते है।

– Hospital में Nurse मरीजों की देखभाल करती है।

– Postman खाकी रंग की पैन्ट व शर्ट पहनता है।

– Postman हमारे लिये पत्र आदि लाता है।

– Farmer का कार्य खेती करना व अन्न उगाना है।

– Farmer हमारे लिए अन्न पैदा करता है जिससे हमें भोजन मिलता है।

– जो व्यक्ति लकड़ी का काम करता है या लकड़ी से कुछ सामान बनाता है, वह Carpenter होता है।

– जो व्यक्ति फूल पौधें लगाता है उसे Gardner (माली) कहते हैं।

– अगर माली अपना काम न करे तो Garden में लंबी–लंबी घास आ जायेगी, फूल पौधों की उचित देखभाल नही हो सकेगी जिससे वो मुरझा जायेगें।

– Washer man हमारे कपड़े धोता है।

– Tailor हमारे कपड़े सिलता है।

क्र0सं0	People	Functions
1	Doctor	हमारी बीमारियों को ठीक करता है।
2	Nurse	डाक्टर की मदद करती है तथा मरीजों की देखभाल करती है।
3	Postman	हमारे लिये पत्र लाता है।
4	Farmer	हमारे लिये अन्न उगाता है।
5	Tailor	हमारे लिये कपड़े सिलता है।
6	Carpenter	घर में प्रयोग होने वाली लकड़ी का सामान बनाता है।
7	Gardner	फूलों व पौधों की देखभाल करता है।
8	Washerman	हमारे कपड़े धोता है।

केस स्टडी

विषय– विज्ञान

शीर्षक–चाभी से चलने वाला खिलौना चाभी भरने पर चलने लगता है।

केस स्टडी का परिचय–

छात्र/छात्रा का नाम–

वर्ग–

विद्यालय का नाम–

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– हमारे परिवेश में अनेक वस्तुएं गति करती हुई दिखाई देती हैं। मोटर, बस, स्कूटर, बैलगाड़ी, साइकिल आदि को हम स्थिर (रूकी हुई) स्थिति और गतिमान दोनों अवस्थाओं में देखते हैं। इनको हम बल लगाकर गतिमान करते हैं।

चाभी से चलने वाले खिलौने भी पहले स्थिर रहते हैं पर जब हम चाभी भर देते है तो वे गतिमान हो जाते है। यह तनाव बल के कारण होता है।

उद्देश्य– बच्चों को तनाव बल की जानकारी देना तथा बताना कि चाभी से चलने वाला खिलौना चाभी भरने पर चलने लगता है।

केस स्टडी की आवश्यकता एवं महत्व– इस केस स्टडी को करने के बाद बच्चों को बल तथा उसके प्रकारों की जानकारी होगी तथा उन्हें यह भी पता चलेगा कि तनाव बल के कारण ही चाभी वाले खिलौने में गति होती है। जब तनाव बल ज्यादा होता है तो खिलौना गतिमान हो जाता है और जैसे– जैसे तनाव बल कम होता जाता है खिलौने की गति कम हो जाती है और वह पूर्व की स्थिति में आ जाता है।

पूर्व ज्ञान– बाजार में विभिन्न प्रकार के खिलौने मिलते है। इनमें से कुछ खिलौने ऐसे होते हैं जिनमें चाभी लगी रहती है। यह खिलौने पहले तो स्थिर रहते है परन्तु उनमें जब चाभी भर देते है तो वे गतिमान हो जाते है। खिलौना चाभी भरने पर चलने लगता है, इसके निम्नलिखित कारण हो सकते है–

- खिलौने को गतिमान करने के लिए उसमें एक चाभी और कमानी लगी होती है।

- चाभी भरने से कमानी खिंच जाती है और उसमें तनाव उत्पन्न हो जाता है।
- इस तनाव बल के कारण कमानी खिंच जाती है।
- जब हम चाभी भरते हैं तो तनाव बल बहुत ज्यादा हो जाता है जिससे खिलौना चलने लगता है और जैसे–जैसे तनाव बल कम होता है खिलौने की गति कम हो जाती है।

किया विधि–

- बल किसे कहते है?
- बल कितने प्रकार का होता है
- चाभी से चलने वाले खिलौने में चाभी और कमानी क्यों लगी रहती है?
- चाभी भरने से खिलौने में कौन सा बल उत्पन्न होता है?
- चाभी भरने से कमानी क्यों खिंच जाती है?
- तनाव बल के कम और ज्यादा होने का कैसा प्रभाव खिलौने की गति पर पड़ता है?

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी प्राप्त कराने वाले निम्नलिखित स्रोत–

- मार्गदर्शक / शिक्षक
- अभिभावक / समुदाय
- मित्रों से
- समाचार पत्र पत्रिकाओं, दूरदर्शन एवं रेडियो से
- पुस्तकालय एवं पाठ्य पुस्तक से

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों से मिली जानकारियों का गहन अध्ययन करके उनसे प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुवार लिखेगें।

निष्कर्ष– उपर्युक्त केस स्टडी करने के बाद हमें निम्नलिखित जानकारी प्राप्त हुई–

- चाभी का खिलौना चाभी भरने से गतिमान होता है।
- खिलौने को गतिमान करने के लिए उसमें चाभी और कमानी लगी होती है
- चाभी भरने से खिलौने में लगी कमानी खिंच जाती है और उसमें तनाव बल उत्पन्न हो जाता है।
- तनाव बल, बल लगाने की एक युक्ति है।
- जब कमानी बल के कारण पूरी तरह खिंची रहती है तो खिलौना चलने लगता है और धीरे–धीरे कमानी का खिचॉव कम होने पर खिलौना भी स्थिर हो जाता है।

केस स्टडी

कक्षा –6

विषय – हिन्दी

शीर्षक– साप्ताहिक धमाका
केस स्टडीकर्ता का परिचय –
छात्र–छात्रा का नाम
कक्षा
विद्यालय का नाम
मार्ग दर्शक का नाम

प्रस्तावना

PICTURE

उद्देश्य– अखबार के महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

केस स्टडी की आवश्यकता– वर्तमान समय में दुनिया से जुड़े होने की महती आवश्यकता है और अखबार इसकी महत्वपूर्ण कड़ी है। अखबार न केवल हमें स्थानीय खबरों की जानकारी देता है अपितु देश–दुनिया के विभिन्न खबरों की जानकारी देकर जोड़ता है तथा हमारे भाषा ज्ञान, व व्याकरण का विस्तार करता है। सुबह उठते–उठते हम अक्सर यह देखते हैं कि हमारे बड़े बुजुर्ग अखबार आने की राह देख रहे है। क्या आपने यह जानने का प्रयास किया है कि उनमें यह उत्सुकता क्यों रहती है। तो क्यो न आज हम इसके महत्व और इसके पीछे छिपी उत्सुकता को जानने का प्रयास करें।

पूर्व ज्ञान– छात्र अक्सर अपने बड़े –बुजुर्गो को घर में या चाय आदि की दुकान पर लोगों को अखबार पढ़ते देखते हैं। इसके अतिरिक्त जब वे दुकान पर सामान खरीदने जाते हैं तो दुकानदार अक्सर पुराने अखबारों या उनके बने लिफाफों में सामान देते है।

क्रिया विधि–

1. हिन्दी भाषा का सबसे पहला अखबार (समाचार पत्र) कौन सा था तथा किस सन् में प्रकाशित हुआ?
2. अखबार के कितने प्रकार होते हैं?
3. आपके गांव / क्षेत्र में कौन–कौन सा अखबार आता है?
4. अखबार में किन–किन क्षेत्रों से संबंधित सूचनायें व खबरें प्रकाशित होती है?
5. साप्ताहिक धमाका जो कि बाल अखबार है, उसी की तरह यदि आपको बाल अखबार निकलवाना हो तो आप किन–किन विषयों को शामिल करेंगे?
6. जब तुम अखबार निकालोगे तो काम का विभाजन किस आधार पर करोगे?
7. अखबार निकालते समय किन–किन बातों का ध्यान रखोगे?
8. ''हमारे क्षेत्र में फैली गन्दगी का कोई उपाय नही'' यदि इस विषय पर आपको अखबार में लेख लिखना हो तो कैसे लिखोगे?

उपर्युक्त बिन्दुओं हेतु जानकारी के स्रोत–

1. शिक्षक/मार्ग दर्शक
2. गांव के लोग/बड़े बुजुर्ग
3. समाचार पत्र–पत्रिकायें
4. पुस्तकालय
5. पाठ्यपुस्तक

विश्लेषण–

उपर्युक्त स्रोतो से प्राप्त जानकारियों का गहन अध्ययन करके प्राप्त निष्कर्षो का बिन्दुवार लिखा जायेगा।

निष्कर्ष–

1. हिन्दी भाषा काएसबसे पहला अखबार ''उदन्त मार्तण्ड'' कोलकाता से सन् 1826 ई0 में प्रकाशित हुआ।
2. अखबार प्रायाः दैनिक, साप्ताहिक अथवा पाक्षिक होते है।
3. .....
4. अखबार में मुख्यतः निम्नलिखित क्षेत्रों से संबंधित सूचनायें प्रकाशित होती है– स्थानीय, प्रदेश से संबंधित, देश से संबंधित, संसार से संबंधित, व्यापार से संबंधित, खेल से संबंधित, मनोरंजन से संबंधित
5. .....
6. सम्पादक
   संवाददाता
   निजप्रतिनिधि
   फोटोग्राफर

जब हम अखबार निकालेंगे तो हम कार्य का विभाजन छात्र की योग्यता व क्षमता के अनुसार करेंगे।

1. सम्पादक– जो भाषा संबंधी दक्षता रखता हो तथा जिसमें मैनेजिरियल पावर हो।

2. संवाददाता– जो अधिक से अधिक लोगो से जल्दी घुल–मिल जाये उनसे अधिक से अधिक जानकारी ले कर लिपिबद्ध कर सके।
3. फोटोग्राफर – यहॉ उनको सम्मिलित किया जायेगा, जिनकी आर्ट अच्छी हो और जो अच्छा स्केच बना सके।

7. अखबार निकालते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जायेगा–
   1. अपने क्षेत्र की सभी छोटी बडी समस्याओं को रोचक तरीके से छापना (जैसे कार्टून, ब्लॉक में न्यूज या हाई लाइट करके)
   2. टीम में शामिल सभी बच्चों को समान महत्व देकर काम लिया जायेगा।
   3. अपने क्षेत्र के जानकार बड़े बुजुर्ग की राय ली जायेगी।
8.

''हमारे क्षेत्र में फैली गन्दगी का कोई उपाय नही''
चौखम्भा

''हमारे क्षेत्र में लगभग एक सप्ताह से कोई सफाई कर्मी नहीं आया जिससे चारों ओर गन्दगी का राज फैल गया, बिना नाक पर कपड़ा रखे चलना दूभर हो गया। कई बार नगर निगम अधिकारी से शिकायत करने के बावजूद भी कोई हल नहीं निकला। गन्दगी के कारण मच्छरों का प्रकोप हो गया है। बीमारियों ने घरों का दरवाजा खटखटाना शुरू कर दिया है। ऐसा लगता है कि इस गन्दगी का कोई उपाय नहीं।

नोट– इस केस स्टडी के पश्चात शिक्षक बच्चों को बाल अखबार या विद्यालय का अखबार प्रोजेक्ट के रूप में दे सकता है।

केस स्टडी कक्षा– VI

विषय– इतिहास

शीर्षक– सिन्धु घाटी सभ्यता नगरीय सभ्यता थी।

बालक/बालिका का नाम.....

शीर्षक–

विद्यालय का नाम–

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– आज हमारे देश में कुछ लोग गॉवों में रहते हैं, तो कुछ नगरों (शहरों) में। जैसे– विद्यालय में कुछ शिक्षक गॉव से ही पढ़ाने आते है, तो कुछ नगर से आते हैं। बच्चों क्या आपको पता है कि आज से लगभग ढाई हजार (2,500) वर्ष पहले भी भारत में नगर थे। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन प्राचीन नगरों का निर्माण आजकल के हमारे शहरों जैसा ही था। जैसा कि खुदाई से प्राप्त ईमारतों के खण्डहर, बर्तन एवं वस्तुओं से ज्ञात होता है।

उद्देश्य– सिन्धुघाटी की सभ्यता से संबंधित तथ्यों की जानकारी ज्ञात करना।

केसस्टडी की आवश्यकता/महत्व– प्रारम्भिक स्तर पर छात्र इतिहास को जानने का प्रयास अपनी कुछ शंकाओं के समाधान के लिए करते हैं। जैसे–हजारों साल पहले मनुष्य कहॉ रहता था? कैसे रहता था? क्या खाता था? उसका व्यवसाय क्या था? आदि.....। इसी क्रम में छात्रों को नदी घाटी की सभ्यताओं से परिचित कराते हुए उन्हें सिन्धुघाटी की सभ्यता से संबंधित व्यक्तिगत रूप से जानकारी इकट्ठा करने को कहेगें। ताकि वह विश्व की अन्य सभ्यताओं को जानने में भी रूचि ले सकेगें। इसी के साथ वह वर्तमान में गॉव एवं शहरी दिनचर्या का भी अध्ययन करके अंतर कर सकेगें।

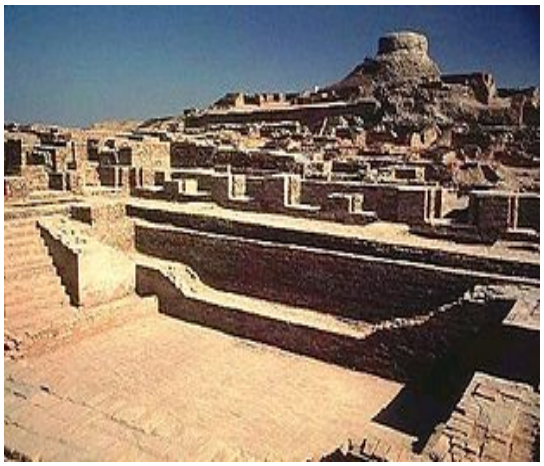

केसस्टडी का पूर्व ज्ञान– बच्चे सिन्धुघाटी की सभ्यता से संबंधित शहरों की ईमारतों आदि की जानकारी रखते है।

सन् 1921 की बात है, जब भारत में अंग्रेजो का राज था। इसी वर्ष पुरातत्वविदों ने पंजाब प्रान्त में हड़प्पा नामक स्थल से एक खण्डहर की खोज की। इसके अध्ययन से पता चला कि यह एक नगरीय–सभ्यता के अवशेष हैं। इसी प्रकार सिन्ध प्रान्त में एक और गॉव मिला जिसको लोग मोहनजोदड़ो कहते हैं। जिसका मतलब है– मृतकों का टीला यह भी एक नगरीय सभ्यता थी, क्योंकि यह अवशेष सिन्धु नदी घाटी में प्राप्त हुए थे इसलिए इस सभ्यता को सिन्धु नदी घाटी की सभ्यता कहते है।

सिन्धु सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। यह भारत की पहली नगरीय सभ्यता थी। इसके निवासी बहुत शांतिप्रिय थे क्योंकि यहॉ से लड़ाई के अस्त्र–शस्त्र बहुत ही कम संख्या में मिले हैं। सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों को है। सिन्धु घाटी के लोग सूती कपड़ों का प्रयोग किया करते थे। सभी भारतीय लिपियॉ बाऍ से दाऍ लिखी जाती है लेकिन हड़प्पा की लिपि दाऍ से बाऍ लिखी जाती थी।

सिन्धु घाटी के घरों में उतरने के लिए सीढ़ियॉ बनी थीं। ईमारतें आयताकार थीं। दो मंजिला घर बने थे। दीवारें पक्की ईटों की बनी थीं। सड़कों के किनारे पक्की नालियॉ बनी थी। हर घर की नाली बड़े नाले से मिल जाती थी।

क्रियाविधि– शिक्षक केसस्टडी के शीर्षक को छात्रों के समक्ष बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत करेगा, ताकि उनमें सिन्धु घाटी की सभ्यता के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता उत्पन्न की जा सके।

इसके अंतर्गत हम छात्रों से निम्नलिखित तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करने को कहेगें–

- ❖ सिन्धु घाटी की सभ्यता के अवशेष किस स्थान पर मिले हैं?
- ❖ सिन्धुघाटी की सभ्यता को शहरी या नगरीय सभ्यता क्यों कहेगें?
- ❖ सिन्धु घाटी की सभ्यता में इमारतें किस प्रकार की थीं?
- ❖ सिन्धु सभ्यता के लोग अनाज को किस स्थान पर रखते थे?
- ❖ सिन्धु सभ्यता में पायी जाने वाली कुछ प्रमुख वस्तुओं के नाम बताइए– जैसे– पत्थर या मिट्टी की बनी चौकोर वस्तुऍ।

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त की जा सकती है–

- ❖ सक्रिय सुगमकर्ता रूपी शिक्षक द्वारा
- ❖ पाठ्यपुस्तक एवं पुस्तकालय से
- ❖ मित्रों से
- ❖ अभिभावक एवं अन्य व्यक्तियों से

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों से मिली जानकारियों का गहन अध्ययन करके उससे प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुवार प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष–

- ❖ पुरातत्वविदों ने जब पंजाब प्रान्त में हड़प्पा नामक स्थल के खण्डहरों का अध्ययन किया, तब इन्हें ज्ञात हुआ है कि यह एक नगरीय सभ्यता थी। क्योंकि
  - – शहरों में बड़ी–बड़ी इमारतें मिली
  - – दो मंजिला घर मिले
  - – अमीर लोगों की कोठियॉ थी
  - – गरीब कारीगरों के छोट–छोटे घर थे
  - – दीवारें पक्की ईटों की बनी थी
  - – सड़कों के किनारे पक्की नालियॉ थी
  - – अनाज गोदामों में रखा जाता था
- ❖ सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेष पंजाब प्रान्त में हड़प्पा नामक स्थान पर व सिन्धु प्रान्त में मोहनजोदड़ो नामक गॉव में मिले है। यह इलाका आज पाकिस्तान देश में आता है।
- ❖ मोहनजोदड़ो में एक बड़ा स्नानागार मिला है। इसके चारों तरफ कमरे बने हुए हैं। इससे पता चलता है कि यहॉ के लोग सफाई और स्वच्छता के प्रति जागरूक थे।

केस स्टडी कक्षा–6

विज्ञान

विद्यार्थियों को वैज्ञानिकों के नाम देकर उनके जीवन परिचय, शिक्षा दीक्षा, आविष्कार एवं नोबेल पुरस्कार आदि के बारे में अध्ययन करने को कह सकते है।

मैडम क्यूरीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व–

(चित्र, जीवन परिचय, शिक्षा–दीक्षा, आविष्कार एवं नोबेल पुरस्कार)

(उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए)

सामान्य परिचय– मैडम क्यूरी का जन्म 7 नवंबर, 1867 को पोलैण्ड के वॉरसा नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम ब्लादिस्लावस्कलोडोलका था जो एक स्कूल के मास्टर थे, माता का नाम मादामस्कलोडोलका था। मैडम क्यूरी की तीन बहनें और एक भाई था।

शिक्षा–दीक्षा– आपने उच्च शिक्षा युनिवर्सिटी आफ पेरिस से प्राप्त की।

आविष्कार– आपने रेडियो–एक्टिवता, पोलेनियम और रेडियम का आविष्कार किया।

पुरस्कार– 1903 में फिजिक्स में नोबेल प्राइज मिला जो कि रेडियो एक्टिविटी की खोज के लिए दिया गया। 1903 में डेबी मेडल, 1904 में कैमिस्ट्री में नोबेल प्राइज तथा 1911 में रेडियम के शुद्धिकरण के लिए पुरस्कार मिला।

मृत्यु– आपका देहावसान 66 वर्ष की अवस्था में जुलाई 1934 में हुआ।

नोट– विद्यार्थियों को संबंधित वैज्ञानिक के संबंध में उक्त विवरण से जानकारी प्रदान कर उनसे निम्न प्रश्न कर उत्तर प्राप्त किये जा सकते है–

प्रश्न–1 मैडम क्यूरी का जन्म कब हुआ?

प्रश्न–2 मैडम क्यूरी का जन्म कहॉ हुआ?

प्रश्न–3 मैडम क्यूरी ने उच्च शिक्षा कहॉ से प्राप्त की थी?

प्रश्न–4 मैडम क्यूरी ने कौन–कौन से आविष्कार किये?

प्रश्न–5 मैडम क्यूरी को कौन–कौन से नोबेल पुरस्कार प्राप्त है?

इसी प्रकार– न्यूटन, अल्वर्ट आइंस्टाइन, एडवर्ड जेनर, एलेक्जेण्डर फ्लेमिंग, गैलीलियों, मारकोनी आदि विदेशी वैज्ञानिकों के साथ–2 भारतीय वैज्ञानिक सर सी0वी0 रमन, एस0 रामानुज, जे0सी0 बोस, होमी जहॉगीर भाभा, विक्रम साराभाई आदि पर केस स्टडी तैयार करायी जा सकती है।

केस स्टडी

कक्षा–7

विषय– हिन्दी

प्रस्तावना– महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व शाक्य गणराज्य में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। जातक कथाओं में बोधिसत्व के नाम से विभिन्न रूपों में उनके पूर्व जन्मों का उल्लेख किया गया है। इन कथाओं में महात्मा बुद्ध को बोधिसत्व के रूप में संबोधित किया गया है। बोधिसत्व का अर्थ है– वह व्यक्ति जो बुद्धत्व (अध्यात्म ज्ञान) को प्राप्त करने का अधिकारी हो, पर अभी बुद्ध नहीं हो पाया हो। कहा जाता है कि वे गौतम बुद्ध के रूप में प्रकट हाने से पहले लगभग 550 बार विभिन्न योनियों में जन्म लेकर लोकोपकार का कार्य कर चुके है।

प्रस्तुत पाठ "राजधर्म" में ऐसी ही एक जातक कथा का वर्णन है, जिसमें बताया गया है कि राज्य का राजा जैसा आचरण करता है, उसका प्रभाव उस राज्य की प्रजा के साथ–साथ संपूर्ण पर्यावरण पर भी पड़ता है।

उद्देश्य– छात्र "राजधर्म" नामक जातक कथा के माध्यम में श्रेष्ठ व्यक्ति के गुणों के महत्व को समझ सकेगें एवं अन्याय और अधर्म के दुष्प्रभावों को जान सकेगें।

आवश्यकता– प्रस्तुत "राजधर्म" कहानी के माध्यम से राज्य का संचालन कैसे व्यक्ति को करना चाहिए, इस तथ्य का विश्लेषण करेगें। कहानी के विस्तार में प्रयोग आने वाले विश्लेषण शब्दों की जानकारी प्राप्त करेगें। छात्रों में कहानी के माध्यम से मिश्र वाक्यों के बनाने की क्षमता विकसित करना कठिन शब्दों को वाक्य प्रयोग करने का कौशल विकसित करना। किसी काल्पनिक कहानी को कक्षा के छात्रों के अध्ययन से पूरी करने का कौशल विकसित करना।

पूर्व ज्ञान– छात्र कहानी के संवादों को शुद्ध उच्चारण, आरोह–अवरोह के साथ भाव ग्रहण करने की क्षमता रखते है। अपने अनुभवों को क्रमबद्ध रूप से व्यक्त करने एवं लिखकर प्रस्तुत करने का कौशल रखते है। विराम चिह्न एवं विशलेषण को छॉटकर अलग लिख सकते है।

किया विधि–

प्रश्न–1 प्रस्तुत पाठ "राजधर्म" में एक राजा के आवश्यक गुण कौन–कौन से बताए गए है। बताइये?

प्रश्न–2 राजा ब्रहमदत्त वेश बदलकर किस व्यक्ति को ढूंढ रहे थे?

प्रश्न–3 बोधिसत्व जंगल में क्या खाते थे?

प्रश्न–4 कुछ ऐसे फलों के नाम बताओ, जिन्हें आपने खाया हो।

प्रश्न–5 बोधिसत्व ने राजा को गोदों के मीठे और स्वादिष्ट होने का क्या कारण बताया?

प्रश्न–6 राजा ने अधर्म और अन्याय से राज्य चलाना क्यों शुरू किया?

प्रश्न–7 मूल शब्द में 'तर' एवं 'तम' लगाने से विशेषण शब्द बनता है। जैसे– श्रेष्ठ–श्रेष्ठतर–श्रेष्ठतम, इसी प्रकार नीचे दिए गये शब्दों के विशेषण शब्द बनाइए।

अधिक, सरल, उच्च, कठिन, निम्न

प्रश्न–8 निम्नलिखित विलोम शब्दों के जोड़े बनाइये–

शब्द	विलोम
अधार्मिक	नीरस
सुगम	अवगुण
हर्ष	धार्मिक
गुण	दुर्गम
सरस	विषाद
	सहित

प्रश्न–9 "राजा ही नेता होता है। राजा के धर्म विमुख होने पर सारा राज्य दुख को प्राप्त होता है" उपरोक्त कथन कहानी में किसने किससे कहा? बताइये।

प्रश्न–10 भन्ते मैंने ही पहले गोदों को मीठा कर फिर कड़वा किया। अब फिर उन्हें मीठा करूँगां और कभी उन्हें कड़वा नहीं होने दूँगा। यही मेरा संकल्प और व्रत है।

यह कथन किसका है? बताइये

विश्लेषण– छात्र पाठ्यपुस्तक में "राजधर्म" कहानी पढ़कर एवं अन्य स्रोतों से गौतम बुद्ध की शिक्षाओं के बारे में जानकारी इकट्ठा करेगें।

- जातक कथाओं की उपयोगिता को समझेगें।
- प्रस्तुत कहानी का स्वंय विश्लेषण करेगें एवं निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचगें।

निष्कर्ष–

प्रश्न–1 "राजधर्म" में राजा के धर्मप्रियता और न्यायपरायण आदि गुणों को बताया है।

प्रश्न–2 राजा ब्रहमदत्त वेश बदलकर ऐसे व्यक्ति को ढूँढ रहे थे, जो उनके दोष बता सके।

प्रश्न–3 बोधिसत्व जंगल से पके गोंद लाकर खाते थे।

प्रश्न–4 आम, अमरूद, सेब, केला, जामुन, बेर, संतरा, अनार, नाशपाती आदि। (छात्रानुसार)

प्रश्न–5 बोधिसत्व ने राजा को गोदों के मीठे और स्वादिष्ट होने का कारण यह बताया कि "महापुण्य, राजा निश्चय ही धर्मानुसार और न्यायपूर्वक राज करता है, उसी से ये इतने मीठे और स्वादिष्ट है।

प्रश्न–6 बोधिसत्व के अनुसार "राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर तेल, मधु, शक्कर आदि तथा जंगल के फल–फूल सभी कड़वे और स्वादहीन हो जाते है और सारा राष्ट्र

ओजरहित हो जाता है, दूषित हो जाता है। बोधिसत्व के कथन की परीक्षा एवं उनकी बात में कितनी सच्चई है, इसी बात को जानने के लिए राजा ने अधर्म और अन्याय से राज्य चलाना शुरू किया।

प्रश्न–7

अधिक	–	अधिकतर	–	अधिकतम
सरल	–	सरलतर	–	सरलतम
उच्च	–	उच्चतर	–	उच्चतम
कठिन	–	कठिनतर	–	कठिनतम
निम्न	–	निम्नतर	–	निम्नतम

प्रश्न–8

शब्द	–	विलोम
अधार्मिक	–	धार्मिक
सुगम	–	दुर्गम
हर्ष	–	विषाद
गुण	–	अवगुण
सरस	–	नीरस

प्रश्न–9 उपरोक्त कथन बोधिसत्व ने राजा से कहा।

प्रश्न–10 उपरोक्त कथन राजा ने बोधिसत्व से कहा।

केस स्टडी कक्षा–7
विषय–अंग्रेजी

शीर्षक – Tree
केस स्टडीकर्ता–
नाम–
विद्यालय–
मार्गदर्शक–

प्रस्तावना/आवश्यकता– बच्चों ने अपने आसपास के वातावरण के विभिन्न प्रजाति के पेड़ों को देखा है। पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों की भूमिका एवं महत्व की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। उन्हें इस तथ्य से अवगत करना है कि हमारा अस्तित्व पेड़ों से जुड़ा हुआ है। हमें कितना कुछ देते है और हमें केवल उन्हें संरक्षित करना है।

उद्देश्य–

1. बच्चों को पेड़ के भागों के अंग्रेजी नाम की जानकारी देना।
2. उन्हें पर्यावरण संरक्षण के प्रति मनुष्य के दायित्व से अवगत कराना।
3. पर्यावरण संरक्षण में पेड़ों की भूमिका याद दिलाना।
4. उन्हें अर्थ ढूँढने के लिए dictionary का प्रयोग करने को प्रेरित करना।

पूर्व ज्ञान– बच्चे पेड़ों के भागों के हिन्दी नाम से परिचित हैं। पेड़ों से प्राप्त लाभों का भी उन्हें संक्षिप्त ज्ञान है। वे dictionary से शब्दों के अर्थ खोजना भी जानते हैं।

किया विधि– छात्रों को diagram के माध्यम से वृक्ष के भागों को अंग्रेजी नामों से परिचित कराएगें और उन्हें इन भागों के कार्य/भूमिका पता करके लिखने का कार्य दिया जायेगा। इसके पश्चात उन्हें आस–पास के विभिन्न वृक्षों के नाम पता कर उनकी एक विशेषता लिखने को कहा जायेगा। जिसे वे विभिन्न माध्यमों से करेगें।

कियान्वयन–

1. वृक्ष के चित्र को देखकर उसके भागों के नाम हिन्दी में बताओ और उनके कार्य भी लिखो। इसके लिए dictionary की सहायता ले सकते है।

2. तुम्हारे घर के आस पास लगे 6–7 वृक्षों के नाम पता करो। जिसमें एक बड़ी मोटी trunk हो। इन वृक्षों से मिलने वाला एक लाभ/वस्तु भी लिखो। यह भी पता करो कि इन वृक्षों को तुम से क्या प्राप्त हुआ/होता है।(प्रयास करो कि दोहराव न हो)

3.

क्र0सं0	वृक्ष का नाम	हमें वृक्ष ने क्या दिया	हमने वृक्ष को क्या दिया

(शिक्षक इन नामों/वस्तुओं का अंग्रेजी नाम बताए)

जानकारी कहाँ से प्राप्त की–

1. पुस्तकें
2. आसपास से पूछ कर
3. शब्दकोश की सहायता ली

विश्लेषण– इस केस स्टडी के माध्यम से जहाँ छात्रों ने कई अंग्रेजी शब्दों की जानकारी प्राप्त की वहीं पेड़ों/पर्यावणरण के प्रति अपने दायित्वों पर भी पुनर्विचार किया।

निष्कर्ष/मूल्यांकन– एक maze/puzzle के माध्यम से इन बात का मूल्यांकन सफलतापूर्वक किया जा सकता है कि उन्होंने कितने नामों का अंग्रेजी version सीख लिया है।
eg. इस puzzle में पेड़ के 8 भागों के नाम छुपे हुए हैं। ढूढ़ो तो जरा।

S T E M K P L S R K
Z R S A S T G P O M
E P J L E A F D O E
T Y G T J H R N T J
R O B R A N C H R P
U T T A N G F S T J
N L S O G F R U I T
K E N E F M P J T A
T O O S F L O W E R
B U D P O S L U G J

केस स्टडी कक्षा– 7

विषय– समाजिक अध्ययन

शीर्षक– दुर्घटना
केस स्टडी परिचय–
विद्यालय का नाम–
मार्गदर्शक का नाम–
प्रस्तावना–

पेज नं0 60–61, *Oskar Social Studies -1*

उद्देश्य– यातायात के नियमों की जानकारी एवं उनका पालन करना।

केस स्टडी की आवश्यकता एवं महत्व– लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण दिनों–दिन भीड़ बढ़ती चली जा रही है। हम सभी प्रतिदिन अखबार, रेडियो, टी0वी0 के माध्यम से सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं के बारे में पढ़ते, सुनते और देखते है। ज्यादातर दुर्घटनाए लापरवाही व जल्दबाजी के कारण होती है और कभी–कभी एक छोटी सी गलती बड़ी दुर्घटना का कारण बन जाती है। यदि हम सावधान रहें तो इससे बचा जा सकता है। इसके लिए यातायात के कुछ नियम बनाए गए है जिनका पालन करके न केवल हम सुरक्षित रहेगें बल्कि दूसरे लोगों का भी जीवन बचा सकते है।

केस स्टडी के पूर्व ज्ञान की जानकारी– यातायात के निम्नलिखित नियम है–

- सड़क पर सदैव अपनी बायीं ओर चलें।
- सड़क पार करने के लिए सुरक्षित स्थान चुनें।
- यदि फुटपात हो तो उसका प्रयोग करें।
- सड़क पार करते समय पहले अपनी दांयी ओर देखें और पुनः बांयी ओर देखें, ट्रैफिक नहीं आ रहा हो तो जल्दी से सड़क पार करें।

- o सड़क पार करते समय ट्रैफिक की ओर देखें और उसकी आवाज पर ध्यान दें।
- o यदि फुटपाथ हो तो उसका प्रयोग करें, यदि न हो तो अपनी बांयी, दांयी ओर देखें, ट्रैफिक नहीं आ रहा हो तो जल्दी से सड़क पार करें।
- o यदि महानगरों में जाये तो चौराहा या सिग्नल (लाल/हरी) देख कर चौराहा पार करें।
- o यदि सामने लाल बत्ती जल रही है तो चौराहा पार न करें।
- o रात में वाहन चलाते समय संकेतक (Indicator) का प्रयोग करें।
- o साईकिल या मोटर साईकिल चलाने वाले को मोड़ पर हार्न से इशारा करके मुड़ना चाहिए।
- o ट्रैक्टर ट्राली, ट्रक पर क्षमता से अधिक बोझ न लादें।
- o दो पहिया वाहन को चलाते समय हेलमेट का प्रयोग अवश्य करें।

किया विधि– निम्नलिखित बिन्दुओं को उपर्युक्त से भी समझें–

- सड़क पर चलते समय हमें किस ओर चलना चाहिए?
- सड़क पार करते समय किस बात का ध्यान देना चाहिए?
- साइकिल सवार को मुड़ने से पहले क्या करना चाहिए?
- चलती हुई बस से हमें क्यों नहीं उतरना/चढ़ना चाहिए?
- बस की खिड़की से शरीर का कोई भी हिस्सा बाहर क्यों नहीं निकालना चाहिए?
- दुपहिया वाहनों पर दो से अधिक व्यक्ति क्यों नहीं बैठने चाहिए?
- साइकिल/मोटर साइकिल को तेजगति से क्यों नहीं चलाना चाहिए?
- नशीली दवाओं या शराब पीकर वाहन क्यों नहीं चलाना चाहिए?
- वाहन चलाते समय मोबाइल से बात क्यों नहीं करना चाहिए?
- बहुत अधिक गुस्से, थकान में वाहन क्यों नहीं चलाना चाहिए?
- दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट क्यों पहनना चाहिए?

स्रोत– समुदाय के लोगों, होल्डिंगस, ट्रैफिक सिग्नल से, मार्गदर्शक एवं पाठ्यपुस्तक से, समाचार पत्रों एवं फिल्म आदि।

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों से मिली जानकारियों का गहन अध्ययन करके उनसे प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुवार लिखो।

निष्कर्ष– उपर्युक्त यातायात के नियमों एवं घटना का अध्ययन करने के बाद हमें निम्नलिखित बिन्दुओं की जानकारी हुई–

- अधिकतर दुर्घटनाओं में यातायात के नियमों को जानने के साथ–साथ उनका पालन नहीं किया गया था।
- ज्यादातर दुर्घटनाएं लापरवाही व जल्दबाजी के कारण हुई थी।
- यातायात के नियमों का पालन नहीं करने से कई प्रकार की दुर्घटनाएं हुई। दुर्घटना से प्रभावित व्यक्ति को आर्थिक नुकसान तो हुआ ही साथ ही साथ दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति आजीवन विकलांग भी हो गया और उसके भरण–पोषण की जिम्मेदारी परिवार को उठानी पड़ी।
- सड़क पर चलने वाले वाहनों के शोर–शराबे से ध्वनि प्रदूषण तथा उनसे निष्कासित गैस, धूएँ आदि से वायु प्रदूषण होता है।
- सम्पूर्ण भारत में भारतीय मानक के अनुसार यातायात के एक जैसे नियम बनाए गए है जैसे– हमेशा बांए से चले ताकि व्यक्ति भारत के किसी भी हिस्से में जाए तो उसे किसी प्रकार की असुविधा न हो।
- वाहन चलाते समय मोबाइल के प्रयोग से भी दुर्घटनाएं हुई।

केस स्टडी कक्षा–7

विषय– भूगोल

शीर्षक–भूंकप (घटना)

केस स्टडीकर्ता का परिचय–

छात्र/छात्रा का नाम–

वर्ग–

विद्यालय का नाम–

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– भूकंप एक अति तीव्रगामी विनाशकारी प्राकृतिक आपदा है और यह किसी भी समय आ सकती है। इसके आने पर काफी जन–धन की हानि होती है। अधिकतर लोग भवन के मलवे के नीचे ही दबकर मर जाते है क्योंकि स्थानीय भवन/मकान भूकंपरोधी नहीं बनाए जाते है। इसलिए यह जरूरी है कि हम भूकंप आने के कारण तथा उससे बचाव के उपायों को जानें।

उद्देश्य– भूकंप के आने के कारण तथा बचाव के उपायों को जानना।

केस स्टडी की आवश्यकता एवं महत्व– भूकंप के आने से सड़क, रेलपटरी, पुल, बिजली के खम्भे टूट जाते है तथा मकान और कल कारखाने आदि नष्ट हो जाते है। चूँकि भूकंप से प्रभावित क्षेत्रों में भूस्खलन क्रिया बड़ी तेजी से होती है इसलिए बड़े–बड़े भूभाग धॅस जाते है जिससे भारी मात्रा में धन–जन की हानि होती है। अतः जरूरी है कि हम भूकंप आने के कारणों और उससे बचने के उपायों को समझें ताकि इस प्राकृतिक आपदा के आने पर हमें कम से कम धन–जन की हानि हो।

पूर्व ज्ञान– पृथ्वी की पपड़ी का अचानक कॉप जाना ही भूकंप है। पृथ्वी की सतह से 300 किमी से 700 किमी की गहराई में भूकंप उत्पन्न होते है और इसे ही ''भूकंप'' मूल कहा जाता है। यह प्राथमिक, द्वितीय और धरातलीय तंरगों के माध्यम से चलता है। भूकंप आने के निम्न कारण हो सकते है–

- ज्वालामुखी विस्फोट

- पृथ्वी के आन्तरिक भाग में असन्तुलन
- चट्टानों की टूट–फूट
- अणु बम विस्फोट
- डाइनामाइट के कारण

क्रिया विधि–

- भूकंप क्या है, और क्यों आता है?
- भूकंप आने के कारण
- भूकंप आने पर हम क्या करें?
- भूकंप के लाभ और हानि

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त की–

- मार्गदर्शक / शिक्षक
- अभिभावक / समुदाय
- मित्रों से
- समाचार पत्र पत्रिकाओं, दूरदर्शन एवं रेडियो से
- पुस्तकालय एवं पाठ्य पुस्तक से

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों से मिली जानकारियों का गहन अध्ययन करके उनसे प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुवार लिखा।

- भूकंप एक अति तीव्रगामी, विनाशकारी प्राकृतिक आपदा है।
- भूकंप आने के प्राकृतिक और मानवकृत कारण होते है।
- भूकंप तरंगों के माध्यम से चलता है और यह तरंगें तीन प्रकार की होती है–
  1. प्राथमिक तरंगें 2. द्वितीय तरंगें 3. धरातलीय तरंगें।
- सुनामी लहरों से तटीय क्षेत्रों में धन–जन की हानि होती है।
- भूकंप नापने के पैमाने को **"रिएक्टर स्केल"** कहते है।
- भूकंपरोधी भवन / मकान बनाकर जनहानि को कम किया जा सकता है।
- सक्रिय आपदा प्रबंधन जैसे–भूकंप के समय स्कूल / भवन को खाली करना, खुले मैदान में दूर खड़े हो जाना, घुटने के बल में खुले में बैठ जाना / लेट जाना आदि।

केस स्टडी कक्षा–7

विषय– विज्ञान

शीर्षक– प्रेशर कुकर या तवा के हत्थे में लकड़ी या प्लास्टिक का ही हत्था क्यों लगा होता है?

केस स्टडी का परिचय–

छात्र/छात्रा का नाम–

वर्ग–

विद्यालय का नाम–

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– खाना पकाने के बर्तनों जैसे– हैण्डिल लगा तवा, कुकर, हैण्डिल लगा भगौना आदि के हैण्डल के ऊपर लकड़ी या प्लास्टिक का हत्था लगा होता है। इनको लगा देने से बर्तन गर्म होने पर भी हैण्डिल गर्म नहीं होता है। जिससे गर्म बर्तन को आग से उतारने में सुविधा होती है।

उद्देश्य– सुचालक एवं कुचालक पदार्थों की जानकारी देना तथा बच्चों को बताना कि प्रेशर कुकर या तवा के हत्थे में लकड़ी या प्लास्टिक का ही हत्था लगाते है।

केस स्टडी की आवश्यकता एवं महत्व– इस केस स्टडी को करने के बाद बच्चे दैनिक जीवन में सुचालक एवं कुचालक पदार्थ के महत्व को जान सकेगें। उन्हें यह भी पता चलेगा कि प्रेशर कुकर या तवा के हत्थे में लकड़ी या प्लास्टिक लगा देने से वह गरम नहीं होता जिससे गर्म बरतन को आग से उतारने में आसानी रहती है तथा जलने का खतरा नहीं होता।

पूर्व ज्ञान– जिन पदार्थों में ऊष्मा का संचरण सुगमता से नहीं होता है उन्हें कुचालक कहते है। लकड़ी, कॉच, कागज, ऊन, प्लास्टिक तथा वायु आदि ऊष्मा की कुचालक है। इसीलिए यदि सूखी लकड़ी के डंडे के एक सिरे को गर्म करते है तो दूसरा सिरा छूने पर गर्म प्रतीत नहीं हो पाता है। प्रेशर कुकर या तवा के हत्थे में लकड़ी या प्लास्टिक का हत्था लगाने के निम्नलिखित कारण हो सकते है–

- लकड़ी और प्लास्टिक जल्दी गरम नहीं होते है।
- कुछ ठोस पदार्थों जैसे लकड़ी या प्लास्टिक में ऊष्मा का संचरण सुगमता से नहीं होता है।

- लकड़ी या प्लास्टिक में अणु पास–पास होते है, जिसके कारण ऊष्मा इनसे होकर सरलता पूर्वक स्थानांतरित नहीं होती है।
- लकड़ी या प्लास्टिक जैसे पदार्थ ऊष्मा के कुचालक होते है।

क्रिया विधि–

- कुचालक पदार्थ किसे कहते है?
- कुचालक पदार्थ कौन–कौन से होते है?
- कुचालक और सुचालक पदार्थों में क्या अंतर है?
- प्रेशर कुकर या तवे के हत्थे में लकड़ी या प्लास्टिक क्यों लगी होती है?
- कुचालक पदार्थों जैसे लकड़ी या प्लास्टिक का दैनिक जीवन में प्रयोग करने से क्या लाभ होते है? उदाहरण

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त की–

- पाठ्य पुस्तक से
- मार्गदर्शक/शिक्षक
- मित्रों से/
- अभिभावक/समुदाय
- पुस्तकालय
- समाचार पत्र पत्रिकाओं, दूरदर्शन एवं रेडियो से

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों से मिली जानकारियों का गहन अध्ययन करके उनसे प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुवार लिखा जायेगा।

निष्कर्ष– उपर्युक्त केस स्टडी करने के बाद हमें निम्नलिखित जानकारी प्राप्त हुई–

- कुचालक पदार्थ वे पदार्थ होते है जिनमें ऊष्मा का स्थानांतरण सुगमतापूर्वक नहीं होता है।
- सुचालक पदार्थों में ऊष्मा का संचरण सुगमता पूर्वक होता है।
- प्लास्टिक, लकड़ी, कॉच, कागज आदि कुचालक पदार्थ है, जबकि लोहा, एल्यूमिनियम, पीतल आदि पदार्थ ऊष्मा के सुचालक होते है।
- ऊष्मा के कुचालक पदार्थों का दैनिक जीवन में उपयोग किया जाता है।

केस स्टडी कक्षा– 8

विषय– हिन्दी

शीर्षक– 'बिटिया के लिए' कविता

केस स्टडीकर्ता का परिचय–

छात्र/छात्रा का नाम–

वर्ग–

विद्यालय का नाम–

सुमगकर्ता/शिक्षक का नाम–

प्रस्तावना– पेड़ो के झुनझने बजने लगे, लुढ़कती आ रही है,

सूरज की लाल गेंद उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी।
तूने जो छोड़े थे, गैस के गुब्बारे, तारे अब दिखायी नहीं देते
जाने कितने ऊपर चले गये, तूने जो नचायी थी फिरकी,
चॉद, देखा अब गिरा, अब गिरा, उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी है।
तूने थपकियॉ देकर, जिन गुड्डे–गुड्डियों को सुला दिया था,
टीले, मूँह रंग ऑख मलते हुए बैठे है।
गुड्डे की जरतारी टोपी, उल्टी नीचे पड़ी है, छोटी तलैया,
वह देखो उड़ी जा रही है चूनर, तेरी गुड़िया की, झिलमिल नदी।
उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी है।

उद्देश्य– कविता में उपमा का प्रयोग एवं इसका महत्व जान सकेगें।

केस स्टडी की आवश्यकता– 'नयी कविता' में तुक या छंद के बदले उपमा का प्रयोग अधिक होता है। उपमा वह तस्वीर होती है। जो शब्दों को पढ़ते समय हमारे मन में उभरती है। कवि शब्दों की ध्वनि की मदद से ऐसी तस्वीर बनाते हैं कि उसका चित्र हमारे मन में बन जाता है।

प्रस्तुत कविता में प्रयुक्त उपमाओं के प्रयोग एवं भावार्थ को जानकर 'नयी कविता' के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेगें।

पूर्व ज्ञान– छात्र पूर्व कक्षाओं में कविता से परिचित है। वह सस्वर कविता पाठ करके कविता के उतार–चढ़ाव से परिचित है।

शब्दों के अर्थ एवं भावों को प्रकट करने की क्षमता उनमें विकसित की जा रही है। ताकि वह काव्यात्मक रचना का रसास्वादन कर सकें।

कियाविधि–

1. प्रस्तुत कविता के रचयिता का नाम बताइये।
2. (i) पेड़ों के झुनझने बले लगे, लुढ़कती आ रही है,

सूरज की लाल गेंद

(ii) वह देखो उड़ी जा रही है चूनर,

तेरी गुड़िया की, झिलमिल नदी।

उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ लिखिए एवं इन पंक्तियों में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषणों को छॉटकर लिखिए।

3. कवि ने सूरज को लाल गेंद कहा है, बताइए चन्द्रमा, तारे, ओसकण और वर्षा को आप क्या कह सकते है?
4. सुबह हो गयी, का अर्थ केवल प्रातःकाल से ही न होकर और क्या हो सकता है?
5. प्रस्तुत कविता में निम्नलिखित उपमानों को किन शब्दों में प्रयोग किया गया है।

उपमान		उपमेय
सूरज	–	लाल गेंद
तारे	–	
चॉद	–	
टीले	–	
छोटी तलैया	–	
झिलमिल नदी	–	

6. इस कविता में तुकान्त शब्द नहीं है, फिर भी इसकी सरसता बनी हुई है, आप भी अतुकान्त कविता बनाकर प्रस्तुत कीजिए।
7. कवि का संकेत है कि अब नारी जागरण का समय आ गया है। उसे अब गुड्डा–गुड्डी से ही बॅधकर नहीं रहना है। नया सबेरा उसके लिए नया क्षितिज खोल रहा है, प्रस्तुत कविता को इसी संदर्भ में समझकर उसकी व्याख्या कीजिए।
8. प्रस्तुत कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त की–

1. शिक्षक/सुलभकर्ता
2. अभिभावक/समुदाय के अन्य लोग
3. बच्चों के खिलौने
4. प्राकृतिक वस्तुए/दृश्य
5. पाठ्य–पुस्तक

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों का गहन अध्ययन करके प्रस्तुत कविता की इस प्रकार व्याख्या की जाएगी।

निष्कर्ष–

1. प्रस्तुत कविता के रचयिता श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हैं।
2. (i) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि–

   पेड़ों के पत्ते जो हवा के झोंके से आवाज कर रहे है, मानो ऐसा लग रहा है जैसे बच्चों का झुनझुना (खिलौना) बज रहा है, और प्रातःकाल का सूरज ऐसे धीरे–धीरे निकल रहा है, मानों बच्चों की गेंद लुढ़क कर आ रही है।

   (ii) इन पंक्तियों में कवि ने झिलमिल नदी की तुलना गुड़ियों की चुनरी से की है।

   अर्थात् एक लड़की क भविष्य को उगते सूरज के समान बताया गया है, जिसमें उसके युवावस्था में चूनर की तुलना झिलमिलाती नदी से की गई है।
3. चन्द्रमा को – रोटी, सुन्दर मुखड़ा, फिरकी

   तारे– जुगनू, गैस के गुब्बारे

   ओस कण– ऑसू

   वर्षा –

   छात्रों के अनुसार।
4. सुबह हो गयी है का अर्थ सम्पूर्ण नारी जागरण से है। अर्थात् नया सवेरा नारी के लिए नया क्षितिज खोल रहा है।
5. सूरज – लाल गेंद

   तारे – गैस के गुब्बारे

   चॉद – फिरकी

   टीले – गुड्डे–गुड़ियां

   छोटी तलैया– जरतारी टोपी

   झिलमिल नदी– चूनर
6. छात्र की अभिरूचि एवं क्षमतानुसार
7. छात्रानुसार
8. छात्रानुसार

केस स्टडी कक्षा–8

विषय– अंग्रेजी

शीर्षक– adjective/verbs

केस स्टडीकर्ता का परिचय–

छात्र/छात्रा का नाम–

वर्ग–

विद्यालय का नाम–

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– Parts of Speech जानना भाषा सीखने का अभिन्न अंग है। अक्सर देखा जाता है कि हमारे बच्चे nouns तो पहचानने लगते है पर adjective/verbs/adverbs आदि पहचानने में भ्रमित होते है। कुछ सरल तरीकों से उन्हें verbs या adjective पहचानने में सहायता की जा सकती है।

उद्देश्य–

1) बच्चों में parts of speech में विभेद करने की सामर्थ्य विकसित करना।
2) विभिन्न parts of speech को identify कर पाने की क्षमता विकसित करना
3) बच्चों के शब्द भंडार में वृद्धि करना।
4) भाषा में verbs/adjectives के प्रयोग/भूमिका स्पष्ट करना।

कार्ययोजना– कुछ model वाक्य/कहानी तैयार कर उनके माध्यम से संबंधित part of speech की ओर छात्र का ध्यान प्रश्नोत्तर/वार्तालाप के माध्यम से आकर्षित करेगें। फिर चयनित भागों को generalize कर स्पष्ट करेंगे कि वह कौन सा parts of speech है।

1) Ram is writing
2) Sita is sleeping
3) The cat drinks milk.
4) The mouse is jumping
5) The tigers are sleeping.
6) The dog barks.
7) The man is running.

कार्यविधि–

1) इन वाक्यों में किन किन के बारे में बात की जा रही है?

2) अच्छा बताओ तो ये क्या–क्या कर रहे है?

3) तुम्हें एक list दी जा रही है इसमें colum A में जो नाम लिखे है उनके सामने वाक्यों से चुनकर उन शब्दों को लिखो जो यह बताते है कि ये क्या कर रहे है?

A

1) Tiger -

2) Ram -

3) Sita -

4) Dog -

5) Cat -

6) Mouse -

7) Man -

4) चलो अब एक और set of sentences देखते है। इन्हें पढ़कर देखो–

2) Ram is a good boy.

3) Sita is a lazy girl.

4) This is a fat cat.

5) The tigers are big.

6) He is a tall man.

7) The mouse is small.

8) It is a black dog.

5) अब जैसे पहले तुमने जो list बनाई थी वैसी ही list देखते है और इसे पढ़कर बताओ कि यहॉ ये लोग क्या कर रहे हैं

A		B
Tiger	-	big
Ram	-	good
Sita	-	lazy
Dog	-	black
Cat	-	fat
Mouse	-	small

Man - tall

6) यह दूसरी वाली list क्या बाता रही है?

7) पहली list के words और दूसरी list के words जो जानकारी दे रहे है उनमें अन्तर क्या है?

8) **विश्लेषण–निष्कर्ष–** किये गये कार्य व छात्र के उत्तरों का विश्लेषण करते हुए प्राप्त निष्कर्षों का **सामान्यीकरण** कर लिखा जायेगा।

verb- वे शब्द है जो .....

adjective वे है जो .....

9) कक्षा 8 की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक के पाठ–2 (The parrot and the Mango) के प्रथम अनुच्छेद को पढ़कर verbs और adjective की listing करें।

केस स्टडी कक्षा–8

विषय– विज्ञान

शीर्षक– इन्द्र धनुष बनाना।

केस स्टडीकर्ता का परिचय–

छात्र/छात्रा का नाम–

वर्ग–

विद्यालय का नाम–

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– वर्षों के पश्चात कभी–कभी आकाश में धनुष के आकार में बैगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी तथा लाल सात रंगों की पट्टियॉ दिखाई देती है, इसे हम इन्द्रधनुष कहते है। यह प्रकाश की श्वेत किरण को विभिन्न रंगों में विभक्त हो जाने के कारण होता है। विभिन्न रंगों का यह समूह वर्णक्रम कहलाता है तथा इसमें रंगों का क्रम निश्चित होता है। प्रकाश की श्वते किरण के विभिन्न रंगों में बॅट जाने की क्रिया को वर्ण विक्षेपण कहते है।

उद्देश्य– बच्चों को वर्णक्रम एवं वर्ण विक्षेपण की जानकारी देना तथा बच्चों को बताना कि इन्द्रधनुष क्यों और कैसे बनता है।

केस स्टडी की आवश्यकता एवं महत्व–इस केस स्टडी को करने के बाद बच्चे जान सकेगें कि श्वेत प्रकाश जल वाष्प से होकर गुजरता है तो जल वाष्प एक प्रिज्म की तरह कार्य करती है जिसके कारण यह श्वेत प्रकाश सात रंगों में बट जाता है। आकाश में बनी सात रंगों की यही पट्टी 'इन्द्रधनुष' कहलाती है। वर्ण विक्षेपण एवं वर्ण क्रम को भी बच्चे समझ सकेगें।

पूर्व ज्ञान– वर्षा ऋतु में जब तेज वर्षा होने के बाद हम आसमान की तरफ देखते है तो हमें विभिन्न रंगों से मिलकर बनी एक धनुष जैसी आकृति दिखाई देती है, इसे हम इन्द्रधनुष के नाम से जानते है। यह बैगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी तथा लाल रंग की पट्टियों से मिलकर बनता है तथा इन रंगों का क्रम निश्चित होता है। वर्षा के बाद आकाश में इन्द्रधनुष बनने के निम्नलिखित कारण हो सकते है–

- वर्षा के पश्चात् वायुमण्डल में उपस्थित जल की प्रत्येक बूँद एक छोटे प्रिज्म की तरह व्यवहार करती है।
- वर्ण विक्षेपण की क्रिया होती है।
- जब सूर्य का श्वेत प्रकाश जल की बूँद से होकर गुजरता है तो वह अपने घटक रंगों में विभक्त हो जाता है।
- रंगों का क्रम निश्चित होता है।
- आकाश में सतत् रूप से बनी सात रंगों की यही पट्टियॉ इन्द्रधनुष के रूप में हमें दिखाई देती है।

क्रिया विधि–

- प्रिज्म कैसा होता है?
- प्रिज्म से निर्गत श्वेत प्रकाश कितने रंगों में विभक्त होता है?
- वर्ण क्रम किसे कहते है?
- वर्ण विक्षेपण किसे कहते है?
- इन्द्रधनुष कैसा होता है?
- वर्षा होने के बाद वायुमण्डल में उपस्थित जल की प्रत्येक बूँद कैसी दिखती है?
- प्रिज्म और वर्षा के बाद वायुमण्डल में उपस्थित जल की बूँद में क्या समानता होती है?
- इन्द्रधनुष में रंगों का क्रम कैसा होता है?

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त की–

- मार्गदर्शक / शिक्षक
- अभिभावक / समुदाय
- मित्रों से
- समाचार पत्र पत्रिकाओं, दूरर्शन एवं रेडियो से

- पुस्तकालय एवं पाठ्य पुस्तक से

विश्लेषण– उपर्युक्त स्रोतों से मिली जानकारियों का गहन अध्ययन करके उनसे प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुवार लिखा।

निष्कर्ष– उपर्युक्त केस स्टडी करने के बाद हमें निम्नलिखित बिन्दुओं की जानकारी प्राप्त हुई–

- इन्द्रधनुष बनने में वर्ण–विक्षेपण की क्रिया होती है।
- वर्षा के बाद वायुमण्डल में उपस्थित पानी की बूँदें कॉच के प्रिज्म की तरह व्यवहार करती है।
- इनसे गुजरने वाला श्वेत प्रकाश सात रंगों में बँट जाता है।
- इन रंगों का क्रम निश्चित होता है।
- विभिन्न रंगों का समूह वर्ण क्रम कहलाता है।
- यह सात रंग बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी तथा लाल (VIBGYOR) होते है
- यह सातों रंग आसमान में सतत रूप से सात रंगों की पट्टियों के रूप में वर्षा होने के बाद हमें धनुष जैसी आकृति की तरह दिखाई देता है, जिसे हम ''इन्द्रधनुष'' कहते है।

केस स्टडी कक्षा– 8

विषय– भूगोल

शीर्षक– रबी की फसल (गेहूँ)

केस स्टडीकर्ता का परिचय– **छात्र/छात्र का नाम–**

मार्गदर्शक का नाम–

प्रस्तावना– हमारा भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश में लगभग 70 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर है। देश की कुल राष्ट्रीय आय का लगभग 29 प्रतिशत कृषि से प्राप्त होता है। विभिन्न प्रकार की जलवायु तथा विविध मिट्टियों के कारण देश में लगभग सभी प्रकार की फसलें उगायी जाती है। देश में पैदा होने वाले फसलों को तीन वर्गों में रखा जाता है

खाद्यान्न फसले– गेहूँ, चावल, जौं, चना, मटर, दालें, ज्वार, बाजरा आदि।

नकदी फसलें– गन्ना, कपास, जूट, तिलहन, तंबाकू आदि।

पेय व बागानी फसलें– चाय, कहवा, रबड़, गर्म मसाले आदि।

उद्देश्य– गेहूँ के फसल के संबंध में जानकारी प्राप्त करना।

पूर्वज्ञान– छात्र अक्सर अपने गांव के लोगों को अलग–अलग फसलें बोने तथा काटते देखते है। बोने और काटने के समय के आधार पर हमारे प्रदेश में मुख्यतः तीन प्रकार की फसल होती है–

रबी की फसल– समय– जाड़े के आरम्भ में बोना और ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में काटना।

उपजें– गेहूँ, चना, जौं, मटर, सरसों, अलसी एवं राई।

खरीफ की फसलें– समय– वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में बोना और शीत ऋतु के प्रारम्भ में काटना।

उपजें– धान, चना, जौं, मटर, सरसों, अलसी, राई आदि।

जायद की फसलें– समय– मार्च, अप्रैल में बोना उपज तैयार होने पर काटना।

उपजें– तरबूजे, खरबूजे, ककड़ी, सब्जियॉ आदि।

क्रिया विधि–

1. गेहूँ के लिये, कैसी जलवायु होनी चाहिए?

2. गेहूँ के लिये कौन सी मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है?
3. गेहूँ की फसल को पकते समय किस प्रकार के मौसम की आवश्यकता होती है?
4. गेहूँ को खाद्यान्न फसल क्यों कहा जाता है?
5. खाद्यान्न व नकदी फसल में क्या अंतर है?
6. विश्व में सर्वाधिक गेहूँ कहॉ पैदा होता है?
7. भारत में गेहूँ उत्पादक प्रमुख राज्य कौन–कौन से है?
8. भारत में गेहूँ उत्पादक गौण राज्य (जहॉ कम गेहूँ की पैदावार होती है) कौन–कौन से है?
9. भारत में किस राज्य में सर्वाधिक गेहूँ पैदा होता है?
10. गेहूँ का प्रयोग क्या–क्या बनाने में किया जाता है?
11. उत्तर भारत के लोगों का प्रमुख भोजन गेहूँ क्यों है?
12. हमारे प्रदेश में गेहूँ की सिंचाई के लिए कौन–कौन से संसाधन प्रयोग किये जाते है?
13. यदि आपको अपने खेत में बोना है तो आप क्या बोना पंसद करेगें और क्यों?

उपर्युक्त बिन्दुओं की जानकारी निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त की–

1. मार्गदर्शक / शिक्षक
2. गांव के लोग / बुड़े बुजुर्ग
3. स्वयं खेत में जाकर
4. समाचार पत्र पत्रिकाओं
5. रेडियो / दूरदर्शन पर कृषि कार्यक्रम के द्वारा
6. पुस्तकालय पाठ्य पुस्तक

विश्लेषण– उपयुक्त स्रोतों से प्राप्त जानकारियों का गहन अध्ययन करके उनसे प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुवार लिखा।

निष्कर्ष–

1. गेहूँ के लिए मध्यम तापमान एवं वर्षा और फसल की कटाई के समय तेज धूप की आवश्यकता होती है।
2. गेहूँ के लिये दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है।
3. गेहूँ की फसल पकते समय तेज धूप की आवश्यकता होती है।
4. भारत में रोज के खाने में गेहूँ से बने पदार्थ आटा, मैदा, दलिया आदि का प्रयोग करीब एक तिहाई जनता द्वारा किया जाता है। इसलिए इसे खाद्यान्न फसल माना जाता है।
5. खाद्यान्न फसल वह होती है जिसका प्रयोग देश की जनता के द्वारा अधिक से अधिक खाने के लिए किया जाता है जबकि नकदी फसल वह होती है, जिसके द्वारा कोई भी सीधे बेच कर अधिक से अधिक मुद्रा (पैसे) कमाता है।

6. विश्व में सर्वाधिक गेहूँ– कनाडा
7. भारत में गेहूँ उत्पादक राज्य पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश है।
8. भारत में गेहूँ उत्पादन के गौण राज्य बिहार, पं0 बंगाल एवं राजस्थान है।
9. भारत में पंजाब राज्य में सर्वाधिक गेहूँ पैदा होता है।

नोट– प्रश्न 10 से 13 तक के उत्तर छात्रानुसार होंगे।

हिन्दी शिक्षण में नवाचार

बालकों में सभी दक्षताएं विद्यमान रहती हैं, शिक्षा का लक्ष्य उनका विकास करना होता है। "भाषा हमारी संवेदना है।" भाषा से बालक अपनी अभिव्यक्ति प्रदर्शित करता है साथ ही वे अपने विचारों को प्रकट करता है यही भाषा का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की सफलता के लिए छात्रों में संवेदनशीलता का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो छात्रों को सृजनशीलता एवं संस्कारमय बनाती है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षक सदैव किसी न किसी प्रकार की नूतन परिस्थितियों एवं नवाचारों की तलाश में रहते हैं। हिन्दी शिक्षण से संबंधित विभिन्न त्रुटियों एवं कठिनाइयों का अवलोकन करते हुए मैंने कुछ सार्थक प्रयास किये हैं जो निम्नवत हैं–

(1) **भाषा शिक्षण को रोचक कैसे बनाये?**

शिक्षक द्वारा अपनी विषय वस्तु को छात्रों को बोधगम्य कराने एवं सम्प्रेषण शक्ति का विकास करने हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक के पास पाठ के अतिरिक्त पर्याप्त रोचक सामग्री हो अतः शिक्षक निम्न क्रियाकलाप कर कक्षा शिक्षण को रोचक बना सकता है–

(क) **शब्दकड़ी**– शब्दकड़ी का अभ्यास भी छात्रों के शब्द भण्डार को बढ़ाने में सहायक है। जैसे–

समुद्र → नमक → गॉधी → शाबरमती → गुजरात.....

(ख) **अंत्याक्षरीः–** बच्चों को कक्षा में अंत्याक्षरी खेलना बहुत अच्छा लगता हैं शिक्षक संज्ञा की अंत्याक्षरी करवा कर विषय के प्रति रूचि जागृत कर सकता है। अलग–अलग संज्ञाओं जैसे स्थानों के नाम, महापुरूषो/व्यक्तियों के नाम, खाद्य पदार्थों के नाम, घरेलू सामानों आदि के नाम की अंत्याक्षरी करायी जा सकती है। बड़ी कक्षाओं में दोहा–चौपाई–छंद–कविता की अंत्याक्षरी कराने से विद्यार्थी सही–सही याद करने लगते है।

(ग) **तिल का ताड़ बनानाः–** बच्चों को कक्षा में कोई रोचक सा "गद्य वाक्य" देकर प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती है। बच्चा अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा उस वाक्य के आगे विस्तार करके कहानी बनायेगा। जैसे– मैं एक दिन आसमान से गुजर रहा था वहॉ मुझे नारद मुनि मिले ... .। इसे लेकर कल्पना से आगे बढ़ना।

(घ) **प्रश्न बनानाः–** एक रोचक व लम्बा सा वाक्य देकर उससे कई प्रश्नवाचक वाक्य बनाने को कहा जा सकता है।

(ड.) प्राथमिक स्तर पर छात्रों को छोटे–छोटे समूहों में बॉट कर उन्हें छोटे बच्चों की कक्षा में भेजा जाय। वे 15–20 मिनट तक कक्षा में देखे व सुने और फिर लिखित में उसका वर्णन अपने शब्दों में करें। इससे छात्रों की अभिव्यक्ति का विकास होता है।

(छ) छात्रों को ऋतु बदलने से मौसम व प्रकृति के बदलाव का वर्णन करने से कहें जिससे छात्रों में अवलोकन शक्ति का विकास होगा।

(ज) छात्रों को अपने नाम के अर्थ जानने को कहा जाये, साथ ही कुछ नामों के साथ कोई पौराणिक कथा जुड़ी हो तो उसे भी पता करने को कहा जाये।

(2) **परिचर्चाओं का आयोजनः–** छात्रों के मध्य विभिन्न परिचर्चाओं का आयोजन कराकर उनमें मौखिक अभिव्यक्ति का विकास किया जा सकता है–

(क) परिचर्चा समूह बनाकर करायी जाय।

(ख) प्रत्येक समूह को अलग–2 विषय दिये जायें। प्रत्येक समूह का एक नेता होना चाहिए। वह अपने समूह में 15–20 मिनट तक चर्चा कर विभिन्न बिन्दुओं को नोट करेगा तथा बाद में वही कक्षा में प्रस्तुतीकरण करेगा। अन्य समूह के छात्र प्रस्तुतीकरण के बाद प्रश्न ढूढ़गें जिनके उत्तर नेता ही नहीं बल्कि समूह के अन्य सदस्य भी दे सकते हैं।

(ग) शिक्षक अंत में विभिन्न बिन्दुओं को लेकर निष्कर्ष निकालेगा।

(घ) परिचर्चा में इस बात पर ध्यान रखा जाये कि समूह के सभी सदस्य प्रतिभाग करें तथा परिचर्चा में भाग लें केवल नेता ही न हावी रहे।

(3) **निबन्धों को रोचक बनाने हेतु नवाचारः–** प्राथमिक व उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन के समय मैंने महसूस किया है कि छात्रों को सबसे अधिक भय निबन्धों से लगता है। उनके भारी भरकम शीर्षक से भी उन्हें भय लगता है। निबन्ध के शीर्षक को सहज बनाने के लिए "होली" विषय पर निबन्ध न देकर "हमने होली कैसे मनायी" पर लिखने को कहा गया। इससे छात्रों की मौलिकता का विकास होगा। साथ ही उन्हें निबन्ध लिखने में भय नहीं लगेगा।

सफल प्रयास

(SUCCESS STORIES)

सत्य कथा एक लाचार लड़की की

यह घटना 2 वर्ष पहले की है। मैं (ओमवती गुप्ता) प्रतिदिन मथुरा रेलवे स्टेशन से रेलगाड़ी द्वारा प्रा0 वि0 न0शीशम मुरसान–जनपद हाथरस जाती थी।

एक दिन एक 11–12 वर्ष की एक सुन्दर गोरी लड़की मेरे सामने आती है और एक रूपया मांगती है। मैंने कहा, बेटा , '' तुम्हारा क्या नाम है? लड़की ने उत्तर दिया – पूजा। तुम किसके कहने पर भीख मांगती हो? '' लड़की पूजा चुप हो गई। मैंने फिर कहा, ''मेरे साथ मेरे घर चलोगी, मैं तुम्हें अच्छा–अच्छा भोजन खिलांऊगी, अच्छे कपड़े पहनाऊंगी, और पढ़ाऊंगी।'' पूजा ने उत्तर दिया 'हां'

मैंने पूजा को अपने पास बिठा लिया। मैंने पूछा '' तुम्हारे घर में कौन–कौन हैं, क्या करते हैं, कौन भीख मंगवाता है'' लड़की ने कुछ नहीं बताया।

मेरे दिमाग में एक ही प्रश्न बार–बार आ रहा था कि इस लड़की को भेड़िया रूपी हबसी मनुष्य नहीं छोड़ेगा और वह इसे अपना शिकार बना लेगा। मेरी आंखे नम हो गई थी। मैं प्यार से बार–बार अपने प्रश्नों का उत्तर पूजा से पूछ रही थी।

तब कहीं काफी देर बाद पूजा ने कहा, '' मैं बहुत छोटी थी तभी मेरी मां मर गई, मेरे दो भाई हैं जिनकी अभी शादी नहीं हुई है एक बड़ी बहिन जो निधौली (एटा) में ब्याही है। एक छोटी बहिन है। एक भाई पीता खाता है और एक भाई सौंरों में गंगाघाट पर पंडागीरी करता है। मैं सौरों की रहने वाली हूँ। पिताजी बहुत दिनों से चारपाई पर पड़े हैं बहुत बीमार रहते हैं, भाई जो कमाता है वह उनके इलाज में खर्च हो जाता है। मैंने कक्षा–5 पास कर ली है। दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती जिससे पेट भर जाए। तो पिताजी ने मुझे हाथरस मामा–मामी के पास भेज दिया है। मामा सब्जी की धकेल लगाकर सब्जी बेचते हैं जो कमाते हैं रात को शराब पीकर उधम करते हैं।

मेरी मामी मुझसे भीख मंगवाती है। सुबह पहला चक्कर मथुरा लगाती हूँ, बिना चाय पानी के। फिर लौटकर मथुरा से हाथरस आती हूँ तब मामी मुझसे भीख के रूपये छीन लेती है और कहती है कि जब तक मुझे रूपये नहीं लाओगी मैं रोटी नहीं दूंगी। उसकी कहानी सुनकर मेरी आंखों से आंसू झरने लगे।

मैंने सोचा आज से पहले इस मासूम लड़की को मैंने रेलगाड़ी में नहीं देखा तभी मैंने पूछा,'' बेटा, भीख मांगते इस रेलगाड़ी में तुम्हें कितने दिन हो गये।'' लड़की बोली, '' आज चौथा दिन है'' उसी डिब्बे में कुछ लोग जो मेरे साथ प्रतिदिन अप–डाउन करते थे, बोले– '' बहिन जी, इस लड़की का जीवन सुधार दो, इसे अपने साथ ले जाओं नहीं, तो कोई इसे बहला फुसलाकर अपने साथ ले जायेगा।''

अचानक मेरे दिमाग में कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय हाथरस का ध्यान आया। बस मैंने अपना मन बना लिया कि मुझे इस लड़की को कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय हाथरस में प्रवेश दिलाना है। यहां तक कि इसके विवाह की भी योजना बनने लगी खैर कोई बात नहीं, मैंने साचा पहले इसे पढ़ाऊ।

उसी रेलगाड़ी के डिब्बे में एक महिला पुलिस कर्मी भी प्रतिदिन मेरे साथ हाथरस अप–डाउन करती थी। मैंने मन ही मन सोचा कि कोई बवाल न हो जाए–लड़की की जाति है। मैंने उनसे निवेदन किया मैडम, आज मेरे साथ कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय चलियेगा इस लड़की को प्रवेश दिलाना है। मैडम के साथ मैं उस बच्ची को हाथ पकड़कर कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, हाथरस ले आई।

वहां मैं जो कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, हाथरस की प्रभारी कु0 इन्द्रा जायसवाल प्रभारी थी, उनसे मिली। उनको पूरी दास्तां सुनाई उन्होने तुरन्त पूजा का प्रवेश कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, हाथरस में कर लिया।

मीडिया वालों ने पूजा का साक्षात्कार रूबरू लिया, उसने सब वही बातें बतायी जो मुझे रेलगाड़ी में बताई थी, उसने कहा – पहले दिन मैंने रू0 50/–, दूसरे दिन रू0 100/–, तीसरे दिन रू0 21/–, और चौथे दिन रू0 13/– भीख में मिलें। प्रभारी सुश्री इन्द्र जायसवाल ने पूजा को वार्डन को सौंप दिया और विशेष सर्तकता बरतने को कहा। वार्डन ने कहा कि यदि विद्यालय की सभी लड़कियों की छुट्टी होती है तो ये लड़की कहां जायेगी। इसका अभिभावक कौन बनेगा? मैंने कहा, '' मैं इसकी अभिभावक बनूंगी मैने अपना फोने नं0 लिखवा दिया।''

मीडिया वालों ने समचार पत्र में लड़की की पूरी दास्तां छपवा दी जिसका शीर्षक था–

'' अब कटोरे की जगह हाथ में किताबें''

जब उसकी बड़ी बहन ने समाचार पत्र में पढ़ा तो तीसरे दिन पूछते –पूछते कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, हाथरस पहुंच गयी। प्रभारी व वार्डन से कहने लगी मैडम यदि कोई सुनकर आये तो आप कहियेगा कि पूजा भीख नहीं मांग रही थी, नहीं तो, हमारी बड़ी बेइज्जती होगी।

पूजा अब कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, हाथरस में पढ़ने लगी। बाद में SPO के निर्देशानुसार उसका स्थानान्तरण जनपद काशीरामनगर में कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, कासगंज में कर दिया क्योंकि वह उसी जिले की मूल निवासी थी।

मुझे उसको एक अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाकर आत्म संतुष्टि मिली। मेरा स्वभाव सहयोगी व अच्छे सलाहकार का है। मैं सोचती हूँ कि मुझे ईश्वर ने मानव जन्म दिया है तो मुझसे जो भला काम हो जाए वहीं ठीक है।

ईश्वर मुझे सद्बुद्धि दें।

मेरी परवाह किसे?

मैंने वर्ष 2009 में प्राथमिक विद्यालय, अकबरी, विकास खण्ड–काटरा खुदागंज, जनपद–शाहजहॉपुर में कार्यभार ग्रहण किया। विद्यालय में मेरा दूसरा दिन था। मैं कार्यालय में हस्ताक्षर हेतु पहुॅची तो वहॉ एक बूढ़ी दादी अपनी ऑखों में ऑसू लिये खड़ी थी। वह कह रही थी "मैने इसके बाप को पढ़ाने की बहुत कोशिश की परन्तु वह भी नहीं पढ़ पाया, सोचा था, इस पोते को मैं जरूर पढ़ाऊॅगी, इसी कारण इस उम्र में काम कर रही हूॅ।" वह विद्यालय में खाना बनाती थी और उसका पोता कक्षा एक में पढ़ता था। वह दो साल से एक ही कक्षा में था। वह एक अक्षर भी पढ़ना लिखना नहीं सीख पाया। सभी अध्यापकों की यह धारणा बन चुकी थी कि वह अब नहीं पढ़ेगा।

इसी बीच मुझे प्रधानाध्यापिका महोदया ने कक्षा एक व दो लेने के लिए कहा। उस बूढ़ी दादी की दशा देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ। मैने अपनी प्रधानाध्यापिका जी से निवेदन किया कि उसे एक और अवसर दिया जाये मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह पढ़ेगा, उन्होंने कहा चलो देख लो। अन्य शिक्षकों ने मेरी तरफ कुछ अलग अंदाज में देखा क्योंकि मैं नयी थी। एक सप्ताह के बाद तो मैंने भी सोचा कि यह बालक नहीं पढ़ेगा। वह विद्यालय भी कम आता था। मैंने उसकी दादी से कहा कि आप उसे विद्यालय तो लाओ। उसका नाम संजीव था। दूसरे दिन वह (संजीव) रोता हुआ आया। मैंने उससे कहा, आपको नहीं पढ़ना, कोई बात नहीं, आप ऐसे ही बैठे रहो। घर पर भी अकेले क्या करेगे। आप के सभी मित्र तो यहॉ है, तो आप यही रहो। मैंने उसे प्यार से कक्षा में आगे की सीट पर बैठाया। मैंने बच्चों से बारी–बारी श्यामपट्ट पर अक्षर लिखवाये, ठीक लिखने पर उनके लिए तालियॉ बजवायी। संजीव यह सब देखता रहा। यही क्रम चलता रहा। कुछ दिन बाद मैंने कक्षा में जैसे ही कहा कि अब कौन लिखेगा? हाथ उठाओ। "बच्चों के साथ संजीव का हाथ भी थोड़ा सा उठा और वापस नीचे आ गया। मैंने यह देख लिया और प्यार से संजीव से कहा, लिखो। कुछ शर्माते हुए उसने लिखा और बोलकर भी दिखाया। सभी बच्चों ने संजीव के लिए जोरदार ताली बजाई। मैंने उसे शाबाशी दी और कहा आपने तो बहुत सुंदर लिखा है।" उस दिन से संजीव खुश रहने लगा, समय से विद्यालय आता और पढ़ाई में आपका ध्यान लगाने लगा। सत्र परीक्षा में उसे 40 प्रतिशत अंक मिले। उसकी दादी भी यह परिवर्तन देखकर बहुत खुश हुई। वह बालक आज कक्षा 3 में पढ़ रहा है।

सविता रूहेला
स0अ0, प्रा0वि0 अकबरी,
विकासखण्ड–कटरा–खुदागंज,
शाहजहांपुर।

जब जागो तभी सवेरा

जनपद महोबा के तहसील चरखारी में एक गॉव है अस्थौन। अस्थौन चरखारी से लगभग 3 किमी की दूरी पर दक्षिण दिशा में स्थित है। अस्थौन में रामऔतार सैनी के दो बच्चे थे। बड़ा बच्चा वृन्दावन और छोटा प्रकाश। वृन्दावन को 10 वर्ष की उम्र का हो जाने तक स्कूल जाने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। पड़ोस में एक सज्जन रहते थे दीनदयाल, इनका एक लड़का पढ़ने लिखने के बाद इंजीनीयर हो गया। दीनदयाल के लड़के से प्रेरित होकर रामऔतार ने अपने लड़के वृन्दावन को पढ़ाने का मन बनाया पंरतु उसके मन में एक शंका थी कि मेरा बेटा बहुत बड़ा हो गया है। अब कक्षा–1 में वह कैसे पढ़ेगा, कैसे छोटे बच्चों के साथ बैठेगा। कुछ भी हो रामऔतार ने वृन्दावन को पढ़ाने का निश्चय कर लिया और अपने एक पड़ोसी को पढ़ाने के लिए शाम को घर बुलाने लगे। अब वृन्दावन उल्टे हाथ से कुछ लिख पड़ लेता था। एक दिन प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक अनवर खॉ रास्ते में संयोगवश रामऔतार को मिल गये। रामऔतार ने अपने लड़के की पढ़ाई के संबंध में उनसे बात की। शिक्षक अनवर खॉ ने रामऔतार की बात ध्यान से सुनी। अनवर जी को लगा कि वास्तव में रामऔतार अपने लड़के को पढ़ाना चाहता है तो अनवर जी ने उसके लड़को को पढ़ाने की जिम्मेदारी जो कि एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, स्वीकार कर ली।

अनवर जी ने सर्वप्रथम बालक वृन्दावन को स्कूल आने के लिए प्रेरित किया। वृन्दावन प्रथम एक माह तक स्कूल बिना बस्ता के जाता और पढ़ने वाले बच्चों की निगरानी करता। इससे पहले बालक भैंस, गाय चराने का काम करता, इस कारण निगरानी करना उसे अच्छी तरह आता था। शिक्षक ने बालक के इसी गुण का उपयोग किया।

तश्पश्चात् शिक्षक ने बालक को पढ़ने–लिखने का महत्व बताकर, बालक वृन्दावन को पढ़ने के लिए दृढ़संकल्पित किया। अब अनवर जी ने देखा कि बालक उल्टे (बाये) हाथ से लिख रहा है, तो शिक्षक ने सघन अभ्यास द्वारा पहले सीधे हाथ (दाहिने हाथ) से लिखना सिखाया। शिक्षक अनवर जी के अथक प्रयास से बालक वृन्दावन अब स्कूल में कक्षा–2 का मानीटर और पढ़ने–लिखने में सबसे होशियार बालक के रूप में जाना जाता था। शिक्षक ने अपने प्रयास एवं प्रेरणा से उस बालक का भविष्य बदल दिया। वर्तमान में यह बालक जूनियर हाईस्कूल गौरहारी चरखारी में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत है।

शिक्षक अनवर खॉ ने, एक 10 वर्षीय चरवाहा बालक वृन्दावन, जो कि अनपढ़ किसान परिवार से था, का भविष्य बदल दिया।

वृन्दावन की पत्नी श्रीमती मंजुला सैनी भी जूनियर हाईस्कूल कुरौरा डांग, चरखारी में प्रधानाध्यापिका है। आज वृन्दावन एक सम्मानित जीवन जी रहा है।

परिणाम रूप में एक शिक्षक अपने बालकों का भविष्य संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सफल कहानी

सन् 2002 में मैं स्वंय कक्षा 1 व 2 को प्रा0वि0 युसुफपुर, ब्लाक मोरना जनपद–मुजफ्फरनगर में पढ़ाता था। मेरे सामने एक विकट समस्या आई की कुछ बच्चों का मूल्यांकन कर उनको क्या कार्य कराया जाय यह समझ नहीं आ रहा था क्योकि वो अपनी कापी के उस पेज को फाड़ दिया करते थे जिनमें मैं उन्हें गृह कार्य या कक्षा कार्य कराता था। एक दिन मैंने उन बच्चों के स्कूल बैग को चैक किया तो पाया की बच्चे रंगीन चित्रों वाली मैगजीन, अखबार व माचिस आदि को अपने बैग में सहेज कर रखते हैं। अर्थात बच्चे रंगीन चित्रों के प्रति लगाव रखते हैं। उनकी इसी आदत को मैने अपने शिक्षण में प्रयोग करने की ठानी और मैंने बच्चों की कापी पर एक अमरूद बनाया और बच्चे से पूछा की यह क्या है तो उसने कहा "पपीता।"

मेरा सर चकरा गया, मैं सोचने लगा की मैं ऐसा क्या करूँ ताकि मैं जो सोचूं वही बना सकूं। एक दिन अपने प्राधानाध्यापक के साथ मैं कुछ प्रपत्र तैयार कर रहा था अन्त में मैं उन प्रपत्रों पर मोहर लगाता गया और H.M. साहब हस्ताक्षर करते गये, मैंने देख की हर बार मोहर लगाने पर प्रधानाध्यापक, प्रा0वि0 युसुफपुर, मोरना ही लिखा आता है वह भी एक जैसा बस मेरे दिमाग में योजना आई की क्यों न सभी अक्षरों से बनने वाले शब्दों के चित्रों की मोहर बनवा ली जाय।

मैंने मोहर बनाने वाले से संपर्क किया उसने बताया कि एक मोहर की कीमत रू0 50/– लगेगी। इस प्रकार कुल 50 मोहरे बनवाने में बहुत लागत आ रही थी। तब मैने A to Z कुल 26 मोहर बनवाई और उनका प्रयोग कक्षा में किया।

जिसका अपेक्षित परिणाम सामने आ गया। अब कोई भी बच्चा पेज नहीं फाड़ता था साथ ही उनकी उपस्थिति भी स्कूल में बढ़ गई। वो बच्चे जो कापी नहीं लाते थे वो कापी भी लाने लगे थे।

मेरे इस प्रयोग को भारतीय प्रबन्ध संस्थान, अहमदाबाद के प्रो0 अनिल गुप्ता द्वारा संचालित और सर रतन टाटा द्वारा वित्त पोषित नवाचारी शिक्षकों की खोज में लगे प्रो0 विजय शेरी चन्द्र जी ने पहचाना और मुझे सन 2005 में मदुरै, तमिलनाडू में प्रस्तुती हेतु आमंत्रित किया। जहॉ पर मुझे नवाचारी शिक्षक पुरूस्कार से सम्मानित किया गया और ट्रस्ट द्वारा फैलोशिप प्रदान की गयी।

नाम– वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल,
पता– डायट, मुजफ्फरनगर
अवार्ड– IIM अहमदाबाद, सर रतन टाटा एजूकेशनल
पैडागाजीकल ट्रस्ट द्वारा "Innovative Teacher Award."

एक प्रयास .....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ददरौल, शाहजहाँपुर के आदेश के अनुपालन में जब मैं पूर्व माध्यमिक विद्यालय गिरगिचा, विकासखण्ड क्षेत्र निगोही, जनपद शाहजहाँपुर का अनुश्रवण करने पहुँचा तो यह पाया कि विद्यालय में विद्यालय प्रबन्ध समिति का गठन तो किया गया है, परन्तु उक्त समिति बिल्कुल निष्क्रिय है जिस कारण विद्यालय की बहुत सी गतिविधियाँ ठीक से संचालित नहीं होती हैं।

शिक्षा समिति को मिलने वाली सर्व शिक्षा अभियान की ग्रान्ट्स व अन्य धनराशि का सदुपयोग हो सके, विद्यालय का उचित संचालन हो व ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों में स्वामित्व की भावना बने, इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय प्रबन्ध समिति के सभी सदस्यों को अपने कर्त्तव्यों, अधिकारों एवं विद्यालय संचालन की आवश्यक जानकारी होनी चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम मैने विद्यालय प्रबन्ध समिति की बैठक आहूत की जिसमें विद्यालय प्रबन्ध समिति के सभी सदस्य उपस्थित हुए। बैठक में यह पता लगा कि समिति के सदस्यों को अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की जानकारी नहीं है और न ही विद्यालय में नियमित विद्यालय प्रबन्ध समिति की बैठक होती है।

सर्वप्रथम मैनें सभी सदस्यों को उनके अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की जानकारी दी और उन्हें इस बात का एहसास कराया कि उनका विद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है, यदि वे नियमित विद्यालय के कार्यो की देख–भाल करें तथा विद्यालय में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करें तो उनका विद्यालय अन्य विद्यालयों से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी हो जायेगा। विद्यालय में आपके एवं आपके परिवार के ही बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं यदि विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था एवं विद्यालय के अन्य कार्यक्रम ठीक से संचालित नहीं होगें तो गाँव के बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। मैने उन्हें जानकारी दी कि बहुत से सदस्य

(जो पढ़ें–लिखें हैं) अपना योगदान बच्चों की कापियों का निरीक्षण करके दे सकते हैं जिससे उन्हें यह पता चलेगा कि बच्चे पढ़ रहे हैं या नहीं, वे प्रतिदिन विद्यालय आ रहे हैं या नहीं, शिक्षक उन्हें कार्य दे रहे हैं या नहीं, वे नियमित कक्षा कार्य व गृहकार्य कर रहे हैं या नहीं, उनकी कापियों का नियमित मूल्याकंन हो रहा है या नहीं। महिला सदस्य मध्यान्हन भोजन के बनने एवं वितरण में तथा बच्चों की उत्तर–पुस्तिकाओं पर कवर आदि चढ़ाकर भी योगदान दे सकती हैं, साथ ही महिला सदस्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी अपना योगदान दे सकती हैं।

समिति के अन्य सदस्य भी विद्यालय के अन्य कार्यक्रम जैसे सुरक्षा, नामांकन, नियमित उपस्थिति आदि में अपना सहयोग दे सकते हैं। मैनें उक्त जानकारी समिति को दी तत्पश्चात् मैनें दो–तीन माह तक लगातार विद्यालय प्रबन्ध समिति की बैठक में प्रतिभाग किया तथा समिति के सदस्यों द्वारा किये गये कार्यो का अवलोकन भी किया। मुझे आशानुरूप परिणाम सामने दिखाई देने लगे। समिति के सभी सदस्य अपने कार्य व उत्तरदायित्व के प्रति अधिक सजग व क्रियाशील रहने लगे। मध्यान्हन भोजन योजना के सही संचालन में वे अपना सहयोग देने लगे तथा विद्यालय के संचालन में स्वामित्व का अनुभव करने लगे। इस प्रकार मेरा यह एक प्रयास विद्यालय के सफल संचालन में काम आया।

डा0 अरूण कुमार गुप्ता (स0अ0)
डायट–शाहजहांपुर।